सोवियत शासन का इतिहास

(दूसरा भाग)

राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक

किताबघर
प्रयाग

प्रथम बार

मूल्य २

सप्तम अध्याय

अक्तूबर-समाजवादी-क्रान्ति की तैयारी और सफलता के समय बोलशेविक पार्टी।

(अप्रैल १९१७—१८ ईस्वी)

१—फरवरी क्रान्ति के बाद देश की अवस्था। पार्टी का गुप्त अवस्था से निकल कर खुले राजनैतिक कार्य्य क्षेत्र में आना। लेनिन् का पेत्रोग्राद में आगमन। लेनिन का अप्रैल वाला निबन्ध। समाजवादी क्रान्ति में दाखिल होने के लिये पार्टी की नीति।

घटनाचक्र और अस्थायी सरकार के आचरण ने बोल्शेविकों के विचार की पुष्टि के लिये प्रतिदिन सबूत उपस्थित करना शुरू किया। यह दिन पर दिन और स्पष्ट होने लगा कि अस्थायी सरकार जनता के लिये नहीं है, बल्कि जनता के विरोध के लिये है, शान्ति के लिये नहीं बल्कि युद्ध के लिये है और वह जनता को शान्ति, भूमि या रोटी देने के लिये अनिच्छुक और असमर्थ है। बोलशेविकों के समझाने के काम में सफलता का अच्छा अवसर मिला।

जब कि मजदूर और सैनिक ज़ारशाही सरकार को उलट रहे थे और राजतन्त्र को जड़मूल से नष्ट कर रहे थे, उस समय भी अस्थायी सरकार स्पष्टतया राजतन्त्र का कायम रखना चाहती थी। २ मार्च (पुराना) १९१७ को उसने गुच्कोफ् और सुलूगिन् को ज़ार से मुलाकात करने के लिये भेजा। पूँजीवादी चाहते थे कि निकोला

रोमनोफ् के भाई मिखाइल के हाथ में शासनसूत्र दिया जाये। किन्तु जब रेलवे मजदूरों की सभा में गुच्कोफ् ने अपने व्याख्यान को इन शब्दों के साथ खतम किया "साम्राट् मिखाइल चिरंजीव" तो मजदूरों ने तुरन्त गुच्कोफ् को गिरफ्तार करने और तलाशी लेने को कहा। वे रुष्ट हो बोल उठे "मूली से गदह मूली अधिक मीठी नहीं होती"।

यह स्पष्ट था कि मजदूर राजतन्त्र की पुनः स्थापना नहीं होने देंगे।

जब कि किसान और मजदूर क्रान्ति के लिये अपने खून को बहाते हुये आशा करते थे, कि युद्ध खतम करदी जाये, जब कि वे रोटी और भूमि के लिये लड़ रहे थे, तथा आर्थिक संहार को खतम करने के लिये कड़ी कारंवाइयों की माँग पेश कर रहे थे, उसी समय अस्थायी सरकार जनता के इन जीवन मरण की मांगों को अनसुनी कर रही थी। पूंजीपतियों और जमीन्दारों के प्रमुख प्रतिनिधियों की यह सरकार किसानों की माँग - कि भूमि हमको दे दी जाय—को पूरा करने का इरादा नहीं रखती थी; और नहीं वह मजदूरों को रोटी दे सकती थी, क्योंकि ऐसा करने के लिये उसे बड़े बड़े गल्ले के व्यापारियों के स्वार्थों पर हमला करना पड़ता, और जमीन्दारों तथा कुलकों से हर तरीके से अनाज लेना पड़ता, और सरकार ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। क्योंकि इन वर्गों के स्वार्थों के साथ वह खुद बँधी हुई थी। और नहीं वह जनता को शान्ति दे सकती थी। बृटिश और फ्रेन्च साम्राज्यवादियों से बँधी अस्थायी सरकार युद्ध को समाप्त करने का ख्याल नहीं रखता थी, बल्कि इसके विरुद्ध, वह क्रान्ति से फायदा उठाकर कोशिश कर रही थी कि साम्राज्यवादी युद्ध में रूस और सरगर्मी के साथ भाग ले, और अपनी साम्राज्यवादी योजनाओं—कन्स्तान्तिनोपल्, दरेदानियाल, और गलेखिया पर दखल करने को पूरा करे।

यह स्पष्ट था, कि अस्थायी सरकार की नीति में जनता का विश्वास जल्द ही खतम हो जायेगा।

यह साफ होता जा रहा था—कि दोहरा शासन जो कि फरवरी क्रान्ति के बाद आरम्भ हुआ था—देर तक नहीं चल सकता, क्योंकि घटना-चक्र चाहता था, कि शक्ति सिर्फ एक के हाथ में हो! या तो स्थायी सरकार के हाथ में या सोवियतों के हाथ में हो।

यह सच है कि अब भी मेनशेविकों तथा समाज-वादी-क्रान्तिकारियों की समझौता वाली नीति का जनता में समर्थन होता था। बहुत से ऐसे मजदूर और उनसे भी अधिक संख्या में सैनिक और किसान थे, जो अभी विश्वास करते थे कि "विधान सभा जल्दी ही अस्तित्व में आयेगी और सभी बातों को शान्तिपूर्ण तरीके से ठीक कर देगी," और जो सोचते थे कि युद्ध विजय के लिये नहीं की जा रही है, वल्कि, आवश्यकता—राष्ट्र रक्षा—के लिये की जारही है। लेनिन् ने ऐसे लोगों को ईमान्दारी से युद्ध के भूले समर्थक कहा है। लोग अब भी समाजवादी-क्रान्तिकारी तथा मेन्शेविक नीति—जो कि वादे और भुलावे की नीति थी—को ठीक समझते थे। किन्तु, यह स्पष्ट था कि वादे और भुलावे बहुत दिनों तक के लिये पर्याप्त न थे क्योंकि घटना-चक्र और अस्थायी सरकार का आचरण दिन पर दिन प्रकट हो सिद्ध कर रहा था, कि समाजवादी-क्रान्तिकारियों और मेन्शेविकों की नीति भोले भालों को भरमाने और फंसाने की नीति है। अस्थायी सरकार सदा जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलन के खिलाफ छिपे संघर्ष करने, क्रान्ति के खिलाफ छिपी योजनाओं को बनाने तक ही अपने को सीमित नहीं रखती थी, उसने कितनी ही बार जनतान्त्रिक स्वतन्त्रता के ऊपर खुले प्रहार का प्रयत्न किया, अनुशासन की पुनः स्थापना, विशेष कर सिपाहियों में "व्यवस्था की स्थापाना"- बूर्ज्वावर्ग की आवश्यकता के अनुकूल धारा से क्रान्ति के सञ्चालन का भी प्रयत्न किया, लेकिन इस दशा में उसके सभी प्रयत्न

निष्फल हुये और जनता ने उत्साह के साथ अपनी जनतान्त्रिक स्वतन्त्रता—भाषण, लेखन, सम्मेलन, सभा और प्रदर्शन की स्वतन्त्रता—का उपयोग किया। मजदूरों और किसानों ने देश के राजनीतिक जीवन में क्रियात्मक भाग लेने के लिये, स्थिति को होशियारी के साथ समझ कर आगे क्या करना है, इसको तैय करने के लिये अभी अभी मिले अपने जनतान्त्रिक अधिकारों का पूरा उपयोग करने का प्रयत्न किया।

फरवरी क्रान्ति के बाद, जारशाही की अत्यन्त कठिन स्थितियों में गैर कानूनी तौर से काम करता आतो बालशेविक पार्टी के संगठन अब गुप्त से प्रकट रूप में आगये और वे खुल्लम-खुल्ला राजनीतिक तथा संगठन सम्बन्धी कामों को संचालित तथा विकसित करने लगे। उस समय बालशेविक संगठनों की सदस्य संख्या ४० या ४५ हजार से अधिक न था। किन्तु ये सभी जबर्दस्त क्रान्तिकारी संघर्ष में पकड़े हुये व्यक्ति थे। पार्टी-समितियां जनतान्त्रिक केन्द्रवाद के सिद्धान्त के अनुसार संगठित थीं। पार्टी की सभी संस्थायें नीचे से ऊपर तक निर्वाचन वाली बना दी गयीं थीं।

जब पार्टी का अपना कानूनी अस्तित्व आरम्भ हुआ, तो उसके सदस्यों के मतभेद प्रकट होने लगे। कामेनेफ् तथा मास्को, संगठन के कितने ही दूसरे कर्मी—रुइकोफ् बुबनोफ और नोगिन्—अर्द्ध मेन्शेविक दृष्टिकोण रखते थे और कुछ शर्तों के साथ अस्थायी सरकार तथा युद्ध में भाग लेने की नीति का समर्थन करते थे। स्तालिन्—जो कि हाल ही में निर्वाचन से लौटे थे, मोलोतोफ़, और दूसरे पार्टी के बहुमत के साथी अस्थायी सरकार में अविश्वास, युद्ध में भाग लेने का विरोध और शान्ति के लिये साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध क्रियात्मक संघर्ष की नीति के पक्ष में। पार्टी के कुछ कर्मी डाँवाडोल स्थिति में थे यह उनके राजनीतिक पिछड़ेपन का द्योतक था, और लम्बे वर्षों के कैद या निर्वासन के कारण था।

पार्टी के नेता, लेनिन् की अनुपस्थिति अब अखरने लगी थी।

१६ (३ अप्रैल १९१७ को बहुत दिन के निर्वासन के बाद लेनिन् रूस लौटे।

लेनिन् का आगमन पार्टी और क्रान्ति के लिये जबर्दस्त महत्व रखता था।

लेनिन् अभी स्वीजरलैण्ड में थे, कि क्रान्ति की प्रथम खबरों को पाकर, उन्होंने पार्टी और रूस के मजदूर वर्ग को 'दूर से पत्र" लिखे थे, जिनमें उन्होंने कहा था:—

"मजदूरों! जारशाही के खिलाफ गृह-युद्ध में तुमने वीरता, जनता की वीरता का अद्भुत नमूना दिखलाया। क्रान्ति की दूसरी अवस्था में अपने विजय के लिये रास्ता तैयार करने के वास्ते अब तुम्हें संगठन प्रोलेतारी 'कम कर' वर्ग तथा सभी जनता के संगठन का, अद्भुत नमूना दिखलाना होगा। (लेनिन्, सञ्चित ग्रन्थावली, अंग्रेजी संस्करण, जिल्द ६ पृष्ठ ११)

१६ अप्रैल की रात में लेनिन् पेत्रोग्राद् पहुँचे। उनके स्वागत के लिये फिन्लैण्ड रेलवे स्टेशन और उसके हाते में हजारों मजदूर, सैनिक और नौ सैनिक जमा हुये। ट्रेन से लेनिन् के उतरते वक्त का जनता का जोश अकथनीय था। उन्होंने अपने नेता को कन्धे के बराबर ऊँचा उठाया और स्टेशन के मुख्य वेटिङ्ग रूम में ले गये। वहां मेन्शेविक् चखेइदज़े और स्कोबेलोफ् ने पेत्रोग्राद-सोवियत की ओर से "स्वागत" में भाषण किये; जिनमें उन्होंने "आशा प्रकट की" कि हम और लेनिन् एक "समान भाषा" ढूँढ़ेंगे; किन्तु लेनिन् उनकी बात सुनने के लिये रुके नहीं; उनको एक तरफ करते वे मजदूर और सैनिक जनता की ओर गये। एक सशस्त्र कार पर चढ़कर उन्होंने अपना वह प्रसिद्ध भाषण दिया, जिसमें उन्होंने जनता को समाजवादी क्रान्ति के विजय के लिये लड़ने को कहा। "समाजवादी क्रान्ति चिरंजीव!" ये शब्द थे, जिनके साथ लम्बे

निर्वासन के बाद दिये। अपने प्रथम भाषण को लेनिन ने समाप्त किया।

रूस में लौटकर लेनिन् ने बड़ी तत्परता के साथ क्रान्तिकारी कार्य्य में अपने को लगा दिया। अपने आने के दूसरे दिन उन्होंने बोल्शेविकों की एक बैठक में युद्ध और क्रान्ति के विषय पर एक रिपोर्ट दी और इस रिपोर्ट के निबन्ध को दूसरी सभा में पुनरावृत्ति की, जिसमें मेन्शेविक और बोल्शेविक दोनों मौजूद थे।

लेनिन के यही प्रसिद्ध अप्रेलवाले निबन्ध थे, जिन्होंने पार्टी और प्रोलेतारीवर्ग के सामने, बूर्ज्वा क्रान्ति से समाजवादी क्रान्ति में दाखिल होने के लिये एक स्पष्ट क्रान्तिकारी कार्य्यक्रम उपस्थित किया।

लेनिन् के निबन्ध क्रान्ति और पीछे पार्टी के काम के लिये जबर्दस्त महत्व के थे। देश के जीवन में क्रान्ति एक विशाल परिवर्त्तन था। जारशाही के उलटने के बादवाले संघर्ष की नई परिस्थितियों में पार्टी को नये मार्ग पर हिम्मत और विश्वास के साथ बढ़ने के लिये एक नये आरम्भ की आवश्यकता थी, लेनिन् के निबन्धों ने उसे पार्टी को प्रदान किया।

लेनिन् के अप्रेलवाले निबन्ध ने पार्टी के सामने बूर्ज्वा जनतान्त्रिक क्रान्ति से समाजवादी क्रान्ति में, क्रान्ति की प्रथम अवस्था से दूसरी अवस्था—समाजवादी क्रान्ति की अवस्था—में संक्रमण (दाखिल होने) के लिये संघर्ष की एक महत्वशाली योजना पेश की। पार्टी के सारे इतिहास ने इस महान् काम के लिये तैयार किया था। बहुत पहले १९०५ ही में लेनिन् ने अपनी पुस्तिका "**जनतान्त्रिक क्रान्ति में समाजवादी जनतान्त्रिकता की दो कार्य्य शैलियां**" में लिखा था कि जारशाही के उलटने के बाद प्रोलेतारीवर्ग समाजवादी क्रान्ति को लाने के लिये बढ़ेंगे। इस निबन्ध में नई बात यह थी कि उसमें एक साकार सिद्धान्त से परिपुष्ट योजना,

समाजवादी क्रान्ति के संक्रमण की आरम्भिक अवस्था के लिये दी गई थी।

आर्थिक क्षेत्र में संक्रान्ति कालवाले कदम ये थे। सभी जमीन का राष्ट्रीकरण और जमींदारियों को जप्ती, सभी बैंकों को मिला कर एक राष्ट्रीय बैंक बनाना—जिस पर कि मजदूर-डिपुटी सोवियत का अधिकार हो और उपज के सामाजिक उत्पादन और वितरण के ऊपर नियन्त्रण स्थापित करना।

राजनीतिक क्षेत्र में लेनिन् ने प्रस्ताव किया कि पार्लामेन्टरी प्रजातन्त्र से सोवियतों के प्रजातन्त्र में संक्रमण। मार्क्सवाद के सिद्धान्त और व्यवहार (प्रयोग) में यह एक महत्वपूर्ण आगे की ओर का कदम था। अब तक मार्क्सीय सिद्धान्तवादी लोग समाजवाद के लिये पार्लामेन्टरी प्रजातन्त्र को सर्वोत्कृष्ट राजनीतिक रूप बतलाते थे। किन्तु अब लेनिन् ने प्रस्ताव किया कि पार्लामेन्टरी रिपब्लिक की जगह सोवियत रिपब्लिक हो; पूँजीवाद से साम्यवाद के संक्रान्तिकाल में समाज के राजनीतिक संगठन के लिये वह अत्यन्त उपयुक्त रूप है।

निबन्ध में कहा गया था "रूस की वर्तमान स्थिति की विशेषता यह है कि वह क्रान्ति की प्रथम अवस्था जिसने कि प्रोलेतारी वर्ग की अपर्याप्त वर्ग-चेतना और संगठन के कारण शक्ति को बूर्ज्वावर्ग के हाथ में रख दिया—से दूसरी अवस्था में संक्रमण को बतलाती है, इस शक्ति को प्रोलेतारी वर्ग और किसानों के अति निर्धन अंश के हाथों में देना होगा।" (वहीं, पृष्ठ २२)

और आगे:

"पार्लामेन्टरी प्रजातन्त्र नहीं मजदूर डिपुटी-सोवियतों से पार्लामेन्टरी प्रजातन्त्र की ओर लौटना पीछे की ओर कदम उठाना होगा। पार्लामेन्टरी प्रजातंत्र नहीं बल्कि सारे देश के, ऊपर से नीचे तक

मजदूरों खेतिहर-मजदूरों और किसानों के डिपुटियों की सोवियतों का प्रजातंत्र चाहिये।" (वहीं, पृष्ठ २३)

नई सरकार अस्थायी सरकार के अमल में लूट का साम्राज्यवादी युद्ध जारी रहा। लेनिन ने कहा, यह पार्टी का कर्त्तव्य था कि उसे जनता को समझाये और उन्हें दिखलावे कि जब तक बूर्ज्वावर्ग को उल्टा नहीं गया है तब तक लुटेरा शान्ति नहीं बल्कि एक सच्ची जनतान्तिक संधि ही द्वारा युद्ध का बन्द करना असम्भव है।

अस्थायी सरकार के सम्बन्ध में लेनिन् का सूत्र था: "अस्थायी सरकार को सहायता नहीं देना।"

लेनिन् ने निबन्ध में यह भी बतलाया था, कि सोवियतों में अभी भी हमारी पार्टी अल्पमत में है, सोवियतों पर मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारी गुट्ट का अधिकार है, यही गुट्ट मजदूर वर्ग पर पूंजीवादियों के प्रभाव का साधन है। इसलिये निम्न बातें बतला देना पार्टी का कर्त्तव्य है।

"जनता को बतला देना होगा कि मजदूर डिपुटी-सोवियतें ही क्रान्तिकारी सरकार का एकमात्र सम्भव रूप हैं, और इसलिये हमारा काम है कि जब तक यह सरकार पूंजीवादियों के प्रभाव में है, तब तक धैर्य्यपूर्वक नियमबद्ध और लगातार उसकी कार्य्यशैली की गलतियों को बतलावें, जनता की रोज ब रोज की आवश्यकताओं की अनुकूलता लेते यह समझावें; जब तक हम अल्पमत में हैं, तब तक हमें गलतियों की आलोचना और प्रकट करने का काम जारी रखना चाहिये और साथ ही सर्कार सम्पूर्ण शक्ति को मजदूर-डिपुटी-सोवियतों के हाथ में दे देने की आवश्यकता को बतलाना चाहिये:" (वहीं, पृष्ठ २३)

इसका मतलब यह था कि लेनिन् अस्थायी सरकार—जिसमें कि उस समय सोवियतों का विश्वास था कि विरोध करने के लिये नहीं कह रहे थे वे उसे उलटने के लिये नहीं कह रहे थे, बल्कि समझा

कर कर्मियों के भर्ती के काम द्वारा सावियतों में अपना वहुमत करना, सोवियतों की नीति को परिवर्वित करना चाहते थे, और सोवियतों द्वारा सरकार की समझौता वाला नीति को वदलना चाहते थे।

क्रान्ति के शान्तिपूर्ण विकास का यह एक तरीका था।

लेनिन् ने यह भी कहा कि "गन्दी कमीज" को वदल देना चाहिये अर्थात पार्टी को अब समाजवादी-जनुतान्त्रिक पार्टी नहीं कहना चाहिये। द्वितीय इन्टर्नेशनलकी पार्टियां तथा रूसी मेनशेविक अपने को समाजवदी-जनतान्त्रिक कहते थे। यह नाम समाजवाद के विश्वासघातियों, अवसरवादियों के द्वारा लांछित और वदनाम हो चुका था। लेनिन् ने प्रस्ताव किया कि वोलशेविकों की पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी कहा जाय, यह नाम कि मार्क्स और एन्गेल्स ने अपने पार्टी का रखा था। यह नाम वैज्ञानिक तौर से भी ठीक है, क्योंकि यह वोलशेविक पार्टी का चरम धेय साम्यवाद (कम्युनिज्म) की प्राप्ति है। मनुष्य पूंजीवाद से समाजवाद में ही सीधे पहुँच सकता है। समाजवाद है उपज के साधनों का सम्मिलित स्वामित्व और हर एक के लिये काम के अनुसार उपज का विभाजन। लेनिन् ने कहा कि हमारी पार्टी इससे भी आगे का ख्याल रखती है। समाज-वाद को क्रमशः अवश्य उस साम्यवाद में पहुँचाना, जिसके फरहरे पर यह सूत्र लिखा हुआ है। "हर एक से उसकी योग्यता के मुताविक हर एक को उसकी आवश्यकता के मुताविक"।

आखिरी वात, लेनिन् ने अपने निवन्ध में कही थी, वह एक नये अन्तर्राष्ट्रीय-तृतीय, कम्युनिस्ट, इन्टर्नेशनल (साम्यवादी अन्तर्राष्ट्रीय) की स्थापना की जाय जो कि, अवसरवाद और समाजवादी "देशी इङ्कारवाद से" मुक्त हो।

लेनिन् के निवन्ध से वूर्ज्वाजी, मेनशेविक और समाजवादी क्रान्तिकारी उवल पड़े।

मेनशेविकों ने मजदूरों के नाम घोषणा निकाली, जो कि इस चेतावनी से आरम्भ होती है, "क्रान्ति खतरे में"। मेनशेविको की राय में खतरा इस बात से था कि बोलशेविक मजदूर सैनिक-डिपुटी-सोवियतों के हाथ में शक्ति देने की माँग पेश कर रहे थे।

प्लेखानोंफ़ ने अपने पत्र "येदिन्स्त्वो" (एकता) में एक लेख लिखा, जिसमें उसने लेनिन् के व्याख्यान को "पागल का प्रलाप" कहा। उसने मेनशेविक खेइद्ज़े के शब्दों को उद्धृत किया, "लेनिन् अकेला क्रान्ति के बाहर रह जायगा और हम अपने रास्ते जावेंगे।"

२७ (१४) अप्रैल को पेत्रोग्राद् नगर के बोलशेविकों की कान्फ्रेंस ने लेनिन् के निबन्ध का स्वीकार किया और उसे अपने काम का आधार बनाया। थोड़े ही समय बाद पार्टी के स्थानीय सगठनों ने भी लेनिन् के निबन्ध को स्वीकार किया।

कामेनेफ़, रूइकोफ़ प्याताकोफ़ जैसे चन्द व्यक्तियों को छोड़कर सारी पार्टी ने लेनिन् के निबन्ध को अत्यन्त सन्तोष के साथ ग्रहण किया।

२—अस्थायी सरकार के सङ्कट का आरम्भ। बोलशेविक पार्टी की अप्रैल कान्फ्रेन्स।

जब कि बोलशेविक, क्रान्ति के और विकास की तैयारी कर रहे थे, उसी समय अस्थायी सरकार ने जनता के खिलाफ काम करना जारी रखा। १ मई (१८ अप्रैल) को विदेश मंत्री मिल्युकोफ़् ने मित्र शक्तियों को सूचित किया कि "सारी जनता विश्व युद्ध को तब तक जारी रखना चाहती है जब तक कि निर्णात्मक विजय न प्राप्त करली जाये और अस्थायी सरकार मित्रशक्तियों के प्रति स्वीकार किये गये अपने दायित्व को पूर्णतया पालन करने का इरादा न कर ले।"

इस प्रकार अस्थायी सरकार ने ज़ारशाही सन्धियों के पालने के लिये प्रतिज्ञा की और वचन दिया कि साम्राज्यवादियों के युद्ध की

"विजय पूर्ण समाप्ति" के लिये, जनता के जितने खून की आवश्यकता होगी, उतना वह देने के लिये तैयार है।

२ मई (१८ अप्रेल) को यह वक्तव्य "मिल्युकोफ़् का नोट" मजदूरों और सैनिकों को मालूम हुआ। ३ मई को बोलशेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अस्थायी सरकार की साम्राज्यवादी नीति का विरोध करने के लिये जनता को कहा। ३—४ मई को "मिल्युकोफ़्-नोट" से क्रुद्ध हो १ लाख मजदूरों और सैनिकों ने प्रदर्शन में भाग लिया उनके फरहरों में यह माँगें लिखी हुई थीं, : "छापो गुप्त सन्धियों को!" "युद्ध की क्षय!" "सभी शक्ति सोवियतों को।" मजदूरों और सैनिकों ने नगर के बाहर से केन्द्र की ओर मार्च किया जहां कि अस्थायी सरकार उस वक्त बैठी हुई थी। नेव्स्की सड़क और दूसरे स्थानों में बूर्ज्वा समुदाय के साथ झगड़े हुये।

जेनरल कोर्निलोफ् जैसे मुंहफट क्रान्ति-विरोधियों ने मांग पेश की कि प्रदर्शनकारियों पर गोली चलायी जाय, और इसके लिये हुकुम भी दिया। लेकिन सेना ने उसे मानने से इन्कार कर दिया।

प्रदर्शन के समय पेत्रोग्राद पार्टी-कमिटी के मेम्बरों में से कुछ थोड़े से (वग्दात्येफ् आदि) ने तुरन्त अस्थायी सरकार को उलटने की मांग का नारा शुरू किया। बोलशेविक पार्टी की केन्द्रीय-समिति ने इन "वामपक्षी" साहसिकों के आचरण की सख्त निन्दा की; इस नारा को उसने असामयिक और अयुक्त समझा, ऐसा नारे को जो कि पार्टी के अपने कामों—सोवियतों के बहुमत को अपनी ओर खींचने में बाधक और क्रान्ति के शक्तिपूर्ण विकास की पार्टी की नीति के विरुद्ध समझा।

३-४ मई की घटनाओं ने अस्थायी सरकार के संकट के आरम्भ को सूचित किया।

मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों की समझौता वाली नीति में यह पहिली जबर्दस्त गम्भीर दरार थी।

१५ मई १९१७ को, जनता के दबाव के कारण मिल्युकोफ्, गुच्-कोफ् को अस्थायी सरकार से हटा दिया गया।

पहली गंगा-यमुनी अस्थायी सरकार बूर्ज्वा प्रतिनिधियों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त (स्कोबेलोफ् और त्सेरेतेली) और समाजवादी-क्रान्तिकारी (चेर्नोफ्, केरेन्स्की और दूसरे) शामिल थे। इस प्रकार मेनशेविकों ने जिन्होंने कि १९०५ में घोषित किया था कि क्रान्तिकारी अस्थायी सरकार में समाजवादी जनतान्त्रिक प्रतिनिधियों का भाग लेना अयुक्त है, अब क्रान्ति-विरोधी अस्थायी सरकार में अपने प्रतिनिधियों के भाग लेने को युक्त समझा।

इस प्रकार मेन्सेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी क्रान्ति-विरोधी बूर्ज्वावर्ग की गुट्ट में भाग कर चले गये । 'मई (२४ अप्रेल) १९१७ को बोलशेविक पार्टी की सातवीं (अप्रिल) कान्फ्रेन्स बैठी। पार्टी के आस्तित्व में यह पहला मौका था, जब कि एक बोलशेविक-कान्फ्रेन्स खुले तौर से हुई। पार्टी के इतिहास में इस कान्फ्रेन्स का महत्व एक पार्टी कांग्रेस के बराबर समझा जाता है।

अखिल रूसी अप्रिल कान्फ्रेन्स ने दिखला दिया कि पार्टी बड़ी तेजी से बढ़ रही है। कान्फ्रेन्स में १३३ प्रतिनिधि वोट के अधिकार वाले और १८ बिना वोट के किन्तु बोल सकने वाले शामिल हुये थे। वे पार्टी के ८० हजार संगठित सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते थे।

कान्फ्रेन्स ने युद्ध और क्रांति सम्बंधी सभी मौलिक प्रश्नों पर वाद-विवाद करके पार्टी के विचार को निर्धारित किया; इन प्रश्नों में तत्कालीन परिस्थिति, युद्ध, अस्थायी सरकार, सोवियतें, किसानों का प्रश्न, जातियों का प्रश्न आदि शामिल थे।

अपनी रिपोर्ट में लेनिन् ने, अप्रेल निबन्ध में आ चुके सिद्धान्तों की सविस्तार व्याख्या की। पार्टी का कर्त्तव्य है कि क्रांति की प्रथम अवस्था, "जिसने शक्ति को बूर्ज्वा वर्ग के हाथ में दे दिया को द्वितीय अवस्था—जिसे शक्ति को प्रोलेतारी वर्ग तथा किसानों के अति दरिद्र

हाथों में (लेनिन्) संक्रांत करना चाहिये। पार्टी के लिये जो रास्ता लेना है, वह यह है कि समाजवादी क्रांति की तैयारी करना। पार्टी के तुरंत के कार्य्य के बारे में लेनिन् ने यह नारा रखा : "सभी शक्ति सोवियतों को!"

"सभी शक्ति सोवियतों को।" इस नारे का मतलब यह था कि दोहरी शक्ति को खतम कर देना जरूरी है, दोहरी शक्ति की अस्थायी सरकार और सोवियत में शक्ति का बँटवारा, और उसका अर्थ था सभी शक्ति को सोवियतों को दे देना, और जमींदारों तथा पूँजीपतियों के प्रतिनिधियों को सरकार की मशिनरी से निकाल बाहर करना।

कान्फ्रेन्स ने प्रस्ताव पास किया कि पार्टी का एक अत्यंत महत्व पूर्ण काम है इस सच्चाई को अनथक हो जनता को समझाना कि "अस्थायी सरकार अपने रूप में जमींदारों और बूर्ज्वाजी (बनियों) के शासन का एक मशीन है।" और यह भी दिखलाना चाहिये कि समाजवादी-क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों की समझौता वाली नीति कितनी खतरनाक है, वे जनता को झूठी प्रतिज्ञाओं द्वारा धोखा देते रहे और साम्राज्यवादी युद्ध तथा क्रांति विरोध का निशाना बना रहे हैं।

कान्फ्रेन्स में कामेनेफ् और रइकोफ् ने लेनिन् का विरोध किया। मेनशेविकों की आवाज में बोलते हुये उन्होंने जोर दिया कि रूस अभी समाजवादी क्राँति के योग्य नहीं हुआ है, और रूस में सिर्फ बूर्ज्वा प्रजातंत्र का होना ही सम्भव है। उन्होंने पार्टी और मजदूर-वर्ग से सिफारिश की कि अपने अस्थायी सरकार के "नियंत्रण" तक ही सीमित रखें। वस्तुतः वे, मेनशेविकों की भाँति पूंजीवाद और बूर्ज्वाजी के शासन के कायम रखने के समर्थक थे।

ज़िनोवियेफ़् ने भी कॉन्फ्रेंस में लेनिन् का विरोध किया, इस प्रश्न पर कि बोलशेविक पार्टी को जिम्मेवेल्टि मण्डली के भीतर रहना चाहिये या उससे निकल कर एक नया इन्टरनेशिनल (अंतर्रा-

ग्राय) बनाना चाहिये। शांति के लिये प्रचार करती हुई इस मण्डली ने युद्ध में भाग लेने वाले बूर्ज्वा वर्ग के साथ वस्तुतः सम्बंध विच्छेद नहीं किया। इसीलिये लेनिन् ने तुरंत इस मण्डली से हटकर, एक नये कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल को बनाने के लिये कहा। ज़िनोवियेफ़् ने ज़ोर दिया कि पार्टी को ज़िम्मेंर्वाल्ड मण्डली में रहना चाहिये। लेनिन् ने ज़िनोवियेफ़् के प्रस्ताव का बड़े ज़ोर के साथ खण्डन किया और उसके तरीके को "महाअवसरवादी और खतरनाक" कहा।

अप्रेल कांफ्रेंस में किसानों और जातियों के प्रश्नों पर भी विचार किया गया।

किसानों के प्रश्न पर लेनिन् की रिपोर्ट के सम्बंध में कांफ्रेंस ने एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें जमिंदारियों को जप्त करके किसान-कमीटियों के हाथ में देदेने तथा भूमि के राष्ट्रीकरण के लिये कहा गया था। बोलशेविक ने किसानों को भूमि के वास्ते लड़ने के लिये कहा और यह बतलाया कि एक बोलशेविक पार्टी ही ऐसी क्रांति-कारी पार्टी है, ऐसी पार्टी जो कि जमींदारों को हटाने के लिये वस्तुतः किसानों की मदद कर रही है।

जातियों के प्रश्न पर सबसे बड़े महत्व की चीज थी साथी स्तालिन की रिपोर्ट। क्रांति के पहले भी साम्राज्यवादी युद्ध के आरम्भ होने से कुछ पहले लेनिन् और स्तालिन ने जातियों के प्रश्न के सम्बंध में बोलशेविक पार्टी की नीति के मौलिक सिद्धांतों का विवेचन किया था। लेनिन् और स्तालिन ने घोषित किया था कि साम्राज्यवाद के खिलाफ़ उत्पीड़ित लोगों के जातीय स्वतंत्रता के आंदोलन में प्रोलेतरी (कमकर) पार्टी को मदद देनी चाहिये। परिणामतः, बोलशेविक पार्टी जातियों के आत्म निर्णय के अधिकार अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्रों के तौर पर कायम होने का समर्थन करती थी। साथी स्तालिन ने कांफ्रेंस में दी गयी। अपनी केंद्रीय समिति के ओर से इस विचार का समर्थन किया।

प्याताकोफ़् ने लेनिन् और स्तालिन का विरोध किया; उसने और बुखारिन् ने युद्ध के समय ही में जातियों के प्रश्न के सम्बंध में राष्ट्रीय-अहम्मानी रुख ग्रहण किया था। वे दोनों जातियों के आत्म-निर्णय के विरोधी थे।

पार्टी ने जातियों के प्रश्न पर अपनी स्थिति दृढ़ और एक सी रखी; उसने जातियों की पूर्ण समानता और सभी प्रकार के जातीय उत्पीड़न और जातीय असमानता के उठाने के लिये संघर्ष करना तै किया; इन बातों से उत्पीड़ित जातियों की सहानुभूति और सहायता पार्टी के साथ थी।

अप्रेल कान्फ्रेन्स में जातियों के प्रश्न पर स्वीकृत किया हुआ प्रस्ताव इस प्रकार था :

"जातीय उत्पीड़न की नीति—जो कि स्वेच्छाचारिता और राजतन्त्र के समय से चली आ रही है—का समर्थन जमींदार, पूँजीपति और निम्न मध्यम वर्ग अपने वर्ग की सुविधाओं तथा भिन्न भिन्न जातियों के कमकरों में विगाड़ पैदा करने के लिये करते हैं। आधुनिक साम्राज्यवाद—जो निर्बल जातियों को परतंत्र करने के लिये अधिक प्रयत्नशील है—जातीय उत्पीड़न को और भारी बनाने में एक नया कारण है।

"जिस हद तक कि जातीय उत्पीड़न का अंत पूँजीवादी समाज में हो सकने वाला है, यह सिर्फ एक पक्की जनतंत्रीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था और ऐसे राजशासन में ही सम्भव है जो कि सभी जातियों और भाषाओं के लिये पूर्ण स्वतंत्रता की गारंटी देता है।

"रूस के भीतर रहने वाली जातियों का सुगमतापूर्वक अलग होने और स्वतंत्र राष्ट्र कायम करने का अधिकार अवश्य स्वीकार करना होगा। इस अधिकार से इंकार करना या इसे व्यावहारिक रूप देने के लिये जरूरी साधनों को न देने का मतलब है (दूसरे देश को) छीनने और हड़प करने की नीति का समर्थन करना।

जातियों के अलग होने के अधिकार के प्रोलेतरी वर्ग द्वारा स्वीकार करने पर भिन्न भिन्न जातिय के मजदूरों के बीच पूर्ण एकता तथा सच्चे जनतांत्रिक तरीके से जातियों को नजदीक लाना सम्भव हो सकता है।

"जातियों का स्वतंत्रता पुर्वक अलग होने के अधिकार को, किसी खास जाति के एक खास समय में अलग होने की जरूरत के साथ मिश्रित नहीं कर देना चाहिये। प्रोलेतरी पार्टी को पिछला प्रश्न प्रत्येक विशेष मौके पर सारे सामाजिक विकास के हित, और समाजवाद के लिये प्रोलेतरी वर्ग के वर्ग-संघर्ष के हित दृष्टि से बिल्कुल स्वतंत्रता पूर्वक निश्चय करना चाहिये।

"पार्टी माँग पेश करती है, विस्तृत प्रादेशिक स्वायत शासन दिया जाये। ऊपर से तत्वावधान का उठा दिया जाये, अनिवार्य्य राज भाषा न रहे, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों, रहनेवालों की जातीय बनावट, आदि के अनुसार स्थानीय लोगों द्वारा स्वशासित और स्वायत प्रदेशों की सीमाओं को तै किया जावे।"

"प्रोलेतरी पार्टी दृढ़ता के साथ उस तथा कथित जातीय संस्कृतिक स्वायत शासन अस्वीकार करती है, जिसमें शिक्षा आदि को राजा के हाथ से निकालकर एक तरह की जातीय सभाओं के अधिकार में दिया जाता है। जातीय सांस्कृतिक स्वायात शासन एक ही स्थान और एक ही कारखाने में भी रहने और काम करनेवाले मजदूरों के उनकी भिन्न भिन्न जातीय सांस्कृतिक 'के अनुसार विभाजित करता है, दूसरे शब्दों में वह मजदूरों और व्यक्तिगत जातियों की बूर्ज्वा सांस्कृति में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करता है, जबकि समाजवादी जनतान्त्रिकों का लक्ष्य विश्व प्रोलेतरी वर्ग के अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृति को विकसित करने का हो।

"पार्टी माँग पेश करती है विधान में किसी जाति द्वारा भोगे जाने वाले सभी विशेषाधिकारों तथा अल्प-संख्यक जातियों के अधि-

कारों के ऊपर की सभी रुकावटों को हटा देने के लिये एक मौलिक कानून की।

"मजदूर वर्ग के हित चाहते हैं कि रूस की सभी जातियों के मजदूर एक ही प्रोलेतरीय संगठन राजनीतिक मजदूरसंघ, सहयोग तथा शिक्षा संस्थाओं आदि में रहें। भिन्न भिन्न जातियों के मजदूरों के लिये ऐसे ही सम्मिलित संगठन, मजदूरों को अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी तथा बूज्वो राष्ट्रीयता के खिलाफ सफल संघर्ष करना सम्भव बनायेगें।" (लेनिन्, और स्तालिन् १९१७, अङ्गरेजी संस्करण पृष्ठ ११८-११९।)

इस प्रकार अप्रेल कान्फ्रेन्स ने कामेनेफ्, ज़िनोवियेफ्, प्याताकोफ्, बुख़ारिन्, रुइकोफ् और उनके मुट्ठी भर अनुयायियों के अवसरवादी वाद-विरोधी मतों की पोल खोली।

कान्फ्रेन्स ने एक राय से सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों पर एक निश्चित राय कायम करके तथा समाजवादी क्रांति के विजय की ओर ले जाने वाले क्रांति के रास्ते को स्वीकार करके, लेनिन् का समर्थन किया।

३—राजधानी में बोलशेविक पार्टी की सफलता। अस्थायी सरकार की सेनाओं का असफल आक्रमण। मजदूरों और सैनिकों के जुलाई प्रदर्शन का रोकना।

अप्रेल कान्फ्रेन्सों के निर्णय के आधार पर, जनता को अपनी ओर करने तथा युद्ध के लिये शिक्षित तथा संगठित करने के लिये पार्टी ने विस्तार पूर्वक अपने कार्यों को विकसित किया। पार्टी की उस समय कार्यनीति थी, धैर्यपूर्वक बोलशेविक नीति को समझा कर तथा मेनशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की समझौता-वादी नीति की पोल खोल कर इन पार्टियों को जनता से अकेली करना और सोवियतों के बहुमतों को अपने पक्ष में लाना।

सोवियतों में होने वाले काम के अतिरिक्त बोलशेविकों ने मजदूर-संघों और फैक्टरी-कमिटियों में जबर्दस्त कार्य्य किया।

सेना में बोलशेविकों का काम विशेष करके विस्तृत था। चारों तरफ सैनिक संगठन होने लगे। सैनिकों और नौ सैनिकों को संगठित करने के लिये युद्ध क्षेत्र और पिछवाड़े में बोलशेविकों ने अनथक काम किया। युद्ध क्षेत्र में सैनिकों को सक्रिय क्रांतिकारी बनाने में बोलशेविक समाचार-पत्र, अकोप्नया प्राव्दा (खाई सत्य) ने खास तौर से महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया।

बोलशेविकों के प्रचार और आन्दोलन के कारण क्रांति के पहिले महीनों में ही बहुत से शहरों के मजदूरों ने सोवियतों—खासकर जिला सोवियतों के चुनावों, मेनशेविकों तथा समाजवादी-क्रांतिकारियों को हटाकर उनकी जगह बोलशेविक पार्टी की अनुयायियों को चुना।

बोलशेविकों के काम का बहुत सुंदर परिणाम हुआ। खासकर पेत्रोग्राद में। १२ से ५ मई १९१७ तक पेत्रोग्राद की फैक्टरी-कमिटियों की कान्फ्रेन्स हुई। इस कान्फ्रेन्स में तीन चौथाई प्रतिनिधियों ने बोलशेविकों का समर्थन किया। पेत्रोग्राद के प्रायः सभी मजदूरों ने बोलशेविक स्लोगन्—"सभी शक्ति सोवियतों को !"—का समर्थन किया।

१६ जून को सोवियतों की प्रथम अखिल रूसी कांग्रेस बैठी। अब भी बोलशेविकों का सोवियतों में अल्पमत था; इस कांग्रेस में जहाँ मेनशेविकों, समाजवादी क्रांतिकारियों और दूसरों के ७ या ८ सौ प्रतिनिधि थे वहाँ बोलशेविकों के १०० से कुछ अधिक।

प्रथम सोवियत-कांग्रेस में बोलशेविकों ने लगातार बूर्ज्वाजी के साथ समझौते के खतरनाक परिणामों पर जोर दिया और युद्ध के साम्राज्यवादी रूप को खोलकर रखा। लेनिन् ने कांग्रेस में भाषण दिया, जिसमें उन्होंने बोलशेविकों की नीति को ठीक बतलाते हुये घोषित किया कि सिर्फ सोवियतों की सरकार ही मजदूरों को रोटी,

किसानों को खेत दे सकती है, तथा शांति कायम कर सत्यानाश से देश को बचा सकती है।

उस समय एक प्रदर्शन के संगठन तथा सोवियत कांग्रेस के सामने माँगों को पेश करने के लिये, पेत्रोग्राद के मजदूरों वाले मोहल्ले में एक सार्वजनिक प्रचार जोर से चल रहा था। अपनी आज्ञा के बिना प्रदर्शन करने से मजदूरों को रोकने की उत्सुकता में तथा जनता के क्रांतिकारी भावों को अपने प्रयोजन के लिये इस्तेमाल करने की आशा से पेत्रोग्राद-सोवियत की कार्य्यकारिणी समिति ने १ जुलाई (१८ जून) को एक प्रदर्शन करने का निर्णय किया। मेनशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों को उम्मीद थी कि वह बोलशेविक विरोधी नारों के साथ होगा। बोलशेविक पार्टी ने इस प्रदर्शन के लिये बड़े जोरों के साथ तैयारी की। साथी स्तालिन ने शब्दों में लिखा कि "एक जुलाई को पेत्रोग्राद में प्रदर्शन हमारे क्रांतिकारी नारों के साथ होना चाहिये, इसे निश्चित कर देना हमारा कार्य्य है।"

१ जुलाई १९१७ का प्रदर्शन क्रांति के शहीदों की समाधियों पर हुआ। यह बोलशेविक पार्टियों की शक्ति का प्रदर्शन सा सिद्ध हुआ। इसने जनता के बढ़ते हुए क्रांतिकारी जोश और बोलशेविक पार्टी में उसके बढ़ते हुये विश्वास को प्रकट किया। मेनशेविकों और समाज-वादी—क्रांतिकारियों के फहराते नारे—जिनमें अस्थायी सरकार में विश्वास और युद्ध को जारी रखने के लिये जोर देकर कहा गया था—बोलशेविकों के नारे समुद्र में भूल गये। ४ लाख प्रदर्शन कारी फरहरों को लेकर चल रहे थे, जिन पर लिखे नारे थे, "युद्ध की क्षय।" "दश पूंजीवादी मंत्रियों की क्षय!" "सभी शक्ति सोवियतों को।"

वहाँ मेनशेविकों तथा समाजवादी क्रांतिकारियों के लिये पूर्ण टाँय टाँय फिस रही देश की राजधानी में अस्थायी सरकार की पूर्ण

भङ्ग हुई। तो भी, अस्थायी सरकार को प्रथम सोवियत-कांग्रेस की सहायता प्राप्त हुई और उसने साम्राज्यवादी नीति को जारी रखना ते किया। उसी दिन, १ जुलाई को अस्थायी सरकार ने वृटिश और फ्रेञ्च साम्राज्यवादियों की इच्छाओं को शिरोधार्य्य करके सैनिकों का चढ़ाई शुरू करने के लिये युद्ध-क्षेत्र में भेज दिया। बूर्ज्वासी ने क्रांति को खतम करने के लिये इसे एक मात्र साधन समझा। चढ़ाई के कामयाव होने पर बूर्ज्वाजी ने आशा की थी, कि वे सभी शक्ति अपने हाथ में ले लेंगे। सोवियतों को मैदान से बाहर कर देंगे और बालशेविकों को पीस देगें। फिर असफल होने पर, सारा दोष सेना को छिन्न भिन्न करने का इलजाम लगाकर, बोलशेविकों पर डाला जा सकता है। इसमें संदेह की गुञ्जाइश नहीं थी कि चढ़ाई असफल होगी, और वह असफल हुई। सेनिक थके हुये थे, उन्होंने चढ़ाई का अर्थ नही समझा, अपने अफसरों पर उनका विश्वास नहीं था, वे उनके लिये अपरिचित थे। तोपों और गोलों की कमी थी। इन सब बातों ने चढ़ाई के असफल होने का फैसला पहिले ही कर दिया था। युद्ध क्षेत्र में चढ़ाई और फिर उसकी निष्फलता की खबरों ने राजधानी में हलचल मचा दी। मजदूरों और सनिकों के असंतोष का इन्तिहा न रह गई। यह साफ दिखाई देने लगा कि अस्थायी सरकार की शांति नीति की घोषणा लोगों का धोखा देने के लिये था, और वह साम्राज्यवादी युद्ध को जारी रखना चाहती है। यह स्पष्ट मालूम होता था कि अखिल रूसी सोवियत केन्द्रीय कार्य्य-कारिणी-समिति और पेत्रोग्राद-सोवियत अस्थायी सरकार की अपराध पूर्ण कारवाइयों को रोकना नहीं चाहती या उसमें असमर्थ है, और स्वयं उसकी पिछलागु हैं। पेत्रोग्राद के मजदूरों और सैनिकों के दिल में क्रान्तिकारी असंतोष खौलने लगा। १६ (३) जुलाई को पेत्रोग्राद के वुइवोर्ग भाग में अपने आप प्रदर्शन आरम्भ हुये। वे तमाम दिन जारी रहे। अलग प्रदर्शन बढ़कर एक विकराल सार्वजानक

सशस्त्र प्रदर्शन बन गया और उसने शक्ति को सोवियतों के हाथ में देने की मांग पेश की। बलशेविक पार्टी उस वक्त सशस्त्र कारवाई के विरुद्ध थी, क्योंकि वह समझती थी कि क्रांतिकारी शक्ति अभी मजबूत नहीं है, सेना और प्रांत, राजधानी में विद्रोह की सहायता करने के लिये अभी तैयार नहीं है, और एक अलग थलग तथा अपरिपक्व विद्रोह क्रांति के अग्रगामी भाग का पीसना क्रांति विरोधियों के लिये आसान बना देगा। लेकिन जब जनता को प्रदर्शन करने से रोकना सर्वथा असम्भव हो गया, तो पार्टी ने शांतिपूर्ण संगठित रूप देने के लिये प्रदर्शन में भाग लेना तै किया। बोलशेविक पार्टी ऐसा करने में सफल हुई। लाखों स्त्री पुरुष पेत्रोग्राद सोवियत और अखिल रूसी सोवियत केंद्रीय कार्य्यकारिणी-समिति के हेडक्वार्टर पर पहुँचे, और वहाँ उन्होंने मांग पेश की कि सोवियतों को शक्ति अपने हाथों में लेना चाहिये, साम्राज्यवादी बूर्ज्वाजी से सम्बध तोड़ना चाहिये और एक सक्रिय शांतिनीति का अनुसरण करना चाहिये।

प्रदर्शन के शान्तिमय ढंग के होने पर भी उसके विरुद्ध क्रान्ति विरोधी सेना—अफसरों और छात्रों की टुकड़ी—को लाया गया, पेत्रोग्राद की सड़कों में मजदूरों और सैनिकों का खून बह चला। अत्यन्त क्रान्ति विरोधी सैनिक टुकड़ियों को मजदूरों को दबाने के लिये मैदान से बुलाया गया।

मजदूरों और सैनिकों के प्रदर्शन को दबा देने के बाद बूर्ज्वासी तथा सफेद जेनरलों के सहयोग से मेनशेविकों और समाजवादी-क्रान्तियों ने बोलशेविक पार्टी पर झपट्टा मारा। प्राव्दा के मकान तोड़ दिये गये। प्राव्दा, सोल्दत्स्कया प्राव्दा (सैनिक सत्य) और दूसरे बोलशेविक समाचारपत्रों के प्रकाशन को रोक दिया गया। वोइनोफ् नामक एक मजदूर को कैडेटों (सैनिक अफसर छात्रों) ने इसलिये मार दिया कि वह सड़क पर लिस्तोक प्राव्दू (प्राव्दा

बुलेटिन) को बेंच रहा था। लाल गार्दों को निशस्त्र करने का काम शुरू हुआ। पेत्रोग्राद छावनी की क्रान्तिकारी पल्टनों को राजधानी से हटाकर खाइयों की ओर भेज दिया गया। पहिले युद्ध क्षेत्र को भेजा गया और पीछे गिरफ्तारियाँ की गईं। २० जुलाई को लेनिन की गिरफ्तारी के लिये वारण्ट निकला। बोलशेविक पार्टी के कितने ही प्रमुख सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। जुद-छापाखाने - जिसमें बोलशेविक पत्र आदि छपते थे—को नष्टकर दिया गया। पेत्राग्राद कचहरी के प्रोक्युरेटर (सरकारी वकील) ने घोषित किया कि लेनिन और कितने ही बोलशेविकों पर भारी देशद्रोह और सशस्त्र विद्रोह संगठन करने का जुर्म है। लेनिन के ऊपर का इल्जाम जेनरल देनिकिन् के हेडक्वार्टर पर गढ़ा गया था, और भेदियों तथा खुफया के एजेन्टों की गवाही पर अवलम्बित था।

इस प्रकार खिचड़ी अस्थायी सरकार जिसमें त्सेरेतेली, स्कोवेलोफ़, करेन्स्की और चर्नोफ़् जैसे मेनशेविकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों के प्रमुख प्रतिनिधि थे -गिरकर सीधे साम्राज्यवाद और क्रान्ति विरोध तक पहुँच गयी। शान्ति की नीति की जगह उसने युद्ध जारी रखने की नीति को स्वीकार किया, जनता के जनतान्त्रिक अधिकारों की रक्षा करने की जगह इन अधिकारों के नष्ट करने और मजदूरों तथा सैनिकों को हथियार के बल से दबाने की नीति को स्वीकार किया।

पूंजीवादियों के प्रतिनिधि गुच्कोफ़् और मिल्युकोफ़् जो बात करने में हिचकिचाते रहे, वह "समाजवादी" केरेन्स्की और त्सेरेतेली, चेर्नोफ़ और स्कोवेलोफ़ ने कर दिखलाया।

दुहरी शक्ति का खात्मा हुआ।

इसका खात्मा बूर्ज्वाजी के पक्ष में हुआ, क्योंकि सारी शक्ति अस्थायी सरकार के हाथ में चली गई, और सोवियतें अपने समाज-

वादी-क्रान्तिकारी तथा मेनशेविक नेताओं के साथ अस्थायी सरकार की दुम बन गईं।

क्रान्ति का शान्तिपूर्ण काल समाप्त हुआ, क्योंकि अब एजन्डा पर बंदूक रख दी गई।

बदली हुई परिस्थिति को देखते हुये बोल्शेविक पार्टी ने अपनी कार्यशैली को बदल दिया वह अन्तर्धान हो गई। उसने अपने नेता लेनिन् के छिपने के लिये सुरक्षित स्थान का प्रबंध किया। और हथियार बल से बूर्ज्वासी के शासन को उलट कर सोवियतों के शासन को स्थापित करने के उद्देश्य से विद्रोह करने की तय्यारी शुरू की।

४—बोल्शेविक पार्टी ने सशस्त्र विद्रोह की तय्यारी का तरीका स्वीकार किया। छठीं पार्टी कांग्रेस।

बूर्ज्वा और निम्न-मध्यम वर्ग के समाचार पत्र जिस वक्त पागल कुत्ते की भाँति बोल्शेविकों के ऊपर हाथ धोकर पड़े हुये थे, ऐसे समय छठीं बोल्शेविक पार्टी कॉंग्रेस बैठी। वह पंचम (लंदन) कांग्रेस के दस वर्ष बाद तथा प्रागफी बोल्शेविक कांफ्रेंस के पाँच वर्ष बाद हुई। कांग्रेस गुप्त रूप में ८-१६ अगस्त (२६ जुलाई—३ अगस्त) १९१७ को हुई। अखबारों में सिर्फ उसके अधिवेशन के बारे में निकला, स्थान को नहीं खोला गया। पहिली बैठकें वुहवोर्ग मुहल्ले (लेनिन्ग्राद) में हुईं पीछे की नर्वा दर्वाजे के पास एक स्कूल में—जहाँ अब एक सांसकृतिक गृह खड़ा है—हुईं। बूर्ज्वा समाचार पत्रों ने प्रतिनिधियों को गिरिफ्तार करने की माँग पेश की। खुफिया वालों ने कांग्रेस की बैठक के स्थान का पता लगाने में सारी शक्ति लगा डाली, लेकिन सब निष्फल।

और इस प्रकार, जारशाही के उलटने के पाँच मास बाद भी बोल्शेविक गुप्त रीति से बैठक करने पर मजबूर हुये, जब कि प्रोलेतरी पार्टी के नेता लेनिन् ने छिपने के लिये मजबूर होकर रज्लिफ़् स्टेशन के पास एक झोंपड़ी में शरण ली।

अस्थायी सर्कार के गुर्गे चारों ओर उनके खोजने में जमीन-आसमान एक कर रहे थे, इसलिये वे कांग्रेस में उपस्थित नहीं हो सके; किन्तु अपने छिपने के स्थान से अपने पेत्रोगाद के सहकारियों और शिष्यों - स्तालिन्, स्वर्द्लोफ्, मोलोतोफ़, ओर्द्जोनिकिद्जे — के जरिये उन्होंने कांग्रेस के काम में पथप्रदर्शन किया।

कांग्रेस में वोट के अधिकार वाले १५७ प्रतिनिधि और १२८ वोट रहित भाषण के अधिकार वाले प्रतिनिधि सम्मिलित हुये थे। उस समय पार्टी के सदस्यों की संख्या २,४०,००० थी। १६ जुलाई को—मजदूर-प्रदर्शन के तोड़ने से पहिले, जब कि सभी बोल्शेविक कानूनन् काम कर रहे थे—पार्टी की ओर से ४१ पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती थीं, जिनमें २६ रूसी भाषा में और १२ दूसरी भाषाओं में।

जुलाई में जो अत्याचार बोल्शेविकों और मजदूरों पर हुये थे, उनसे हमारी पार्टी का प्रभाव कम होने की जगह, और बढ़ा। प्रान्तों से आये प्रतिनिधियों ने बहुतेरी घटनायें बतलाईं, जहाँ मजदूर और सैनिक झुंड के झुंड मेन्शेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों को घृणा के साथ "समाजवादी-जेलर" कह कर उन्हें छोड़ रहे थे। मेन्शेविक् और समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टियों से संबंध रखने वाले मजदूर और सैनिक क्रोध और घृणा से आविष्ट हो अपने सदस्यता के कार्डों को फाड़ कर बोल्शेविक पार्टी में शामिल होने के लिये प्रार्थना पत्र भेज रहे थे।

मुख्य विषय, जिन पर कांग्रेस में बहस हुई, वह केन्द्रीय समिति की राजनीतिक रिपोर्ट और राजनीतिक स्थिति। दोनों विषयों पर साथी स्तालिन ने रिपोर्ट दी। उन्होंने खूब साफ करके बतलाया, कि बूर्ज्वाजी द्वारा उसे दबाने के सारे प्रयत्नों के किये जाने के बाद भी कैसे क्रांति बढ़ और विकसित हो रही है। उन्होंने बतलाया कि आज क्रांति ने हमारे सम्मुख यह काम रखा है: उपज के उत्पादन

और वितरण पर मजदूरों के नियंत्रण की स्थापना, जमीन को किसानों को देना, और शासनशक्ति को बूर्ज्वासी के हाथ से मजदूर वर्ग और गरीब किसानों के हाथ में परिवर्तित करना। उन्होंने कहा कि क्रांति एक समाजवादी क्रांति का रूप ले रही है।

जुलाई के दिनों के बाद देशकी राजनीतिक स्थिति में जबरदस्त परिवर्त्तन हुआ। दुहरी शक्ति खतम होनेवाली हो गई। समाजवादी-क्रान्तिकारियों और मेनशेविकों के द्वारा चालित सोवियतों ने पूरी शक्ति को अपने हाथ में लेने से इन्कार किया, इसलिये शक्ति को खो दिया। शक्ति अब बूर्ज्वा अस्थायी सरकार के हाथ में पहुँच गई थी, और वह क्रान्ति को निःशस्त्र कर उसके संगठन को निर्मूल तथा बोलशेविक पार्टी को नष्ट करती जारही थी। क्रान्ति के सभी शान्तिपूर्ण विकास की सम्भावनायें जाती रहीं। सिर्फ एक बात बाकी रह गई है, साथी स्तालिन् ने कहा, अस्थायी सरकार को उलटकर शासन शक्ति को अपने हाथ में ले लेना। और सिर्फ मजदूर ही, गरीब किसानों के सहयोग से बल द्वारा शासनशक्ति को ले सकते हैं।

अब भी मेनशेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों द्वारा चालित सोवितें बूर्ज्वासी के केम्प में उतर गई हैं, और वर्त्तमान स्थितियों में वे अस्थायी सरकार की मातहत संस्थाओं ही की तरह काम कर सकती हैं। अब, जुलाई के दिनों के बाद, साथी स्तालिन् ने कहा, "सभी शक्ति सोवियतों को!" यह स्लोगन लौटाना होगा। तो भी, कुछ समय के लिये इस स्लोगन को लौटाने का मतलब सोवियतों की शक्ति के लिये संघर्ष का परित्याग नहीं है। यह बात सामान्य रूप से क्रान्तिकारी संघर्ष के साधन के तौर पर सोवियतों के बारे में नहीं है, बल्कि सिर्फ वर्त्तमान सोवियतों के बारे में है, जोकि मेनशेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों के नियंत्रण में है।

"क्रान्ति का शान्तिमय काल खतम हो गया," साथी स्तालिन् ने

कहा, "एक अशान्तिमय काल, भिड़न्त और धड़ाके का काल आरंभ हुआ।" लेनिन् और स्तालिन्, १९१७ अँग्रेजी, पृ० २०२।

सशस्त्र विद्रोह के लिये पार्टी ने नेतृत्व हाथ में लिया।

कांग्रेस में बूर्ज्वा प्रभाव दर्शाने वाले कुछ ऐसे भी व्यक्ति थे, जो कि समाजवादी क्रान्ति का मार्ग लेने के विरुद्ध थे।

त्रोत्स्कियाई प्रयोब्रज्हेन्स्की ने प्रस्ताव किया कि शक्ति-विजय के प्रस्ताव में कहना चाहिये कि देश को तभी समाजवाद की ओर ले जाया जा सकता है, जबकि पश्चिम में प्रोलेतरी क्रान्ति घटित हो।

त्रोत्स्कियर्वाद प्रस्ताव का साथी स्तालिन् ने विरोध किया। उन्होंने कहा :

"यह सम्भावना दूर नहीं हुई है कि रूस ही वह देश हो जो समाजवाद का मार्ग बनावे।... हमें यह पुराना विचार छोड़ देना चाहिये कि सिर्फ युरोप ही रास्ता दिखला सकता है। एक पोथीवाला मार्क्सवाद है और दूसरा सर्जक मार्क्सवाद। मैं पिछले को मानता हूँ।" (वहीं, पृष्ठ २९)

बुखारिन् ने, अपनी त्रोतिकयाई राय प्रकट करते जोर दिया कि किसान युद्ध को चाहते हैं, वे एकमत से बूर्ज्वाजी के साथ हैं, और वे मजदूरवर्ग का अनुगमन नहीं करेंगे।

बुखारिन् की बात का खंडन करते हुये साथी स्तालिन् ने बतलाया कि किसान भी कई तरह के हैं: धनी किसान हैं, जो कि साम्राज्यवादी बूर्ज्वाजी के समर्थक हैं, गरीब किसान हैं जो मजदूर वर्ग के साथ मैत्री करना चाहते, वे क्रांति के विजय के लिये संघर्ष करने में उसकी सहायता करेंगे।

कांग्रेस ने प्योब्रज्हेन्स्की और बुखारिन् के संशोधनों को अस्वीकार कर दिया, और साथी स्तालिन् के प्रस्ताव को स्वीकार किया।

कांग्रेस ने बोल्शेविकों के आर्थिक मंच पर बहस की, और उसे स्वीकार किया। इसके मुख्य अंश थे: जमींदारी की जब्ती और

सारी जमीन का राष्ट्रीकरण, बैंक का राष्ट्रीकरण, बड़े बड़े उद्योग का राष्ट्रीकरण, और उत्पादन और वितरण पर मजदूरों का नियंत्रण।

कांग्रेस ने उत्पादन पर मजदूरों के नियंत्रण के लिये लड़ने के महत्त्व पर जोर दिया, जो कि पीछे विशाल औद्योगिक कारखानों के राष्ट्रीयकरण के समय वहुत महत्वपूर्ण पार्ट अदा करने वाला साबित हुआ।

अपने सभी निर्णयों में, छठीं कांग्रेस ने लेनिन् के सिद्धान्त समाजवादी क्रांति को विजय के लिये शर्त के तौर पर प्रोलेतरी वर्ग और गरीब किसानों की मैत्री—पर खासतौर से जोर दिया।

कांग्रेस मेन्शेविकों के इस विचार—कि मजदूर संघों को निष्पक्ष रहना चाहिये—की निन्दा की। उसने वतलाया, कि रूस के मजदूर वर्ग के सामने जो महान कार्य है, वह तभी पूरा हो सकता है, यदि मजदूर-संघ बोलशेविक पार्टी के राजनीतिक नेतृत्व को स्वीकार करते हुये लड़ाकू वर्ग-संगठन बने रहें।

कांग्रेस ने एक प्रस्ताव तरुण संघों के सम्बन्ध में स्वीकार किया। वे उस समय अपने आप बार बार कायम हो रहे थे। पार्टी के पीछे के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप वह इन तरुण संगठनों को अपना निश्चित अनुगामी बना पाई, जो कि पीछे पार्टी के लिये संचित कोश बन गये।

कांग्रेस के इस बात पर भी वहस हुई, कि क्या लेनिन् को मुकदमे के लिये प्रकट होना चाहिये। कामेनेफ्, रुइकाफ्, त्रात्स्की और दूसरे कांग्रेस के पहिले भी राय रखते थे, कि लेनिन् को क्रान्ति विरोधी अदालत के सामने प्रकट होना चाहिये। साथी स्तालिन् इसके सख्त मुखालिफ थे। यही राय छठी कांग्रेस का भी हुई, क्योंकि वह इसे मुकदमा नहीं विना न्याय का कतल समझता था। कांग्रेस को इसमें सन्देह नहीं था, कि बूर्ज्वा सिर्फ एक चीज चाहते थे—अपने अत्यन्त भयंकर शत्रु लेनिन् का शारीरिक विनाश। कांग्रेस ने बूर्ज्वाजी

द्वारा क्रान्तिकारी मजदूरों के नेताओं के पुलीस के उत्पीड़न का विरोध किया, और लेनिन् के पास स्वागत सन्देश भेजा।

छठी कांग्रेस ने नये पार्टी नियम बनाये। उन नियमों में बतलाया गया था कि सभी पार्टी संगठन जनतांत्रिक केन्द्रवाद के सिद्धान्त पर काम करने होंगे।

इसका अर्थ है।

१) ऊपर से नीचे तक पार्टी की संचालक संस्थायें निर्वाचनात्मक होनी चाहिये।

२) पार्टी संस्थाओं को समय समय पर अपने कामों का ब्योरा अपने अपने पार्टी-संगठनों को देना चाहियें।

३) पार्टी का कड़ा अनुशासन और अल्पमत का बहुमत की मातहती माननी होगी।

४) ऊपर की संस्थाओं के निर्णयों को, नीचे संस्थाओं तथा सभी पार्टी-मेंबरों को पूरी पाबन्दी करनी होगी।

पार्टी के नियमों के अनुसार, नये मेंबरों का पार्टी में प्रवेश दो पार्टी-मेंबरों की सिफारिश से और स्थानीय संगठन के साधारण मेंबरों की स्वीकृत पर स्थानीय पार्टी संगठन द्वारा होगा।

छठीं कांग्रेस ने मेज्हयोन्त्सी और उनके नेता त्रोत्स्की को पार्टी में लिया। पर एक छोटासा ग्रूप था, जोकि १९१३ से पेत्रोग्राद् में मौजूद था और इसमें त्रोत्स्कियाई मेनशेविक तथा पार्टी से अलग हुये कुछ पुराने बोल्शेविक शामिल थे। युद्ध के समय मेज्हयोन्त्सी एक केन्द्रवादी संगठन था। वे बोल्शेविकों से लड़े, किन्तु कितनी ही बातों में मेन्शेविकों से उनका मतभेद था, इसलिये वे बीच की केन्द्र वादी, डावांडोल स्थिति में थे। छठीं पार्टी कांग्रेस के समय मेज्ह्योन्त्सी ने घोषित किया। कि हम सभी बातों में बोल्शेविकों से सहमत हैं, और पार्टी में आना चाहते हैं। कांग्रेस ने इस आशा से उनको लेना मंजूर किया, कि आगे चलकर वे पक्के बोल्शेविक बन

जावेंगे। मेञ्हयोन्त्सी में से कुछ, जैसे वोलोदार्स्की और उरित्स्की, वस्तुतः बोल्शेविक बन भी गये। किन्तु त्रोत्स्की और उसके कुछ मित्र जैसा कि पीछे स्पष्ट हो गया, पार्टी के हित के लिये उसमें शामिल नहीं हुये, बल्कि उसे भीतर से तोड़ने और नष्ट करने के लिये।

छठी कांग्रेस के सभी निर्णय सशस्त्र विद्रोह के लिये प्रोलेतरी, और गरीब किसानों को तय्यार करने की मन्शा से हुये थे। छठीं कांग्रेस ने समाजवादी क्रान्ति के लिये सशस्त्र विद्रोह में पार्टी का नेतृत्व किया।

कांग्रेस ने एक पार्टी-घोषणा निकाली, जिसमें मजदूरों, सैनिकों और किसानों को बूर्ज्वाजी के साथ अन्तिम युद्ध के लिये अपनी शक्तियों को संचित करने के लिये कहा जाता था। उसकी समाप्ति इन शब्दों से हुई थी:

"तो, नई लड़ाई के लिये तय्यार हो जाओ शस्त्र के साथियो! दृढ़ता के साथ बहादुरी के साथ और चुपचाप, उत्तेजना के वश में बिना हुये, संचित करो अपनी शक्तियों को और बनाओ अपनी सैनिक टुकड़ियों को! जमा हो जाओ मजदूरो और सैनिको, पार्टी के झंडे के नीचे। जमा हो जाओ हमारे झंडे के नीचे, गाँवों के पद दलितो।"

४—क्रान्ति के विरुद्ध जेनरल कोर्निलोफ़ का षड्यंत्र। षड्यंत्र का दबाना। पेत्रोग्राद् और मास्को सोवियतों पर बोल्शेविकों का अधिकार।

शासन-शक्ति को हाथ में लेकर बूर्ज्वाजी ने, अब कमजोर पड़ गई सोवियतों को नष्ट करने और खुलमखुला क्रांति विरोधी अधिनायकत्व को कायम करने के लिये तय्यारी शुरू की। करोड़पति र्याबुशिन्स्की ने गर्व से भरे शब्दों में घोषित किया कि इस स्थिति से निकलने का रास्ता है "अकाल का जनता के कष्ट का तीखा हाथ, जनता के झूठे मित्रों—जनतांत्रिक सोवियतों और कमीटियों—को

गले से पकड़ना।" युद्ध क्षेत्र में सैनिकों पर फौजी अदालतें बड़ी क्रूरता के साथ बदला चुका रही थीं, और एक ओर से सब को मृत्युदंड सुना रही थीं। १३ अगस्त १९१७ को, जेनरल कोर्निलोफ् प्रधान सेनापति ने उसी तरह पिछवाड़े में भी मृत्युदंड जारी करने के लिये जोर दिया।

२५ (१२) अगस्त को, बूर्ज्वासी और जमींदारों की शक्तियों को संचालित करने के लिये अस्थायी सर्कार द्वारा बुलाई गई स्टेट-कौंसिल मास्को के बोलशाई-थियेटर में उद्घाटन हुआ। कौंसिल में मुख्यतः जमींदारों, पूँजीपतियों, जेनरलों, अफसरों और कसाकों के प्रतिनिधि शामिल हुये थे। सोवियतों का प्रतिनिधित्व करने के लिये वहाँ मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी मौजूद थे।

स्टेट-कौंसिल के बुलाने के विरोध में बोल्शेविकों ने उद्घाटन के दिन मास्को में सार्वजनिक हड़ताल करने के लिये कहा, जिसमें अधिकांश मजदूरों ने भाग लिया। उसी वक्त कितने ही अन्य नगरों में भी हड़तालें हुईं।

समाजवादी-क्रांतिकारी केरेन्स्की ने घमंड के पागलपन में आ [illegible] में "लोहा और खून" से क्रांतिकारी आन्दोलन—किसानों जमींदारों की जमीन को गैर कानूनी तौर से कब्जा करने को भी [illegible] हुये—को दबाने की धमकी दी।

क्रांति विरोधी जेनरल कोर्निलोफ् ने खुल्लमखुल्ला "कमीटियों और सोवियतों को तोड़ देने" के लिये जोर दिया।

बैंकर, व्यापारी और कारखाने वाले कोर्निलोफ् के पास पहुँच कर उसे धन और सहायता का वचन देने लगे।

मित्र-शक्तियों—इंग्लेंड और फ्रांस—के प्रतिनिधि भी जेनरल् कोर्निलोफ् के ऊपर जोर दे रहे थे, कि क्रांति के खिलाफ कार्रवाई करने में देर नहीं होनी चाहिये।

क्रांति के खिलाफ़ जेनरल कोर्निलोफ़ का षड्यंत्र आगे बढ़ रहा था।

कोर्निलोफ़ ने अपनी तय्यारी खुले तौर से की। लोगों का ध्यान बँटाने के लिये षड्यंत्रियों ने अफ़वा उड़ानी शुरू की, कि बोल्शेविक पेत्रोग्राद् में विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं, जो कि ९ सितम्बर (२७ अगस्त)—क्रांति को प्रथम छमारी के अन्त—को होने वाला है। अस्थायी सर्कार—जिसका प्रमुख केरेन्स्की था—गुस्से में पागल हो बोल्शेविकों के ऊपर पड़ी, और प्रोलेतरी पार्टी के ऊपर और भी जोर से जुल्म के पहाड़ ढाने शुरू किये। इसी समय, जेनरल कोर्निलोफ़ सेना जमा करने लगा, इस अभिप्राय से कि पेत्रोग्राद् पर चढ़ाई करे, सोवियतों को तोड़ दे और सैनिक अधिनायकत्व स्थापित करे।

अपने क्रांति विरोधी काम के बारे में कोर्निलोफ़ केरेन्स्की से आरंभिक समझौता कर चुका था। किन्तु जैसे ही कोर्निलोफ़की कार्रवाई आरम्भ हुई, वैसे ही एक व एक केरेन्स्की ने बिल्कुल रुख बदल दिया, और अपने सहकारी से अलग हो गया। केरेन्स्की डरने लगा कि जनता कोर्निलोवियों के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी, तथा उन्हें पीस देगी, और साथ ही केरेन्स्की की बूर्ज्वा सर्कार को भी बहा फेंकेगी, यदि उसने तुरन्त कोर्निलोफ़ के मामले से अपने को अलग नहीं किया।

७ सिम्बर (२५ अगस्त) को कोर्निलोफ़ ने जेनरल क्रुइमोफ़् की नायकता में तृतीय सवार सेना को "पितृभूमि की रक्षा" की घोषणा के साथ पेत्रोंग्राद् के खिलाफ़ भेजा। कोर्निलोफ़् की बगावत को देखते हुये बाल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने मजदूरों और सैनिकों को क्रान्ति विरोधियों का सक्रिय सशस्त्र मुकाबिला करने को कहा। मजदूर फुर्ती के साथ हथियार बन्द होने और मुकाबिला करने की तैयारी करने लगे। इन दिनों लाल गारद की पल्टनें बड़ा आकार

धारण करने लगी। मजदूर-संघों (ट्रेड युनियन्) ने अपने मेंबरों को चालित किया। पेत्रोग्राद् का क्रान्तिकारी सैनिक वारिनियाँ भी युद्ध के लिये तैयार रखी गई थीं। पेत्रोग्राद् के चारों ओर खाइयाँ खोद दी गईं, कटीले तार की बाड़े लगा दी गईं और नगर की ओर जानेवाली रेल की पटरियाँ तोड़ दी गईं। क्रोन्स्तात से कई हजार नौ सैनिक नगर की रक्षा के लिये आ पहुँचे। पेत्रोग्राद् की ओर बढ़ते "वन्य-डिवीजन" (Savage Division) के पास प्रतिनिधि भेजे गये। जब इन प्रतिनिधियों ने इनको कॉकेसियन पर्वतियों—जिनसे कि वह "वन्य डिवीजन" बना था—से कोर्निलोफ़् की कार्रवाही का प्रयोजन बतलाया, तो उन्होंने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। कोर्निलोफ़् की दूसरी पल्टनों में भी आन्दोलक भेजे गये। जहाँ भी खतरा था, कोर्निलोफ़् से लड़ने के लिये क्रान्तिकारी कमीटियाँ और हेडक्वार्टर कायम कर दिये गये थे।

उन दिनों अत्यन्त भयभीत समाजवादी क्रान्तिकारी और मेन्शेविक नेता—जिनमें केरेन्स्की भी था—बोल्शेविकों की शरण ले रहे थे, क्योंकि उन्हें यकीन था, कि राजधानी में सिर्फ बोल्शेविक ही ऐसी मजबूत शक्ति हैं, जो कोर्निलोफ़् को हरा सकते हैं।

किन्तु, कोर्निलोफ़् को पीसने के लिये जनता को तैयार करते समय भी बोल्शेविकों ने केरेन्स्की की सरकार के विरुद्ध अपने सघर्ष को रोका नहीं। केरेन्स्की की सरकार, मेनशेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों की पोल को जनता के सामने यह कह कर खोल रहे थे कि उनकी सारी नीति कोर्निलोफ़् के क्रांति विरोधी षड्यंत्र में मदद देने की है।

इन सारी तैयारियों का परिणाम यह हुआ, कि कोर्निलोफ़ की बगावत चूर्ण कर दी गई। जेनरल क्रुइमोफ़ ने आत्महत्या करली। कोर्निलोफ़ और उसके सह-षड्यंत्री देनिकिन् और लुकोम्स्की गिरिफ्तार कर लिये गये। (किंतु, जल्दी ही केरेन्स्की ने उन्हें छोड़ दिया।)

कोर्निलोफ्-बगावत की पराजय ने क्रान्ति और क्रान्ति-विरोध की सापेक्ष शक्ति को बिजली की चमक जैसे प्रकट कर दिया। इसने बतला दिया कि सारा क्रान्ति विरोधी केम्प—जेनरलों और वैधानिक-जनतांत्रिक पार्टी से लेकर मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों तक जो बूर्ज्वाजी के दलदल में शिर तक फँस चुके थे—का नाश निश्चित है। यह स्पष्ट हो गया कि मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों का जनता पर प्रभाव, युद्ध के असह्य कष्ट को बढ़ाने की नीति और लम्बे युद्ध के कारण हुई आर्थिक दुर्व्यवस्था द्वारा बिल्कुल ही क्षीण हो गया है।

कोर्निलोफ् की पराजय ने यह भी दिखला दिया, कि बोल्शेविक पार्टी बढ़कर क्रान्ति की निर्णायक शक्ति बनी जा रही है और वह क्रान्तिविरोधी प्रयत्न को विफल करने में समर्थ है। हमारी पार्टी अब तक शासक पार्टी नहीं थी किन्तु कोर्निलोफ्-हितों में उसने वास्तविक शासन-शक्ति की तार का काम किया, क्योंकि इसकी हिदायतों को कमकर और सैनिक बिना हिचकिचाहट के पालन करते थे।

अन्ततः, कोर्निलोफ् की बगावत ने दिखलाया कि मुर्दा सी जान पड़ती सोवियतें वस्तुतः क्रान्तिकारी मुकाबिलों की जबर्दस्त छिपी शक्ति रखती हैं। इसमें सन्देह की गुञ्जाइश नहीं हो सकती, कि यह सोवियतें और उनकी कान्तिकारी कमीटियाँ ही थीं, जिन्होंने कि कोर्निलोफ् सेना का रास्ता बन्दकर दिया और उनकी शक्ति को तोड़ दिया।

कोर्निलोफ् के विरुद्ध संघर्ष ने मजदूर-सैनिक सोवियतों के मुर्झाये शरीर में नई जान डाल दी। इसने उन्हें समझौता नीति के प्रभाव से मुक्त कर दिया, उन्हें क्रान्तिकारी संघ के खुले पथ पर डाल दिया, और उनके रुख को बोल्शेविक पार्टी की ओर कर दिया।

सोवियतों पर बोल्शेविकों का प्रभाव पहिले से बहुत दृढ़ हो चला।

उनका प्रभाव शीघ्रता से गाँवों में भी फैलने लगा।

कोर्निलोफ विद्रोह ने साधारण किसान जनता के लिये भी स्पष्ट कर दिया कि यदि जमींदार और जेनरल वाल्शेविकों और सावियतों को नष्ट करने में सफल होते, तो दूसरी वार उनका हमला किसानों पर होगा। इसीलिये साधारण किसान जनता बोल्शेविकों के और नजदीक जमा होने लगी। मध्यम श्रेणी के किसान—जिनकी डाँवा-डोल स्थिति अप्रैल-अगस्त १९१७ काल में क्रान्ति के विकाश में बाधाक हुई थी—अब निश्चित तौर से गरीब किसानों के साथ मिल कर बोल्शेविक पार्टी की ओर झुकने लगे। साधारण किसान-जनता को अब यह अनुभव होने लगा था कि सिर्फ बोल्शेविक-पार्टी ही उन्हें युद्ध से बँचा सकता है, और सिर्फ यही वह पार्टी है जो जमींदारों को पीसने में समर्थ तथा खेतों को किसानों को देने के लिये तैयार है। १९१७ के सितम्बर अक्तूबर (पुराने) महीनों में किसानों ने बहुत भारी परिमाण में जमींदारों की जमीन पर कब्जा किया। जमींदार के खेत को गैरकानूनी तौर से जोतना आम सा हो गया। किसानों ने क्रान्ति का पथ पकड़ लिया, अब न धमकी और न सजा देने की मुहिमें उन्हें रोक सकती थीं।

क्रान्ति की बाढ़ ऊपर उठ रही थी।

अब सोवियतों के पुनर्सज्जीवन उनकी बनावट में परिवर्त्तन, उनके बोलशेवीकरण का समय आया। फेक्टरियों, मिलों और सैनिक संगठों में नये निर्वाचन हुये, और मेन्शेविकों तथा समाज-वादी क्रान्तिकारियों की जगह बोलशेविक पार्टी के प्रतिनिधियों को सोवियतों में भेजा। १२ सितम्बर (३१ अगस्त) कोर्निलोफ़ के ऊपर विजय के दूसरे दिन को पेत्रोग्राद् का सोवियत ने बालशेविक पार्टी का समर्थन किया। पेत्रोग्राद्-सोवियत के पुराने मेन्शेविक और

समाजवादी क्रान्तिकारी प्रेसीडिडम् (प्रधान मंडल) जिसका मुखिया च्वेइद्ज़े था—ने त्यागपत्र दे दिया, और इस प्रकार वोलशेविकों के लिये रास्ता साफ कर दिया। १८ (५) सितम्बर को मास्को मज़दूर-डिपुटी सोवियत भी बोल्शेविकों की तरफ हो गई। मास्को के समाजवादी-क्रान्तिकारी और मेन्शेविक प्रेसीडिडम् उम् ने भी इस्तीफा दिया, और बोलशेविकों के लिये रास्ता छोड़ दिया।

इसका मतलब था, कि सफल विद्रोह की प्रधान स्थितियाँ अब पूर्ण हो गई हैं।

"सभी शक्ति सोवियतों को !" यह स्लोगन् फिर चारों तरफ सुनाई देने लगा। लेकिन अब यह पुराना स्लोगन् शक्ति को मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारी सोवियतों के हाथ में देने का स्लोगन्—नहीं था। इस समय पर स्लोगन् था सोवियतों को अस्थायी सर्कार के खिलाफ विद्रोह के आरम्भ करने के लिये, जिसका उद्देश्य था देश में सारी शक्ति को इन सोवियतों के हाथ में देना, जिनके नेता बोल्शेविक थे।

समझौता वादी पार्टियों में बिखराहट शुरू हुई।

क्रान्तिकारी किसानों के दबाव से समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी में एक वामपक्ष बना, जिसका नाम 'वाम' समाजवादी क्रान्तिकारी पड़ा, जिन्होंने बूर्ज्वासी के साथ समझौता की नीति के खिलाफ अपनी राय दी।

मेन्शेविकों में भी एक "वाम" ग्रूप, तथा कथित "अन्तराष्ट्रीयवादी" पैदा हुये, जिनका आकर्षण बोल्शेविकों की तरफ था।

अराजकवादियों का जहाँ तक सम्बन्ध है, इनका प्रभाव पहिले ही से नगण्य सा था, और अब वे साफ तौर से छोटी छोटी टुकड़ियों में विभक्त हो गये, उनमें से कुछ अपराधियों के गुंडा-चारी और उत्तेजना देने वालों समाज के कलंकों में मिल गये; दूसरे "विश्वास से" हड़प करो किसानों और छोटे छोटे नागरिकों को

लूटने, तथा मजदूर-क्लबों के फंडों और घरों को वे छीनने वाले बन गये; दूसरे इस खुले आम क्रान्तिविरोधियों के केम्प में चले गये और बूर्ज्वाजी के चाकर बन अपना मतलब सिद्ध करने लगे। वे हर तरह के शासन के विरुद्ध थे, खासकर मजदूरों और किसानों के क्रान्तिकारी शासन के तो और भी; क्योंकि वे जानते थे कि एक क्रान्तिकारी सर्कार जनता को लूटने और सार्वजनिक सम्पत्ति को चुराने की इजाजत कभी नहीं दे सकती।

कार्निलोफ की पराजय के बाद मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने एकबार फिर क्रान्ति की बाढ़ को रोकने का प्रयत्न किया। इस अभिप्राय को सामने रखकर २५–१२ सितम्बर (१९१७) को इन्होंने एक अखिल रूसी जनतांत्रिक कान्फ्रेस बुलाई, जिसमें शामिल हुये थे, समाजवादी पार्टियों के प्रतिनिधि समझौता वाली सोवियतों, मजदूर संघों, जेम्स्त्वो का पारिक तथा औद्योगिक चक्रों और सेनांगों के प्रतिनिधि। कान्फ्रेस ने प्राक्-पार्ल्यामेंट के नाम से एक अस्थायी प्रजातंत्र-कौंसिल कायम की। समझौता वादियों ने आशा की थी, कि प्राक्-पार्ल्यामेंट की मदद से वे क्रान्ति को रोक सकेंगे, और देश को सोवियत् क्रान्ति के पथ से हटाकर बूर्ज्वा वैधानिक पार्ल्यामेंटवाद के पथ पर कर देंगे। लेकिन राजनीतिक दीवालियों के लिये क्रान्ति के चक्के का पीछे लौटाना एक बिल्कुल व्यर्थ का प्रयत्न था। इसका खात्मा टाँय-टाँय फिस में होना निश्चित था, और वैसा ही हुआ भी। कमकर इन समझौता वादियों के पार्ल्यामेंटरी प्रयत्नों को खिल्ली उड़ाते थे और प्रेद्-पार्लामेन्त (प्राक्-पर्लामेंट) को प्रेद्-वान्निक (प्राक् स्नानागार) कहते थे।

वोल्शेविक पार्टी के केन्द्रीय समिति ने प्राक्-पार्लामेंट के बहिष्कार का निश्चय किया। यह सच है, प्राक् पार्लामेंट में गये बोल्शेविक ग्रूप—जिसमें कामेनेफ और त्योदोसेविच् जैसे लोग थे—

उसे छोड़ना नहीं चाहते थे, किन्तु पार्टी की केन्द्रीय समिति ने उन्हें वैसा करने के लिये मजबूर किया।

कामेनेफ् और जिनोवियेफ् ने प्राक्-पार्लीमेंट में भाग लेने पर बहुत ज़ोर दिया, उसके द्वारा वे पार्टी को विद्रोह की तैयारी से विचलाना चाहते थे। अखिल रूसी जनतांत्रिक कान्फ्रेन्स की एक बैठक में बोलते हुये साथी स्तालिन ने प्राक्-पार्लीमेंट में भाग लेने का जबर्दस्त विरोध किया। उन्होंने प्राक् पार्लीमेंट को "कोर्निलोफ् गर्भस्राव" कहा।

लेनिन् और स्तालिन का मत था कि थोड़े समय के लिये भी प्राक् पार्लामेंट में भाग लेना भारी भूल होगी; क्योंकि इससे जनता में झूटी आशा का संचार होगा, कि प्राक् पार्लामेंट सचमुच मजदूर वर्ग के लिये कुछ कर सकती है।

साथ ही, बोल्शेविकों ने सोवियतों की द्वितीय कांग्रेस के बुलाने की ज़ोरदार तैयारी की। उन्हें आशा थी कि इस कांग्रेस में उनका बहुमत होगा। बोल्शेविक सोवियतों के दबाव के कारण, मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों की, अखिल रूसी केन्द्रीय कार्य-कारिणी समिति द्वारा टरकाने की कोशिश होने पर भी, सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस अक्तूबर (पुराना) १९१७ के उत्तरार्द्ध में बुलाई गई।

६—पेत्रोग्राद् में अक्तूबर विद्रोह और अस्थायी सर्कार की गिरिफ्तारी। द्वितीय सोवियत् कांग्रेस और सोवियत् सरकार की स्थापना। शान्ति और भूमि के संबंध में द्वितीय सोवियत् कांग्रेस की घोषणा। समाजवादी क्रान्ति की विजय। समाज-वादी क्रान्ति के विजय के कारण।

बोल्शेविकों ने विद्रोह के लिये जबर्दस्त तैयारी शुरू की। लेनिन् ने घोषित किया कि, दोनों राजधानियों—मास्को और लेनिनग्राद्—

में मजदूर-सैनिक-डिपुटी-सोवियतों में बहुमत हो जाने पर राजशक्ति को बोल्शेविक अपने हाथ में ले सकते हैं, और लेना चाहिये। अबतक के लिये हुये रास्ते पर एक नजर डालते हुये लेनिन् ने इस बात पर जोर दिया कि "जनता का बहुमत हमारे लिये है।" अपने लेखों और बोल्शेविक संगठनों तथा केन्द्रीय समिति के लिये लिखे गये पत्रों में लेनिन् ने विद्रोह की एक विस्तृत योजना का खाका दिया था, जिसमें बतलाया गया था, कि कैसे सेनांग, नौसेना और लाल गारद को इस्तेमाल करना चाहिये, विद्रोह की निश्चित सफलता के लिये कौन से मर्म स्थलों पर कब्जा करना चाहिये।

१९ (१६) अक्तूबर को, लेनिन् गुप्त रीति से फिनलैंड से पेत्रोग्राद् आये। २३ (१०) अक्तूबर १९१७ को पार्टी की केन्द्रीय समिति की वह ऐतिहासिक बैठक हुई, जिसमें अगले चार दिनों में सशस्त्र विद्रोह शुरू करने की बात ते की गई। पार्टी-केन्द्रीय समिति के उस ऐतिहासिक प्रस्ताव—जिसे लेनिन् ने बनाया था—में कहा गया था:—

"केन्द्रीय समिति मानती थी कि रूसी क्रान्ति की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति (जर्मन नौसेना का विद्रोह, जो कि सारे युरोप में विश्व समाजवादी क्रान्ति की वृद्धि का एक चरम प्राकट्य है; रूस में क्रान्ति का गला घोंटने के अभिप्राय से साम्राज्यवादियों द्वारा सन्धि कर लेने की धमकी) तथा उसकी सैनिक स्थिति (रूसी बूर्ज्वाजी तथा केरेन्स्की कम्पनी का पेत्रोग्राद् को जर्मनी के हाथ में सौंपने का असंदिग्ध निश्चय), और यह बात थी, कि सोवियतों में प्रोलेतरी-पार्टी ने बहुमत कर लिया है—इस सब को, किसान विद्रोह और जनता का हमारी पार्टी पर विश्वास होना (मास्को के चुनाव), और अन्ततः, एक द्वितीय कोर्निलोफ् कांड की साफ तैयारी का किया जाना (पेत्रोग्राद् से फौजों का हटाना, पेत्रोग्राद् में कसाकों का भेजा जाना, कसाकों द्वारा मिन्स्क का घेरा जाना इत्यादि)—यह सब सशस्त्र विद्रोह को सामयिक बतलाता है।

"इस लिये यह सोचते हुये कि सशस्त्र विद्रोह अनिवार्य है, और इसके लिये समय बिल्कुल अनुकूल है, केन्द्रीय समिति पार्टी के सभी संगठनों को आदेश देती है कि इसी दृष्टि के अनुसार रास्ता अख्तियार करें, और सभी व्यावहारिक प्रश्नों (उत्तरा खंड की सोवियत् कांग्रेस, पेत्रोग्राद् से फौजों का हटाना, मास्को में और मिन्स्क में हमारे लोगों का काम इत्यादि) पर बहस और निर्णय करें।"

(लेनिन्, संचित ग्रंथावली, अंग्रेजी सं०, जिल्द ६, पृ० ३०३)

केन्द्रीय समिति के दो सदस्य कामेनेफ़् और जिनोवियेफ़् ने इस ऐतिहास निर्णय के विरुद्ध भाषण और वोट दिया। मेन्शेविकों की भाँति वे एक बूर्ज्वा पार्लामेंटरी प्रजातंत्र का ख्वाब देखते थे, और यह कहकर मजदूर वर्ग पर ताना देते थे. कि वह समाजवादी क्रान्ति को सफल बनाने के लिये पर्याप्त मजबूत नहीं है, शक्ति को अपने हाथ में लेने के लिये अभी काफी पक्का नहीं है।

यद्यपि इस अधिवेशन में त्रोत्स्की ने प्रस्ताव के खिलाफ सीधे वोट नहीं दिया, तो भी उसने एक संशोधन पेश किया, जो विद्रोह की सफलता को शून्य और उसे निष्फल बना दिये होता। उसने प्रस्ताव किया कि, विद्रोह को द्वितीय सोवियत् कांग्रेस के मिलने से पहिले शुरू नहीं करना चाहिये, इस प्रस्ताव का मतलब था, विद्रोह में देर करना, उसकी तिथि को प्रकट करना और अस्थायी सर्कार को पहिले से सजग कर देना।

बोलशेविक पार्टी के केन्द्रीय समिति ने दोनेत्ज उपत्यका, उराल, हेल्सिकी, क्रोनस्तात्, दक्षिण-पश्चिमी युद्धक्षेत्र और दूसरे स्थानों में विद्रोह को संगठित करने के लिये अपने प्रतिनिधि भेजे। वोरोशिलोफ़्, मोलोतोफ़्, दूजेर्झिन्स्की, ओर्द्जोनिकिद्जे, किरोफ़्, कगानोविच्, कुइबिशेफ़्, फ्रुंजे, यारस्लावस्की और दूसरे साथी प्रान्तों में विद्रोह को संचालन करने के लिये खासतौर से भेजे गये।

साथी ज्दानोफ् शद्रिंस्क (उराल) की सेनाओं में काम करते थे। साथी येज्होफ् ने पश्चिमी युद्धक्षेत्र में वेलोरूसिया में सैनिक विद्रोह की तैयारी की। केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधियों ने प्रांतों के बोल्शेविक संगठनों के प्रमुख सदस्यों को विद्रोह की योजना से परिचित कराया और पेत्रोग्राद् के विद्रोह की सहायता के लिये तय्यार रहना ठीक किया।

पार्टी की केन्द्रीय-समिति के आदेशानुसार पेत्रोग्राद् सोवियत् की एक क्रांतिकारी सैनिक समिति कायम की गई। यह संस्था विद्रोह का कानूनी चालित हेडक्वार्टर हुआ।

इस बीच में क्रांतिविरोधी भी अपनी शक्तियों को शीघ्रता से एकत्रित कर रहे थे। सेना के अफसरों ने अफसर–लीग के नाम से एक अपनी क्रांत–विरोधी संगठन कायम किया। सब जगह क्रांति-विरोधियों ने तूफानी–बटालियन बनाने के लिये हेडकार्टर स्थापित किये। अक्तूबर (पुराने) के अन्त तक क्रान्तिविरोधियों के पास ४३ तूफानी बटालियनें थीं। सन्त जार्ज क्रास रिसाले की खास बटालियनें बनाई गई थीं।

केरेन्स्की सर्कार ने सर्कार के केंद्र को पेत्रोग्राद् से मास्को ले जाने पर विचार किया। इससे स्पष्ट हो गया, कि वह नगर के विद्रोह से पहिले ही सौदा पटालेने के लिये, पेत्रोग्राद् को जर्मनों को समर्पण कर देना चाहती है। पेत्रोग्राद् के मजदूरों और सैनिकों के विरोध ने जनस्थायी सर्कार को पेत्रोग्राद् में रहने पर मजबूर किया।

२६ (१६) अक्तूबर को पार्टी की केन्द्रीय समिति की एक बड़ी बैठक हुई। बैठक में विद्रोह को संचालन करने के लिये एक पार्टी केन्द्र निर्वाचित किया गया, जिसके प्रधान साथी स्तालिन् बनाये गये। यह पार्टी केन्द्र पेत्रोग्राद् सोवियत् की क्रांतिकारी सैनिक कमेटी का संचालक मस्तिष्क था, और सारे विद्रोह का संचालन करता था।

केन्द्रीय-समिति की बैठक में दीवालावादी जिनोवियेफ और कामेनेफ् ने फिर विद्रोह का विरोध किया। बैठक में डाँट-डपट पर उन्होंने खुल्लमखुल्ला विद्रोह के विरुद्ध, पार्टी के विरुद्ध पत्र में लेख लिखा। ३१ (१८) अक्तूबर मेनशेविक पत्र, नोवया जिह्ज्न ने कामेनेफ़ और ज़िनो वियेफ़का एक वक्तव्य छापा, जिसमें घोषित किया गया था, कि बोलशेविक विद्रोह के लिये तय्यारी कर रहे हैं, और वे (कामेनेफ् और ज़िनोवियेफ़) इसे साहसिक जुआ समझते हैं। कामेनेफ़ और ज़िनोवियेफ़ ने, इस प्रकार केन्द्रीय समिति के विद्रोह-सम्बन्धी निर्णय को शत्रुओं के सामने प्रकट कर दिया, उन्होंने बतला दिया कि चंद ही दिनों में होने वाले एक विद्रोह की योजना बन गई है। यह विश्वासघात था। लेनिन् ने इस संबंध में लिखा था, "कामेनेफ़ और ज़िनोवियेफ़ ने सशस्त्र विद्रोह के बारे में पार्टी की केन्द्रीय समिति के निश्चय को सेद्ज्यन्को और केरेन्स्की को बतला दिया।" लेनिन् ने केन्द्रीय-समिति के सामने कामेनेफ़ और ज़िनोवियेफ़ को निकाल देने का प्रश्न रखा।

विश्वघातियों द्वारा सजग कर दिये जाने से क्रान्ति के शत्रुओं ने तुरंत विद्रोह को रोकने तथा क्रांति के संचालक मंडल—बोलशेविक पार्टी को नष्ट करने का उपाय करने लगे। अस्थायी सर्कार ने एक गुप्त बैठक बुलाई, जिसमें बोलशेविकों से मुकाबिला करने के बारे में तै किया गया, १ नवम्बर (१६ अक्तूबर) को अस्थायी सर्कार ने जल्दी से युद्धक्षेत्र से सेना को पेत्रोग्राद् बुलाया। सड़कों पर जबर्दस्त पहरा लग गया। क्रांति विरोधी, मास्को में भारी फौज जमा करने में खास तौर से सफल हुये। अस्थायी सर्कार ने योजना बनाई, द्वितीय सोवियत कांग्रेस के पहिले दिन, बोलशेविक केन्द्रीय समिति के हेडक्वार्टर स्मोल्नी पर हमला करके कब्जा करना होगा, और बोलशेविक संचालन केन्द्र को नष्ट कर देना होगा। इसके लिये सर्कार

ने उन्हीं सेनाओं को पेत्रोग्राद् में बुलाया, जिनके विश्वासपात्रता पर उसका विश्वास था।

किन्तु अस्थायी सरकार के दिन, बल्कि घंटे भी गिने जा चुके थे। सर्वहारा क्रान्ति की विजयी गति को कोई भी रोक नहीं सकता था।

४ नवम्बर (२१ [illegible]) को बोल्शेविकों ने क्रांतिकारी सैनिक कमीटी के कमान्सरों को सभी क्रांतिकारी पल्टनों में भेजा। विद्रोह के आरम्भ से पहिले के बाकी सभी दिनों मिलों, फेक्टरियों और सेनांगों में विद्रोह के लिये जोरदार तय्यारी होती रही। युद्धपोत ऑरोरा और ज्यार्स्वोवोद् को भी ठीक हिदायत दे दी गई थी।

पेत्रोग्राद् सोवियत की एक बैठक में त्रोत्स्की ने शेखी मारते हुये शत्रु को वह तिथि प्रकट कर दी, जिस दिन बोल्शेविकों ने सशस्त्र विद्रोह आरम्भ करने की योजना बनाई थी। जिसमें केरेनस्की की सर्कार विद्रोह में कहीं बाधा न डाल दे, इसलिये पार्टी की केन्द्रीय-समिति ने निश्चित समय से पूर्व ही उसे आरम्भ और पूरा करने के लिये तै किया, और द्वितीय सोवियत् कांग्रेस के आरम्भ से एक दिन पहिले उसकी तिथि नियत की।

केरेनस्की ने ६ नवम्बर (२४ अक्टूबर) के सवेरे बोल्शेविक पार्टी के केन्द्रीय मुखपत्र रबोचुपुत् (श्रमिक पथ) के प्रकाशन को बंद न करने की आज्ञा दे उसके सम्पादकीय गृह एवं छापेखाने को सशस्त्रकार भेजकर हमला शुरू कर दिया। किन्तु ११ बजे साथी स्तालिन् के आदेशानुसार लाल गारद और क्रान्तिकारी सिपाहियों ने सशस्त्र मोटरों को पीछे हटा दिया, और इसी के लिये छापाखाने तथा रबोचुपुत् के सम्पादकीय गृह पर फिर से बढ़ाकर गारद बैठा दिये। ११ बजे के करीब रबोचुपुत् अस्थायी सर्कार को उलट देने की सुर्खी के साथ छपकर निकला। साथ ही विद्रोह के पार्टी केन्द्र के आदेशानुसार क्रांतिकारी सैनिकों तथा लाल गारदों के जत्थे स्मोलिनी की ओर दौड़ पड़े।

विद्रोह आरम्भ हो गया।

६ नवम्बर (२४ अक्तूबर) की रात को लेनिन् ने स्मोल्नी में आकर, विद्रोह का संचालन अपने हाथ में लिया। उस सारी रात सेना की क्रान्तिकारी टुकड़ियाँ तथा लाल गारद् के जत्थे स्मोल्नी में आते रहे। बोल्शेविकों ने उन्हें शरद् प्रासाद्–जहाँ अस्थायी सर्कार ने अपने को मोर्चा बंद कर रखा था—को घेरने के लिये राजधानी के केन्द्र में भिजवाया।

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) को लालगारदों और क्रांतिकारी पल्टनों ने रेल्वे स्टेशनों, डाकखाने, तारघर, मंत्रिकार्यालयों और सरकारी बेंक पर कब्जा किया।

प्राक्–पार्लामेंट तोड़ दी गई।

स्मोल्नी—पेत्रोग्राद् सोवियत् और बोल्शेविक केन्द्रीय समिति का हेडक्वाटर, क्रान्ति का हेडक्वाटर बन गया, यहीं से लड़ने की आज्ञायें निकलने लगीं।

पेत्रोग्राद् के मजदूरों ने उन दिनों दिखला दिया, कि बोल्शेविक पार्टी की देख रेख में उन्होंने कितनी सुन्दर शिक्षा पाई है। बोल्शेविकों के काम द्वारा विद्रोह के लिये तय्यार की गई सेना की क्रान्तिकारी टुकड़ियों ने युद्ध के आदेशों का बारीकी के साथ पूरा किया, और लाल गारदों के साथ साथ लड़ीं। नौसेना सेना से पीछे नहीं रही। क्रोन्स्तात् बोल्शेविक पार्टी का गढ़ था, और बहुत पहिले ही से अस्थायी सर्कार के अधिकार को मानने से इन्कार कर दिया था। क्रूजर ऑरोरा ने तोपों की तालीम शरद्प्रसाद पर दी, और ७ नवंबर (२५ अक्टूबर) को उनकी गड़गड़ाहट ने एक नये युग, महान् समाजवादी क्रान्तिका युग उद्घोषित किया।

७ नवम्बर (२५ अक्टूबर) को बोल्शेविकों ने यह घोषित करते हुये "रूस के नागरिकों" के नाम एक घोषणा निकाली कि अस्थायी सर्कार बर्खास्त की गई, और राज्यशक्ति सोवियतों के हाथ चली गई।

अस्थायी सर्कार ने केडटों और तूफानी बटालियनों की संरक्षकता में शरद्-प्रासाद में शरण ली। ७ नवंबर की रात को क्रान्तिकारी कमकरों, सैनिकों और नौसैनिकों ने धावा बोलकर शरद्प्रसाद पर कब्जा कर लिया, अस्थायी सर्कार पकड़ ली गई।

पेत्रोग्राद् में सशस्त्र विद्रोह विजयी हुआ।

७ नवंबर (२५ अक्टूबर) के १०-४५ बजे शाम को स्मोल्नी में द्वितीय अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस का आरम्भ हुआ, उस समय तक पेत्रोग्राद् में विद्रोह राजधानी में विजय के पूर्ण उत्साह से युक्त हो चुका था, और राजधानी में शक्ति, वास्तविक तौर से पेत्रोग्राद् की सोवियत् के हाथ में चली गयी थी।

बोल्शेविकों का कांग्रेस में बहुत जबर्दस्त बहुमत रहा। मेन्शेविक्, "बन्डी" और दक्षिण समाजवादी क्रान्तिकारी सारी आशाओं पर पानी फिरा देख यह कहते हुये कांग्रेस छोड़कर चले गये कि हम इसकी कार्रवाई में कोई भाग लेने से इन्कार करते हैं। एक वक्तव्य में जोकि सोवियत् कांग्रेस में पढ़ा गया—इन्होंने अक्टूबर क्रान्ति को "सैनिक षड्यंत्र" बतलाया। कांग्रेस ने मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों की निकाली, और उनके निकल जाने के लिये अफसोस करने की तो बात ही क्या उसका स्वागत किया, जैसा कि उसने घोषित किया देशद्रोहियों के हट जाने से कांग्रेस वस्तुतः मजदूर सैनिक डिपुटियों की क्रान्तिकारी कांग्रेस हो गई।

कांग्रेस ने घोषित किया कि सभी शक्ति सोवियतों के हाथ में चली गई।

"मजदूरों, सैनिकों और किसानों की भारी संख्या की इच्छा से मदद हो, मजदूरों और सेना के विजयी विद्रोह—जोकि पेत्रोग्राद् में घटित हुआ—की मदद से, कांग्रेस शक्ति को अपने हाथ में लेती है"—'द्वितीय सोवियत् कांग्रेस की घोषणा से'

८ नवंबर (२६ अक्टूबर) १९१७ को द्वितीय सोवियत् कांग्रेस ने शान्ति विषयक घोषणा निकाली। कांग्रेस ने लड़ाकू देशों को कहा कि संन्धि के लिये बातचीत करने का अवसर देने के लिये कम से कम तीन मास का तुरंत युद्ध का स्थगित होना मान लिया जावे। सभी लड़ाकू देशों की सर्कारों और जनता के संबोधन करते हुये, साथ ही कांग्रेस ने मानव जाति के तीन अत्यन्त अग्रगामी जातियों, और युद्ध में भाग लेने वाले सब से बड़े राज्य अर्थात् बृटेन, फ्रांस, जर्मनी के वर्ग चेतनावान् कमकरों से भी अपील की। उसने इन कमकरों से कहा, कि वे "शांति के उद्देश्य को सफलता-पूर्वक पूरा करते, और साथ ही सभी तरह की दासता और सभी तरह के शोषण से जांगर चलाने वाले तथा शोषित जनसमुदाय की मुक्ति के लिये" मदद देने को कहा।

उसी रात द्वितीय सोवियत् कांग्रेस ने भूमि घोषणा स्वीकार की, इसमें घोषित किया गया था, कि "भूमि पर जमींदारों का स्वामित्व बिना क्षतिपूर्ति के अब से उठा दी गई।" यह कृषि कानून किसानों के एक मैंडेट (नकाज) पर अधारित था, जिसे कि भिन्न भिन्न स्थानों के किसानों के २४२ मैंडेटों से तय्यार किया गया था। इस मैंडेट के अनुसार भूमि का स्वामित्व सदा के लिये उठा, उसकी जगह भूमि पर सार्वजनिक या सर्कारी स्वामित्व मान लेना था। जमींदारों, जार के परिवार और मठों की भूमि को सभी जाँगर चलाने वालों को उसके स्वतंत्रता पूर्वक उपयोग के लिये दे देना था।

इस घोषणा द्वारा किसानों को १५ करोड़ देसियातिन् (४० करोड़ एकड़ से अधिक) भूमि —जो पहिले जमींदारों, जारके परिवार और मठों, धार्मिक संस्थाओं और बूर्ज्वाजी के अधिकार में थी—अक्टूबर की समाजवादी क्रान्ति की ओर से किसानों को मिली।

इस पर सालाना ५० करोड़ स्वर्ण रूबल तक पहुँच गई जमींदार को दी जाने वाली मालगुजारी से भी किसान मुक्त हो गये।

सभी खनिज सम्पत्ति (तेल, कोयला, लोहा आदि) जंगल और जल जनता की सम्पत्ति हो गये।

अन्ततः सोवियतों की द्वितीय अखिल रूसी कांग्रेस ने प्रथम सोवियत सर्कार– जन कमीसर कौंसिल बनाई, जिसके सभी सदस्य बोल्शेविक थे। लेलिन प्रथम जन-कमीसर कौंसिल के सभापति चुने गये।

इसके साथ ऐतिहासिक द्वितीय सोवियत कांग्रेस की कार्रवाई समाप्त हुई।

कांग्रेस के प्रतिनिधि पेत्रोग्राद् में सोवियत् के विजय की खबर को फैलाने और सारे देश में सोवियत् के शासन के विस्तार करने के लिये चले गये।

सभी जगह शासन एकदम सोवियतों के हाथ में नहीं आया। जब कि पेत्रोग्राद् में सोवियत् सर्कार अस्तित्व में आ चुकी थी, मास्को में कई दिन तक आगे तक सड़कों पर भयंकर और कठोर युद्ध होता रहा। मास्को सोवियत् के हाथ में शासनशक्ति को जाने से रोकने के लिये सफेद गारदों और कैडटों के साथ मिलकर मेन्शेविक और समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टियों ने कमकरों और सैनिकों के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध आरम्भ किया। मास्को में बलवाइयों को हराने और सोवियत् शक्ति को स्थापित करने में कई दिन लगे।

खुद पेत्रोग्राद् तथा उसके कितने ही भागों में सोवियत् शक्ति के उलटने के लिये क्रांति की विजय के पहिले ही दिन क्रांतिविरोधी प्रयत्न किये गये। २३ (१०) नवम्बर १६१७ को कैरेन्स्की—जो कि विद्रोह के समय पेत्रोग्राद् से उत्तरी युद्धक्षेत्र को भाग गया था—ने कसाकों की कितनी ही पल्टनों को जमाकर उन्हें जेनरल क्रास्नोफ़् की नायकता में पेत्रोग्राद् भेजा। २४ (११) नवम्बर १६१७ को अपने को "पितृ भूमि और क्रांति भक्ति कमीटी" कहनेवाले एक क्रांतिविरोधी संगठन—जिसके प्रधान थे समाजवादी क्रांतिकारी–ने

पेत्रोग्राद् में केडटों का बलवा करवाया। किंतु उसी शाम तक नौसैनिकों और लालगारदों ने बिना बहुत कठिनाई से बलवे को दबा दिया, और २६ (१३) नवम्बर को जेनरल क्रास्नोफ़् को पुल्कोवो पहाड़ के पास बुरी तौर से हार खानी पड़ी। लेनिन् ने सोवियत विरोधी बलवे को दबाने का संचालन स्वयं किया, जैसा कि उन्होंने अक्तूबर विद्रोह को स्वयं संचालित किया था। उनकी अचल दृढ़ता और विजय में गम्भीर विश्वास, जनता को आंतरिक शक्ति और एकता प्रदान करता था। शत्रु को पीस दिया गया। क्रास्नोफ़् पकड़ा गया, और उसने सोवियत् शक्ति के विरुद्ध संघर्ष को खतम कर देने की "प्रतिज्ञा" की। इस "प्रतिज्ञा" पर उसे छोड़ दिया गया। लेकिन जैसा कि पीछे देखा गया, जेनरल ने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी। केरेन्स्की स्त्री का भेस बदलकर "एक अज्ञात दिशा की ओर लुप्त हो गया।"

सेना के प्रधान हेडक्वार्टर मोगिलेफ् में प्रधान सेनापति दुखोनिन् ने भी बलवा करने का प्रयत्न किया। जब सोवियत सर्कार ने उसे जर्मन सेना नायक के साथ युद्धस्थगित करने के लिये तुरंत बातचीत करने का आदेश दिया तो उसने उसे मानने से इन्कार कर दिया। इस पर सोवियत सर्कार की आज्ञा से दुखोनिन् बर्खास्त कर दिया गया। क्रांतिविरोधी प्रधान हेडक्वार्टर तोड़ दिया गया, दुखोनिन् खुद अपने खिलाफ उठ खड़े हुये सैनिकों द्वारा मारा गया।

पार्टी के भीतर के कुछ बदनाम अवसरवादियों—कामेनेफ्, जिनोवियेफ, रुइकोफ्, शल्यप्निकोफ् और दूसरे—ने भी सोवियत् शक्ति के विरुद्ध झपट्टा मारा। उन्होंने "सब समाजवादी सर्कार" कायम करने पर जोर दिया, जिसमें मेन्शेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों जो कि अक्टूबर क्रांति द्वारा अभी अभी हटाये गये थे—को भी शामिल करने के लिये कहा गया। १८, १५ नवंबर १९१७ को बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने इन क्रांति विरो-

धियों के साथ समझौते की बात को अस्वीकार करने का प्रस्ताव पास किया, और कामेनेफ् और जिनोवियेफ् को क्रांति का हड़ताल तोड़कर घोषित किया। १० (२३) नवंबर को, कामेनेफ्, जिनोवियेफ् सहकोफ् और मिल्युतिन् ने पार्टी की नीति से असहमत हो केन्द्रीय समिति से अपने इस्तीफे की घोषणा की। उसी दिन, ३० नवंबर को नोगिन् ने अपने नाम तथा सहकोफ्, व मिल्युतिन्, त्योदोरेविच् अशत्यप्निकोफ, दूर्याज्ञानोफ, युरेनेफ् और लारिन् जनकमीसर कौंसिल के सदस्यों के नाम से पार्टी की केन्द्रीय समिति की नीति से अपना मतभेद प्रकट किया, और जन कमीसर कौंसिल से इस्तीफा घोषित किया। इन मुट्ठीभर कायरों के भगने से अक्टूबर क्रान्ति के शत्रुओं को बड़ी खुशी हुई। बूर्ज्वाजी और उनके पिछलग्गुओं ने हृदयतापूर्ण खुशी के साथ बोल्शेविज्म के पतन और जल्दी ही बोल्शेविक पार्टी के टुकड़े टुकड़े होने की भविष्य द्वाणित की, किन्तु एक क्षण के लिये भी पार्टी ने इन मुट्ठीभर भगोड़ों के कारण पस्त हिम्मत न हुई। पार्टी की केन्द्रीय समिति ने उन्हें घृणा पूर्वक क्रांति के भगोड़े और बूर्ज्वासी गोइंदे पुकारा और अपने काम में लग गई।

"वाम" समाजवादी क्रांतिकारियों ने, किसान जनता—जो कि साफ तौर से बोल्शेविकों के साथ सहानुभूति रखती थी—पर अपने प्रभाव को कायम रखने की उत्सुकता से बोल्शेविकों से न झगड़ने का निश्चय किया और तत्काल उनके साथ संयुक्त मोर्चा कायम रखा। किसान सोवियत् कांग्रेस ने नवंबर १९१७ के अधिवेशन में अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के सभी लाभों का माना, और सोवियत सर्कार की घोषणाओं का समर्थन किया, "वाम" समाजवादी क्रांति कारियों के साथ एक समझौता किया गया, और उनके कितने ही सदस्यों (कोलेगनेफ्, स्पिरिदोनोवा, प्रोश्यान् और स्ताहन्वेर्ग) को जन-कमीसर कौंसिल में जागीरें दी गईं। तो भी यह समझौता

ब्रेस्त-लितोव्स्क की संधि तथा गरीब किसान, कमेटियों के बनाने के समय ही तक काम करता। इस समय "वाम" समाजवादी क्रान्तिकारियों और किसानों के बीच गहरा मतभेद हो गया, और उनके कुलक-हितोंके पोषक "वाम" समाजवादी क्रान्तिकारियों ने वोल्शेविकोंसे विद्रोह किया और सोवियत् सर्कार ने उन्हें हरा दिया।

अक्टूबर (पुराना) १६१७ से फर्वरी (पुराना) १६१८ के बीच सोवियत् क्रान्ति सारे देश के कोने कोने में इतनी शीघ्रता से फैली, कि लेनिन् ने इसे सोवियत्—शक्ति की "विजय यात्रा" रटकर याद किया।

महान् अक्तूबर क्रान्ति विजयी हुई।

रूसी समाजवादी क्रान्ति के अपेक्षाकृत आसान विजय के कई कारण थे, जिनमें निम्न, प्रधान कारण उल्लेखनीय हैं।

१) अक्टूबर-क्रान्तिका मुकाविला था रूसके वूर्ज्वाजी जैसे अपेक्षाकृत निर्बल, बुरी तौर से संगठित और राजनीतिक अनुभव शून्य शत्रु से वे आर्थिक तौर से और भी निर्बल थे, तथा सर्कारी ठीकेदारी पर पूर्णतया निर्भर करते थे। रूसी वूर्ज्वाजी के पास स्थिति से निकलने का रास्ता पाने के लिये काफी राजनीतिक आत्मावलम्बन और आत्म निर्णय नहीं था। उसके पास उदाहरणार्थ न फ्रेंच वूर्ज्वासी जैसा राजनीतिक संठगन और न बड़े पैमाने पर राजनीतिक धोखेवाजी के अनुभव थे। और न उन्हें अंग्रेजों की सी विस्तार पूर्वक चिन्तित चालाकी के समझौते की शिक्षा मिली थी। अभी बिल्कुल हाल में इन्होंने जार के साथ समझौता करना चाहा था; किन्तु अब जब कि जार फर्वरी-क्रान्ति द्वारा उलट दिया गया, और वूर्ज्वाजी स्वयं शासन शक्ति के मालिक हुये, तो सर्वच्युत जार की नीति को, अपनी सभी विशेषताओं के साथ, जारी रखने के सिवाय कुछ भी बेहतर सोचने में वे असमर्थ थे। जार की भांति वे भी "विजय-पूर्ण-सम्पत्ति के साथ युद्ध" के मानने वाले थे, यद्यपि युद्ध देश की शक्ति

से बाहर की चीज थी और उसने जनता और सेना को अत्यन्त क्षीर्ण अवस्था में पहुँचा दिया था। जार की भाँति, ये भी बड़ी जमींदारियों को मुख्यरूप में सुरक्षित रखना चाहते थे, यद्यपि किसान-जनता भूमि की कमी तथा जमींदार के जूये के बोझ से नष्ट हो रही थी। अपनी मजदूर नीति में, रूसी बूर्ज्वासी मजदूर वर्ग के प्रति अपनी चाल में जार का भी कान काटते थे क्योंकि ये सिर्फ फेक्टरी मालिकों के जूये को सुरक्षित और सुदृढ़ करने के लिये ही प्रयत्नशील नहीं थे, बल्कि उसे सोलहों आने तालाबन्दी द्वारा उसे असह्य बना रहे थे।

इसमें आश्चर्य करने की जरूरत नहीं, यदि जनता ने जारकी नीति और बूर्ज्वाजी की नीति में कोई मौलिक भेद नहीं देखा, और इसी लिये उन्होंने जारके प्रति अपनी घृणा को बूर्ज्वासी की अस्थायी सरकार की ओर बदल दिया।

जब तक समाजवादी क्रान्तिकारी और मेन्शेविक पार्टियां जनता पर थोड़ा बहुत प्रभाव रखती थीं, तब तक बूर्ज्वासी उन्हें ओट बनाकर अपनी शक्ति को सुरक्षित रख सकते थे। किन्तु जब मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने अपने को साम्राज्यवादी बूर्ज्वाजी का एजन्ट जाहिर कर दिया, और इस प्रकार जनता पर अपने प्रभाव को खो दिया, तो बूर्ज्वासी और उसकी अस्थायी सरकार बिना यार-व मददगार के रह गई।

(२) अक्तूबर-क्रान्ति का नेतृत्व कर रहा था रूसी मजदूर वर्ग जैसा एक क्रांतिकारी-वर्ग, कैसा वर्ग ? जो कि युद्ध में पक्का हो चुका था, जो थोड़ेही समय के भीतर दो क्रान्तियों से गुजर चुका था, और जिसे तृतीय क्रान्ति के आरम्भ होते वक्त जनता, शान्ति, भूमि, स्वतंत्रता के संघर्ष का नेता स्वीकार कर चुकी थी। यदि क्रान्ति के पास रूस के मजदूर वर्ग जैसा जनता का विश्वासपात्र नेता न

होता, तो मजदूरों और किसानों के बीच मैत्री न हो पाती, और बिना ऐसी मैत्री के अक्तूबर-क्रान्ति की विजय असम्भव होती।

(३) रूस के मजदूर-वर्ग को क्रान्ति में गरीब किसानों जैसा उपयुक्त मित्र मिला, जो कि किसान जनता का सबसे बड़ा भाग था। क्रान्ति के आठ महीने का अनुभव—जिसे "साधारण" विकास की कई दशाब्दियों के बराबर माना जा सकता है—जहाँ तक जाँगर चलाने वाली किसान जनता का सम्बन्ध है, व्यर्थ नहीं था। इस समय उन्हें रूस की सभी पार्टियों की परीक्षा करने का मौका मिला था, और उन्हें यकीन हो गया था, कि नहीं वैधानिक-जनतांत्रिक ही और न समाजवादी-क्रान्तिकारी तथा मेन्शेविक ही, गंभीरता के साथ जमींदारों से लड़ेंगे या अपने को किसानों के हित के लिये बलिदान करेंगे; कि रूस में सिर्फ एकही ऐसी पार्टी—बोल्शेविक पार्टी है—जिसका जमींदारों से कोई सम्बन्ध नहीं है, और जो किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये उन्हें पीस डालने के लिये तय्यार है। मजदूरों और गरीब किसानों की मैत्री के लिये इसने ठोस आधार का काम किया। मजदूर-वर्ग और गरीब किसानों के बीच की इस मैत्री की मौजूदगी ने मध्यवित्ति किसानों—जो कि देर से डाँवाडोल स्थिति में थे और सिर्फ अक्तूबर-विद्रोह के आरम्भ ही में पूरे दिल से क्रान्ति की ओर झुके थे, तथा गरीब किसानों की ताकत के साथ मिल गये—के रुख का भी फैसला कर दिया।

यह कहने की जरूरत नहीं कि इस मैत्री के बिना अक्तूबर क्रान्ति विजयी नहीं हो सकती थी।

(४) मजदूर वर्ग का नेतृत्व बोल्शेविक-पार्टी जैसी राजनीतिक युद्धों में अभ्यस्त और परीक्षित पार्टी के हाथ में था। बोल्शेविक-पार्टी जैसी फैसलाकुन हमले में जनता का नेतृत्व करने में काफी हिम्मत वाली, और लक्ष्य तक पहुँचने के अपने पथ में सभी अलक्ष्य चट्टानों से बँचा कर खेने में पर्याप्त सावधान पार्टी ही, क्रांति के लिये

साधार- जनतांत्रिक-आन्दोलन, जमींदारियों पर कब्जा करने के लिये किसान जनतांत्रिक आन्दोलन, जातीय स्वतन्त्रता और जातीय समानता के लिये उत्पीड़ित जातियों के आन्दोलन, और बूर्ज्वाजी को उलटने और प्रोलेतरी अधिनायकत्व की स्थापना के लिये समाजवादी आन्दोलन जैसे भिन्न भिन्न प्रकार के क्रान्तिकारी आन्दोलनों को इतनी होशियारी के साथ एक सम्मिलित क्रान्तिकारी प्रवाह में मिला सके।

निस्सन्देह, इन भिन्न भिन्न प्रकार की क्रान्तिकारी धाराओं को एक सम्मिलित शक्तिशाली क्रान्तिकारी प्रवाह में मिलने ने रूस में पूँजीवाद की किस्मत का फैसला कर दिया।

(५) अक्तूबर-क्रान्ति ऐसे समय आरम्भ हुई जब कि साम्राज्यवादी युद्ध अब भी अपने यौवन पर था, जब कि प्रधान बूर्ज्वा राष्ट्र दो परस्पर शत्रु पक्षों में बँटे हुये थे, और जब पारस्परि युद्ध में संलग्न और एक दूसरे की शक्ति को क्षीण करते हुये, वे "रूसी मामले" में पूरी ताकत के साथ दखल देने और अक्तूबर-क्रान्ति का सक्रिया विरोध करने में असमर्थ थे।

निस्सन्देह, इसने अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति के विजय में बहुत आसानी पैदा की।

७ सोवियत्-शक्ति को दृढ़ करने के लिये बोल्शेविक पार्टी का संघर्ष। ब्रेस्तलितोवस्क् की संधि। सप्तम पार्टी कांग्रेस।

सोवियत्-शक्ति को दृढ़ करने के लिये पुरानी बूर्ज्वा राज्य-मशीन को तोड़ना और नष्ट करना, तथा एक नई सोवियत् राज्य मशीन को उसकी जगह कायम करना था। और रियासतों जातियों के उत्पीड़न के शासन में समाज के विभाग की मौजूदगी को खतम करना, चर्च (धार्मिक संस्था) के विशेषाधिकारों का उठाना, कानूनी और गैरक़ानूनी सभी तरह के क्रान्ति विरोधी प्रेसों, और संगठनों को बन्द कर देना और बूर्ज्वा विधान सभा को बर्खास्त कर देना जरूरी

था। भूमि के राष्ट्रीकरण के बाद सभी बड़े पैमाने के उद्योगों का भी राष्ट्रीकरण करना था। और. अन्ततः युद्ध की अवस्था को खतम करना था क्योंकि युद्ध सबसे अधिक सोवियत् शक्ति को दृढ़ करने में बाधक था।

पर सभी बातें १९१७ के अन्त से १९१८ के मध्य तक इतने थोड़े समय में करनी थीं।

समाजवादी-क्रान्तिकारियों और मेन्शेविको द्वारा रचित पुराने मंत्रि मंडल के कर्मचारियों की बाधायें निर्मूल करके हटा दी गईं। मन्त्रि मंडल हटा दिया गया और उसकी जगह सोवियत शासन संघ और तदनुकूल जन-कमीसरी कायम की गई। देश के उद्योग के प्रबन्ध के लिये राष्ट्रीय अर्थ-महा-कौंसिल कायम हुई। क्रान्तिविरोध और कार्य संकट से मुकाबिला करने के लिये अखिल रूसी असाधारण कमीशन (वेचेका) बनाया गया, जिसका अध्यक्ष साथी फ० दर्जेजहन्स्की था। लाल सेना और नौ सेना कायम करने की घोषणा हुई। विधान-सभा—जिसका, बहुत सा चुनाव अक्टूबर क्रान्ति के पहिले ही हो चुका, और जिसने कि द्वितीय सोवियत कांग्रेस की शांति, भूमि और शासन शक्ति का सोवियतों के हाथ देने की घोषणाओं को मानने में इन्कार कर दिया—को तोड़ दिया गया।

सामन्त शाही की मौजूदगी, रियासती प्रथा सामाजिक जीवन के सभी भागों में असमानता को खतम कर देने के अभिप्राय से घोषणायें निकाली गईं, जिनसे रियासतें उठा दी गईं, जाति और धर्म पर अवलंबित रुकावटों को हटा दिया गया, राज्य से चर्च को और चर्च से स्कूलों को अलग कर दिया गया। स्त्रियों की समानता और रूसकी सभी जातियों की समानता को कायम किया गया।

"रूस की जनता के अधिकारों की घोषणा" के नाम से प्रसिद्ध सोवियत्-सर्कार की विशेष प्रशस्ति ने माना कि कानून के तौर पर निर्बाध विकास और पूर्ण स्वतन्त्रता के रूसी जनता का अधिकार है।

बूर्ज्वाजी की आर्थिक शक्ति को नष्ट करने तथा एक नई, सोवियत् राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था कायम करने के लिये, और प्रथमतः, एक नये सोवियत् उद्योग के निर्माण के लिये, बैंक, रेलवे, विदेशी व्यापार व्यापारिक बेड़ा, और उद्योग की सभी शाखाओं में सभी बड़े बड़े कारखानों—तेल, धातु, कोयला, रसायन, यंत्रनिर्माण, कपड़ा, चीनी, आदि—का राष्ट्रीकरण कर दिया गया।

अपने देश को विदेशी पूँजीपतियों से, वैदेशिक कोश से स्वतन्त्र करने और उनके शोषण से बँचाने के लिये, रूसी जार और अस्थायी सर्कार द्वारा लिये गये विदेशी ऋणों को अस्वीकार कर दिया गया। हमारे देश के लोगों ने उन ऋणों को देने से इन्कार कर दिया, जो कि देश-दखल करने के अभिप्राय से होने वाले युद्ध को जारी रखने के लिये किये गये थे, और जिन्होंने हमारे देश को विदेशी पूँजीपतियों के हाथ में बंधक रख दिया था।

ये और इस तरह के दूसरे तरीकों ने बूर्ज्वाजी, जमीदारों, प्रतिक्रियागामी कर्मचारियों और क्रान्तिविरोधी पार्टियों की बिल्कुल जड़ को कमजोर कर दिया, और देश के भीतर सोवियत् सर्कार की स्थिति को काफी मजबूत कर दिया।

किन्तु सोवियत सर्कार की स्थिति तब तक पूर्णतया सुरक्षित नहीं मानी जा सकती थी, जब तक रूस जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ युद्ध की अवस्था में था। सोवियत् शक्ति को अन्ततः में दृढ़ करने के लिये युद्ध को बन्द कर देना जरूरी था। इसीलिये अक्तूबर क्रान्ति के विजय के समय ही से पार्टी ने शांति के लिये लड़ाई प्रारम्भ कर दी थी।

सोवियत् सर्कार ने "सभी लड़ने वाले लोगों और उनकी सर्कारों को एक न्याय, जनतांत्रिक शांति के लिये तुरन्त बातचीत आरम्भ करने को" कहा। किन्तु मित्र शक्तियों—बृटेन और फ्रांस—ने सोवियत-सर्कार के प्रस्ताव को मानने से इन्कार कर दिया। इस इन्कार

को देख सोवियत् सर्कार ने, सोवियतां को मंशा को पूरा करने के लिये, जर्मनी और आस्ट्रिया से सुलह की बात आरम्भ करना तै किया।

१६ (३) दिसम्बर को ब्रेस्त-लितोव्स्क में बात चीत शुरू हुई। १८ दिसम्बर को क्षणिक संधि पर हस्ताक्षर हुआ।

समझौते की बात उस वक्त शुरू हुई, जब कि देश आर्थिक ध्वंस की अवस्था में था, जब कि सर्वत्र युद्ध-क्रांति थी, जब कि हमारी फौजें खाइयों को छोड़ रही थीं और जब मैदानी तैयारी विनष्ट हो रही थी। बातचीत के दौरान में यह साफ मालूम हो गया कि जर्मन साम्राज्यवादी पुराने जारशाही साम्राज्य की भूमि के बहुत बड़े अंश को ले लेना चाहते हैं, और पोलैंड, उक्रइन् तथा बाल्तिक के प्रदेशों को जर्मनी के आधीन बनाना चाहते हैं।

इन परिस्थितियों में युद्ध का जारी रखने का मतलब था, नवजात सोवियत्-प्रजातन्त्र के अस्तित्व को भी खतरे में डालना। मजदूरों और किसानों को सन्धि की सख्त शर्तों को मानने, अपने समय के अत्यन्त भयंकर लुटेरे—जर्मन साम्राज्यवाद—के सामने से इसलिये हटने की जरूरत का सामना करना था, जिसमें कि उन्हें सुस्ताने का अवसर मिले और वे सोवियत् शक्ति को मजबूत कर सकें, एक नई सेना, लाल सेना – जो शत्रुके आक्रमण से देश की रक्षा करने में समर्थ हो – का निर्माण कर सकें।

सभी क्रान्तिविरोधियों—मेन्शेविकों तथा समाजवादी-क्रान्तिकारियों से लेकर अत्यन्त बदनाम सफेदगारदों तक—ने सन्धि करने के खिलाफ जबर्दस्त वावेला मचाया। उनकी चाल साफ थी। वे सन्धिवार्ता को तोड़ देना चाहते थे तथा जर्मनों को आक्रमण के लिये उत्तेजित करना चाहते थे और इस प्रकार अभी निर्बल सोवियत् शक्तिको खतरे में डालना, तथा। अभी मिले किसानों और मजदूरों के लाभों को उनके हाथ से छिनवाना चाहते थे।

इस भयंकर योजना में उनके सहयोगी थे त्रोत्स्की और उसका गोयन्दा बुखारिन। बुखारिन रादेफ् और प्याताकोफ़ के साथ एक ग्रूपका नेता था। यह ग्रूप, पार्टी के विरुद्ध थी, और अपने को "वाम साम्यवादी" के नाम से छिपाये हुई थी। त्रोतस्की और "वाम साम्यवादी" ग्रूप ने लड़ाई जारी रखने के लिये पार्टी के भीतर लेनिन के विरुद्ध जबदस्त झगड़ा शुरू किया। ये लोग साफ, जर्मन साम्राज्य-वादियों, और देश के भीतर के क्रान्तिविरोधियों के हाथ में खेल रहे थे, क्योंकि वे ऐसा करके तरुण सोवियत-प्रजातंत्र—जिसके पास कोई सेना न थी—को जर्मन साम्राज्यवाद के प्रहार का लक्ष्य बना रहे थे।

यह वस्तुतः गर्म शब्दजाल में होशियारी से छिपाये खतरे में झोंकने की नीति थी।

२६ (१०) फर्वरी १६१८ को, ब्रेस्त-लितोव्स्क में संधि वार्ता टूट गई। यद्यपि लेनिन और स्तालिन ने पार्टी की केन्द्रीय समिति के नाम से संधि पर हस्ताक्षर करने के लिये जोर दिया था, किन्तु त्रोत्स्की—जो कि ब्रेस्त-लितोव्स्क में सोवियत्-प्रतिनिधियों का मुखिया था—ने विश्वासघाती बन बोल्शेविक पार्टी की साफ हिदायतों को अस्वीकार कर दिया। उसने घोषित किया कि सोवियत प्रजातंत्र जर्मनी की दी हुई शर्तों पर संधि करने से इन्कार करती है। साथ ही उसने जर्मनों को यह भी सूचित कर दिया, कि सोवियत् प्रजातंत्र लड़ाई नहीं करेगी, और सेना को हटाने के काम को जारी रखेगी।

यह भीषण कृत्य था। जर्मन साम्राज्यवादी इस देश द्रोही से सोवियत् देश के हितों के खिलाफ और अधिक क्या चाहते?

जर्मन सर्कार ने क्षणिक-संधि तोड़ दी, और आक्रमण शुरू कर दिया। हमारी पुरानी सेना का बचाखुचा भाग, जर्मन सेना के जबर्दस्त प्रहार के सामने टूटकर बिखर गया। जर्मन तेजी के साथ चढ़े, और भारी भूभाग पर कब्जा करके पेत्रोग्राद पर पहुँचने वाले थे। जर्मन साम्राज्यवाद ने सोवियत्-शक्ति को उलटने और हमारे

देश को उलटने और हमारे देश को अपने आधीन बनाने के ख्याल से सोवियत् भूमि पर चढ़ाई कर दी। पुरानी जारशाही सेना जर्मन साम्राज्यवाद के सशस्त्र सैनिकों के सामने टिक नहीं सकती थी, और उनके प्रहार के सामने लगातार हटती गई।

लेकिन जर्मन साम्राज्यवादियों का सशस्त्र हो भीतर कूदना, देश में एक जबर्दस्त क्रांतिकारी उत्साह की सूचना थी। पार्टी और सोवियत् सरकार ने आह्वान किया—"समाजवादी पितृभूमि खतरे में!" इसके उत्तर में मजदूर वर्ग ने बड़े जोर के साथ लाल सेना की रेजिमेंटे बनानी शुरू की। नई सेना की क्रांतिकारी जनता की सेना के तरुण जत्थों ने बड़ी बहादुरी के साथ शिरसे पैर तक हथियार से लेस जर्मन लुटेरों का मुकाबिला किया। नर्वा और पूकोफ में जर्मन आक्रमण-कारियों को जबर्दस्त मुकाबिले के सामने हटना पड़ा। उनका पेत्रोग्राद की ओर बढ़ना रोक दिया गया। २३ फर्वरी जिस दिन जर्मन साम्राज्यवाद की फौजों को हटना पड़ा था—को लाल सेना का जन्म दिन समझा जाता है।

२ मार्च (१८ फरवरी) १६१८ को पार्टी की केन्द्रीय समिति ने लेनिन के इस प्रस्ताव को स्वीकार किया कि तुरन्त संधि करने के लिये जर्मन सरकार के पास एक तार भेजा जावे। लेकिन और लाभदायक शर्तें मनवाने के लिये जर्मनों ने आगे बढ़ना जारी रखा, और २२ फर्वरी (६ मार्च) को जर्मन सरकार ने संधि पर हस्ताक्षर करने की इच्छा प्रकट की। अब की शर्तें पहिले से भी सख्त थीं।

लेनिन, स्तालिन और स्वर्दलोफ् को केन्द्रीय समिति के सामने त्रोत्स्की, बुखारिन, और दूसरे त्रोत्स्कियाइयों से सख्त मुकाबिला करना पड़ा, तब संधि के पक्ष में वे निर्णय ले पाये। लेनिन ने कहा, बुखारिन और त्रोत्स्कीने "वस्तुतः जर्मन साम्राज्यवादियों को मदद पहुँचाई और जर्मनी में क्रान्ति के विकास और वृद्धि में बाधा डाली।"

(लेनिन ग्रन्थावली, रूसी जिल्द २२, पृ० ३०७)

७ मार्च (२३ फर्वरी) को केन्द्रीय-समिति ने जर्मन सेना नायक की शर्तों को कबूल करना, तथा संधि पर हस्ताक्षर करना स्वीकार किया। त्रोत्स्की और बुखारिन के विश्वासघात ने सोवियत् प्रजातंत्र को बहुत हानि पहुँचाई। पोलैंड ही नहीं लत्विया और एस्तोनिया भी जर्मन हाथों में चले गये, उक्रइन् को सोवियत् प्रजातंत्र से काटकर जर्मन राज्य का करद प्रदेश बना दिया गया। सोवियत्-प्रजा तंत्र ने जर्मनों को एक भारी रकम हर्जानेमें देना स्वीकार किया।

इस बीच, "वाम साम्यवादियों" ने लेनिन के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखा, और विश्वासघात के दलदल में गहरे से गहरे डूबते गये।

पार्टी के मास्को प्रादेशिक ब्युरो—जिसपर थोड़े दिनों से "वाम साम्यवादियों" (बुखारिन्, ओसिन्स्की, याकोव्लेवा, स्तुकोफ, और मन्तोफ) का अधिकार हो गया था—ने केन्द्रीय समिति में अविश्वास का प्रस्ताव-पास किया। ब्युरो ने घोषित किया कि उसकी राय में "अत्यन्त नजदीक भविष्य में पार्टी में फूट शायद ही रोकी जा सके।" "वाम साम्यवादी" बल्कि यहाँ तक बढ़ गये, कि "अन्तर्राष्ट्रीय क्रांति के हित के लिये" उन्हों ने अपने प्रस्ताव में सोवियत् विरोधी नीति स्वीकार की, उन्हों ने घोषित किया, "सोविय-शक्ति के सम्भव-नीयनाश स्वीकार करने को भी हम वांछनीय समझते हैं, अब तो वह बिल्कुल नाम की चीज रह गई है।"

लेनिन ने इस निर्णय को "विचित्र और शैतानी" कहा।

इस समय त्रोत्स्की और "वाम साम्यवादियों" का यह पार्टी-विरोधी व्यवहार पार्टी को साफ नहीं मालूम हुआ था। किन्तु, सोवियत् विरोधी "दक्षिण पन्थियों और त्रोत्स्कियाइयों की गुट्ट" के हाल (१९३८) के आरंभ के मुकदमों ने अब प्रकट कर किया कि बुखारिन् और उसके नेतृत्व में "वाम साम्यवादी" ग्रूप, त्रोत्स्की तथा

"वाम" समाजवादी-क्रान्ति कारियों के साथ उस समय सोवियत् सर्कार के विरुद्ध गुप्त षडयंत्र रच रही थी। अब यह मालूम है, कि बुखारिन् त्रत्स्की और उनके सह-षड्यात्रियों ने तै किया था कि ब्रेस्त-लितोव्स्क संधि को तोड़ दिया जावे। व्ला० इ० लेलिन, यो० वि० स्तालिन् और इ० भ० स्वद्लोफ को पकड़ कर मार डाला जावे तथा बुखारिनीयों, त्रोत्स्कियाइयाँ, और "वाम" समाजवादी कान्ति कारियों को एक नई सर्कार कायम की जावे।

इस गुप्त क्रान्ति विरोधी योजना को तैयार करते हुये, वाम-साम्यवादी ग्रूप ने, त्रोत्स्की की सहायता से वोल्शेविक पार्टी पर खुले हमला किया, और कोशिश की कि उसमें फूट हो और उसके सदस्य तितर वितर हो जायें। लेकिन ऐसे पार्टी ने लेनिन स्तालिन्, और स्वर्द्लोफ का साथ दिया, दूसरे सभी प्रश्नों की भाँति संधि के प्रश्न पर भी वह केन्द्रीय-समिति के साथ रही।

"वाम साम्यवादी" ग्रूप अकेला पड़ गई, और हार गई।

सन्धि के सम्बन्ध में पार्टी, जिसमें अपने अन्तिम निर्णय को बतला सके, इसके लिये सातवीं पार्टी कांग्रेस बुलाई गई।

कांग्रेस १६ (६) मार्च १६१८ को आरम्भ हुई। हमारी पार्टी के शासनशक्ति हाथ में लेने के बाद, यह पहिली कांग्रेस थी। इसमें १,४५,००० मेंबरों की ओर से ४६ प्रतिनिधि वोट अधिकार वाले और ५८ वोट रहित बोल सकने वाले शामिल हुये। यथार्थ में उस समय पार्टी के मेंबरों की संख्या २,७०,००० से कम न थी। फर्क का कारण यह था, कि कांग्रेस का अधिवेशन जितनी जल्दी में हो रहा था, उसके कारण संगठनों के बहुसंख्यक सदस्य समय पर अपने प्रतिनिधि नहीं भेज सके, और जर्मन कब्जे में चले गये प्रदेशों के संगठन तो अपने प्रतिनिधि बिल्कुल ही नहीं भेज सके।

इस कांग्रेस में ब्रेस्त-लितोव्स्क संधि के बारे में रिपोर्ट करते हुये लेनिन् ने कहा "...अपने भीतर वाम विरोधी पक्ष की स्थापना

के कारण, जो जबर्दस्त संकट, हमारी पार्टी आजकल अनुभव कर रही है, वह रूसी क्रांति ने जितने भारी भारी संकट सहे हैं, उनमें से यह एक है।"

(लेनिन्, संचित ग्रन्थावली, अंग्रेजी, पृ० २६३-४)

ब्रेस्त-लितोव्स्क संधि पर लेनिन् का प्रस्ताव ३० पक्ष, १२ विपक्ष और ४ तटस्थ वोटों के साथ पास हुआ।

इस प्रस्ताव के पास हो जाने के दूसरे दिन लेनिन् ने "एक पीड़ाजनक संधि" के नाम से एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने कहा:

"संधि की शर्तें सख्त असह्य हैं। तो भी इतिहास अपना निजी फैसला देगा।...आओ हम संगठन करें, संगठन करें, और संगठन करें। सभी परीक्षाओं के बाद भी भविष्य हमारा है।" (लेनिन्-ग्रन्थावली, रूसी, जिल्द २२, पृ० ७-८)

अपने प्रस्ताव में कांग्रेस ने घोषित किया, कि साम्राज्यवादी राज्यों द्वारा सोवियत्-प्रजातंत्र पर और भी सैनिक हमला होना अनिवार्य है और इस लिये कांग्रेस पार्टी आत्म-अनुशासन, और मजदूरों तथा किसानों में अनुशासन को मजबूत करने, जनता को समाजवादी देश की रक्षा के लिये आत्मोत्सर्ग करने के वास्ते तैयार करने, लाल सेना को संगठित करने और सार्वजनिक सैनिक शिक्षा के जारी करने के लिये अत्यन्त जोरदार और दृढ़ तरीके अख्तियार करे।

ब्रेस्त-लितोव्स्क सन्धि के सम्बन्ध में लेनिन् की नीति का समर्थन करते हुये, कांग्रेस ने त्रोत्स्की और बुखारिन के रवैये की निन्दा की और पराजित "वाम साम्यवादियों" का खुद कांग्रेस के भीतर फूट पैदा करनेवाली कार्रवाइयों को जारी रखने के प्रयत्न को लांछित ठहराया।

ब्रेस्त लितोव्स्क-संधि ने पार्टी को इस बात का अवसर दिया कि वह सोवियत् शक्ति को मजबूत और देश के आर्थिक जीवन को संगठित करे।

सन्धि ने साम्राज्यवादी केम्प के भीतर के झगड़े (जर्मनी और आस्ट्रिया की मित्र-शक्तियों के साथ लड़ाई, जो अब भी चल रही था) से फायदा उठाना, शत्रु की शक्तियों को तितर-वितर करना, सोवियत् आर्थिक व्यवस्था का संगठित करना और लाल सेना निर्माण करना सम्भव कर दिया।

सन्धि ने प्रोलेतरी वर्ग के लिये यह सम्भव बनाया, कि वे गृह-युद्ध में सफेद-गारद जेनरलों के पराजय के लिये किसानों को अपना सहायक बनाये और शक्ति-संचय कर सकें।

अक्तूबर-क्रान्ति के समय लेनिन् ने बोल्शेविक पार्टी को सिखलाया, कि जब स्थितियाँ आगे बढ़ने के अनुकूल हों, तो कैसे निर्भय हो दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ना चाहिये। ब्रेस्त-लितोव्स्क-सन्धि के काल में लेनिन् ने पार्टी को सिखलाया, कि कैसे सारी शक्ति लगा कर नये आक्रमण की तैयारी के लिये सुव्यवस्थित तौर से पीछे हटना चाहिये जब कि दुश्मन की शक्तियाँ हमसे साफ जबर्दस्त हों।

लेनिन् की नीति को इतिहास ने पूर्णतया ठीक साबित किया।

सातवीं कांग्रेस में पार्टी का नाम बदलना, तथा उसके प्रोग्राम में परिवर्तन करने के बारे में भी तै हुआ। पार्टी का नाम बदल कर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक)—रु० क० पा० (बो०) रखा गया। लेनिन् ने प्रस्ताव किया, कि हमारी पार्टी को कम्युनिष्ट (साम्यवादी) पार्टी कहा जाये, क्योंकि यही नाम हमारी पार्टी के उद्देश्य—कम्युनिज्म (साम्यवाद) की प्राप्ति—के ठीक अनुकूल है।

पार्टी का नया प्रोग्राम बनाने के लिये एक खास कमीशन—जिसमें लेनिन् और स्तालिन् शामिल थे—निर्वाचित हुआ, उसके प्रोग्राम के लिये लेनिन् के मसौदे को आधार के तौर पर स्वीकार किया गया।

इस प्रकार सप्तम कांग्रेस ने एक भारी ऐतिहासिक महत्त्व का काम पूरा किया! उसने पार्टी के भीतर छिपे शत्रुओं--"वाम साम्य-वादियों और प्रतिक्रियाइयों—को हराया, देश को साम्राज्यवादी युद्ध से अलग करने में वह सफल हुई, उसने शांति और अवकाश प्राप्त कराया; उसने लाल सेना को संगठित करने के लिये पार्टी को समय पाने दिया, और पार्टी के ऊपर राष्ट्रीय अर्थनीति में समाजवादी तरीके के प्रवेश कराने का कार्यभार दिया।

८--समाजवादी रचना में पहिले कदम के लिये लेनिन् की योजना गरीब किसानों की कमीटियाँ और कुलकों का छँटाव। "वाम" समाजवादी-क्रान्तिकारियों का विद्रोह और उसका दबाना। पंचम सोवियत-कांग्रेस और र० स० फ० स० र० के विधान की स्वीकृति।

सन्धि पर हस्ताक्षर करके, और इस प्रकार थोड़ा अवकाश पा सोवियत् सर्कार समाजवादी रचना के काम में लगी। लेनिन् ने नवम्बर १९१७ से फर्वरी १९१८ तक के समय को "राजधानी पर लाल गारद का हमला" की अवस्था कहा है। १९१८ के पूर्वार्द्ध में सोवियत् सर्कार राज्य शक्ति की बूर्ज्वा मशीन को चूर्ण करके, और सोवियत्-शक्ति को उलटने के लिये क्रान्ति विरोध के प्रथम प्रयत्न को सफलतापूर्वक पीस करके, बूर्ज्वासी की आर्थिक शक्ति को तोड़ने में, राष्ट्रीय अर्थनीति की कुंजी की जगहों, मिलों, फेक्टरियों, बैंकों, रेलों, विदेशी व्यापार, व्यापारिक बेड़े, इत्यादि को अपने हाथ में लेने में सफल हुई।

किन्तु, इतना ही काफी नहीं था। यदि प्रगति लानी है, तो पुरानी व्यवस्था के नष्ट करने के बाद नई का निर्माण जरूरी है। इसी के अनुसार १९१८ के वसन्त में "हड़पने वालों को हड़पने से" समाज-

वादी रचना की एक नई अवस्था—प्राप्त विजयों के संगठन के साथ दृढ़ करना —में संक्रमण, सोवियत् राष्ट्रीय अर्थ नीति का निर्माण जरूरी था। लेनिन् का मत था, कि समाजवादी आर्थिक ढाँचे की नींव रखने का आरम्भ करने के लिये अवकाश का हद से ज्यादा लाभ उठाना चाहिये। वोल्शेविकों को एक नये तरीके से उत्पादन का संगठ और प्रवन्ध करना सीखना था। वोल्शेविक पार्टी ने रूस को विश्वास दिला दिया, कि वोल्शेविक पार्टी ने धनिकों के हाथ से जनता के लिये रूस को छीना है, और अव वोल्शेविकों को रूस पर शासन करना सीखना है। —लेनिन् ने लिखा।

लेनिन् की राय थी कि इस अवस्था में मुख्य कार्य यह है, कि जो चीज भी देश उपजाता है उसका लेखा तैयार किया जाये, और सभी उपज के वितरण पर नियन्त्र रखा जाये। देश की आर्थिक व्यवस्था में निम्न-मध्यम वर्ग की भरमार थी। शहर और दीहात के करोड़ों छोटी छोटी सम्पत्ति वाले पूँजीवाद की पौद थे। ये छोटी सम्पत्ति वाले नहीं मजदूर-अनुशासन को मानने और न नागरिक-अनुशासन को ही, वे सर्कार के वहीखाते और नियन्त्रण की व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेंगे। इस कठिन स्थिति में जो बात खास तौर से खतरनाक थी, वह थी सट्टेवाजी और नफेवाजी की निम्न मध्यम वर्गीय दुनिया, जनता की जरूरतों से छोटी सम्पत्ति वालों और दूकानदारों की फायदा उठाने की—कोशिश।

उद्योग में श्रमिक-अनुशासन के अभाव के खिलाफ कम की सुस्ती के खिलाफ पार्टी ने जबर्दस्त लड़ाई शुरू की। जनता श्रम के सम्बन्ध में नई आदत ग्रहण करने में सुस्त थी। इसलिये इस काल में श्रम अनुशासन के लिये संघर्ष एक जरूरी कार्य हो गया।

उद्योग में समाजवादी होड़ के विकास कार्यक्रम के अनुसार वेतन के रवाज; वेतन बराबर करने के विरोध, शिक्षा और समझाने के अतिरिक्त, राज्य से जितना हो सके उतना सनेट लेने वालों,

जॉगर कोठियों और नफा वालों के लिये जबर्दस्ती के ढंग को स्वीकार करने के लिये लेनिन् ने हिमायत की। उनकी राय थी, कि नया अनुशासन श्रम का अनुशासन, मित्रता पूर्ण सम्बन्धों का अनुशासन, सोवियत्-अनुशासन—एक ऐसी चीज है जिसे करोड़ों श्रमिक अपने रोजाना के व्यवहार द्वारा विकसित करेंगे, और "यह काम एक सारा ऐतिहासिक काल लेगा।" (लेनिन्, संचित ग्रन्थावली, अंग्रेजी, जिल्द ७ पृ० ३५३)

समाजवादी रचना, नये समाजवादी उत्पादन सम्बन्ध की इन सभी समस्याओं पर लेनिन् ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सोवियत् सर्कार के तुरन्त के काम में विवेचन किया है।

समाजवादी-क्रान्तिकारियों और मेन्शेविकों के साथ मिलकर "वाम साम्यवादियों ने" इन प्रश्नों पर भी लेनिन् से विवाद किया। बुखारिन, ओसिन्स्की, आदि, अनुशासन, कारखों में एक आदमी के मैनेजर होने, उद्योग में बूर्ज्वा विशेषज्ञों की नियुक्ति और योग्य व्यावसायिक तरीकों के इस्तेमाल के विरुद्ध थे। वे यह कहकर लेनिन् को ताना देते थे, कि इस नीति का मतलब होगा, बूर्ज्वा स्थितियों में पलट जाना। साथ ही "वाम साम्यवादी" रूस में समाजवादी रचना और समाजवाद की विजय असंभव है—इस त्रोत्स्कियाई दृष्टि का भी प्रचार करते थे।

"वाम साम्यवादियों" के "वाम" शब्द जाल उनके कुलकों जांगर कोठियों और नफा वालों—जो कि अनुशासन के विरोधी और आर्थिक जीवन के राजकीय नियमन, लेखा और नियंत्रण के खिलाफ थे—के समर्थन पर पर्दा डालने का काम करता था।

नवीन, सोवियत्-उद्योग के सगठन के सिद्धान्तों को स्थिर कर लेनेके बाद, पार्टीने दी ह्रात— जो कि उस समय गरीब किसानों और कुलकों के संघर्ष की व्यथा में थी—की समस्याओं के सुलझाने की ओर ध्यान दिया। कुलक मजबूत होते जा रहे थे, और जमी-

दारों के जब्त किये हुये खेतों पर दखल जमाते जा रहे थे। गरीब किसानों को सहायता की आवश्यकता थी। कुलक मजदूर सर्कार से झगड़ते थे और निश्चित मूल्य पर उसके साथ अनाज बेचने से इन्कार करते थे। वे समाजवादी प्रबंधों के छुड़वाने के लिये सोवियत-राज्य को भूखा मारना चाहते थे। पार्टी क्रान्ति-विरोधी कुलकों को चूर्ण करने के काम पर लग गई। गरीब किसानों को संगठित करने, और कुलकों --जो कि अपने वंचित अनाज को रोके हुये थे—के विरुद्ध संघर्ष को कामयाब बनाने के लिये औद्योगिक मजदूरों के जत्थे दीहात में भेजे गये।

लेनिन् ने लिखा था "साथियो, मजदूरो, याद रखो क्रान्ति भीषण स्थिति में है, याद रखो, केवल तुम्हीं क्रान्ति को बचा सकते हो दूसरा नहीं हमको क्या चाहिये ?—दस हजार चुने हुये राजनीतिक तौर से अग्रगामी मजदूर, जो समाजवाद के आदर्श के लिये विश्वास पात्र हों, रिश्वत के फंदे तथा चुराने के प्रलोभन में पड़ने में अयोग्य, और कुलकों, नफाबाजों, लुटेरों, रिश्वत खोरों और विसंगठकों के विरुद्ध लोह शक्ति निर्माण करने के योग्य हों।" (लेनिन् ग्रंथावली, रूसी, जि० २३, पृ० २५)

"रोटी का संघर्ष है, समाजवाद का संघर्ष है। लेनिन् ने कहा। इसी नारे के आधीन मजदूर जत्थों का दीहात में भेजना संगठित किया गया था। कुछ कानूनी घोषणायें निकाली गई, इसके द्वारा एक खाद्य-अधिनायकत्व स्थापित किया गया और खाद्य-जन कमीसरी विभाग को निश्चित दर पर अनाज खरीदने का आपत् कालीन अधिकार दिया गया।

२४ (११) जून १६१८ को एक कानूनी घोषणा जारी की गई, इसके द्वारा गरीब किसान कमीटियों का बनाना तै हुआ। कुलकों के साथ संघर्ष, जब्त किये हुये खेतों का पुनर्वितरण और कृषि-सम्बन्धी हथियारों के वितरण, कुलकों से वंचित खाद्य के जमा करने, और

मजदूर वर्ग के केन्द्रों तथा लालसेना को खाद्य सामग्री पहुँचाने में इन कमीटियों ने बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया। कुलकों की ५ करोड़ हेक्टर (१ हेक्टर=२॥ एकड़) भूमि गरीब, और मध्यमवित्त किसानों के हाथ में दी गई। कुलकों के उपज के साधनों का एक भारी हिस्सा छीन कर गरीब किसानों को दे दिया गया।

गरीब-किसान कमीटियों की कायमी, दीहात में समाजवादी क्रान्ति के विकास की एक अगली सीढी थी। कमीटियाँ गाँवों में प्रोलेतरी-अधिनायकत्त्व का दुर्ग थीं। अधिकतर उन्हीं के द्वारा किसानों में लालसेना की भरती होती थी।

दीहात में प्रोलेतरीय प्रचार और गरीब किसान कमीटियाँ के संगठन ने गाँवों में सोवियत्-शक्ति को दृढ किया, और मध्यवित्त किसानों को सोवियत्-सर्कार के पक्ष में करने में जबर्दस्त राजनीतिक महत्त्व के काम को किया।

१९१८ के अन्त में उनका काम पूरा हो जाने पर गरीब-किसान कमीटियों को सोवियतों में मिला दिया गया, और इस प्रकार उनके अस्तित्त्व का अंत हो गया।

पंचम सोवियत् कांग्रेस १६ (४) जुलाई १९१८ को आरंभ में "वाम" समाजवादी-क्रान्ति-कारियों ने कुलकों का पक्ष ले लेनिन पर जबर्दस्त आक्षेप किये। उन्होंने जोर दिया कि कुलकों के खिलाफ लड़ाई रोक दी जावे, दीहात में मजदूर-खाद्य-जत्थों का भेजना बंद किया जाये। जब "वाम" समाजवादी क्रान्ति-कारियों ने देखा, कि कांग्रेस का बहुमत उनके सख्त विरुद्ध है, तो उन्हों ने मास्को में विद्रोह शुरू किया, और त्रोऽख्यतितेल्स्की-गली पर कब्जा करके क्रेम्लिन् पर गोला बारी शुरू की। इस मूर्खता पूर्ण बलवे को चन्द घन्टों में बोलशेविकों ने दबा दिया। देश के दूसरे भागों में भी "वाम" समाजवादी-क्रान्ति कारियों ने विद्रोह करने का प्रयत्न किया, किन्तु सभी जगह वे बलवे जल्दी ही दबा दिये गये।

जैसा कि अब सोवियत्-विरोधी दक्षिण पक्षी और त्रोत्स्कियाई-युद्ध" के मुकदमे ने सिद्ध कर दिया, "वाम" समाजवादी-क्रान्ति-कारियों का विद्रोह बुखारिन् और त्रोत्स्की की राय से शुरू किया गया था, और बुखारिनीयों, त्रोत्स्कियाइयों और "वाम" समाजवादी-क्रान्तिकारियों का सोवियत्-शक्ति के विरुद्ध एक बड़े क्रान्ति विरोधी षड्यन्त्र का भाग था।

इसी समय, एक "वाम" समाजवादी-क्रान्तिकारी—जिसका नाम ब्लुम्किन् था—और जो पीछे त्रोत्स्की का एक एजंट साबित हुआ—ने मास्को के जर्मन दूतावास में जा जर्मन राजदूत मिर्बाख् को इस अभिप्राय से कतलकर दिया, कि इस तरह जर्मनी से लड़ाई हो जावेगी। लेकिन सोवियत्-सर्कार ने अपने को लड़ाई से बँचा लिया, और क्रान्ति-विरोधियों की चाल बेकार गई।

पंचम सोवियत्-कांग्रेस ने प्रथम सोवियत् विधान—रूसी सोवियत्-फेडरल सोशलिस्ट रिपब्लिक (रू० सो० फ० स० र०) का विधान—स्वीकार किया।

संक्षिप्त सार

फर्वरी से अक्तूबर १९१७ के आठ महीनों में बोल्शेविक पार्टी ने, मजदूर वर्ग का बहुमत, सोवियतों का बहुमत और समाजवादी क्रान्ति के लिये करोड़ों किसानों की सहायता अपनी ओर करने में सफल हुई। उसके निम्न मध्यमवर्गीय पार्टियों (समाजवादी-क्रांति-कारियों, मेन्शेविकों, और अराजकतावादियों) की नीति का कदम-कदम पर पर्दा खोलते हुये, तथा उसे मजदूर-जनता के हितों के विरुद्ध दिखलाते हुये, उनके प्रभाव से हटाकर जनता को अपनी ओर खींच लिया। बोल्शेविक पार्टी ने जनता को अक्तूबर-क्रांति के लिये तय्यार करते, युद्धक्षेत्र और घर में विस्तृत राजनीतिक काम किये।

इस काल में पार्टी के इतिहास के लिये निर्णायक महत्वकी घटनायें थीं : निर्वासन से लेनिन् का लौटना, उनका अप्रैल-निबन्ध (भाषण), अप्रैल पार्टी कान्फ्रेंस और छठीं पार्टी-कांग्रेस। पार्टी के निर्णय मजदूरवर्ग के लिये शक्ति-स्रोत थे, और वे उनमें विजय के प्रति विश्वास का संचार करते थे, मजदूर उनमें क्रान्ति की महत्वपूर्ण समस्याओं का हल पाते थे। अप्रैल-कान्फ्रेंस ने पार्टी के प्रयत्न को बूर्ज्वा-जनतांत्रिक-क्रान्ति से समाजवादी क्रान्ति का संक्रमण के लिये संघर्ष की ओर घुमाया। छठीं कांग्रेस ने बूर्ज्वाजी और उनकी अस्थायी सर्कार के विरुद्ध सशस्त्र विरोध के लिये पार्टी को चालित किया।

समझौतावादी समाजवादी-क्रान्तिकारी और मेन्शेविक पार्टियों, अराजकतावादी और दूसरी साम्यवादी पार्टियों ने अपने विकास का चक्कर पूरा कर लिया। अक्तूबर क्रान्ति से भी पहिले वे सभी बूर्ज्वा पार्टी बन गई, और पूँजीवाद के व्यवस्था के अस्तित्व और अक्षुण्णता के लिये लड़ीं। बाल्शेविक-पार्टी की एक मात्र वह पार्टी थी, जिसने कि बूर्ज्वाजी को उलटने और सोवियतों की शक्ति की स्थापना के लिये संघर्ष का संचालन किया।

साथ ही बोल्शेविकों ने पार्टी के भीतर के दिवालावादियों—जिनोवियेफ़्, कामेनेफ़्, रुइकोफ़्, बुखारिन्, त्रोत्स्की और प्याताकोफ़—के पार्टी को समाजवादी क्रान्ति के पथ से हटाने के प्रयत्न को व्यर्थ किया।

बोल्शेविक-पार्टी के नेतृत्व में, मजदूर वर्ग ने गरीब किसानों की मैत्री, और सैनिकों और नौ-सैनिकों के सहयोग से बूर्ज्वाजी की शासन-शक्ति को उलट दिया, सोवियतों की शक्ति की स्थापना की, एक नये ढंग का राज्य—समाजवादी सोवियत्-राज्य—कायम किया, जमीन पर जमींदारों के स्वामित्व को उठा दिया, जमीन को किसानों को उनके इस्तेमाल के लिये दे दी, देश की सारी भूमि का राष्ट्रीकरण

कर दिया, पूँजीपतियों को निःस्वत्व कर दिया, युद्ध से रूस को हटाने में सफलता पाई, और संधि को प्राप्त किया, अर्थात् उन अति-आवश्यक बातों को प्राप्त किया और इस प्रकार समाजवादी रचना के विकास के अनुकूल स्थिति पैदा की।

अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने पूँजीवाद को चूर कर दिया, बूर्ज्वाजी को उत्पादन के साधनों से वंचित कर दिया, और मिलों, फेक्टरियों, भूमि, रेलों, और बेंकों को सभी लोगों की सम्पत्ति, सार्वजनिक सम्पत्ति बना दी।

उसने कमकरों (प्रोलेतरी) के अधिनायकत्त्व की स्थापना की, और विशाल देश की सर्कार को उनके हाथ में दे दिया, और इस प्रकार उन्हें शासक वर्ग बना दिया।

इस तरह अक्तूबर समाजवादी-क्रान्ति ने मानव जाति के इतिहास में एक नया युग—प्रोलेतरी क्रान्ति का युग—प्रवर्तित किया।
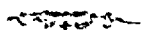
अष्टम अध्याय

विदेशी सैनिक हस्तक्षेप और गृह युद्ध के काल में बोल्शेविक-पार्टी

(१६१८—१६२०)

१—विदेशी सैनिक हस्तक्षेप, का आरम्भ। गृह युद्ध का प्रथम काल।

ब्रेस्त-लितोव्स्क-संधि का करना और सोवियत् शक्ति द्वारा कितने ही क्रान्तिकारी आर्थिक तरीकों की स्वीकृति के परिणाम स्वरूप सोवियत-शक्ति की दृढ़ता, ऐसे समय में हुई जब कि पश्चिम में युद्ध अब भी घनघोर रूप में हो रहा था; इस बात में पश्चिमी साम्राज्य-वादियों—विशेषकर मित्र शक्तियों में भारी भय पैदा कर दिया।

मित्र शक्ति के साम्राज्यवादियों को भय हुआ, कि रूस और जर्मनी की सन्धि युद्ध में जर्मनी की स्थिति को शायद मजबूत न कर दे, और उसी के अनुसार हमारी सेनाओं की स्थिति को खराब न कर दे। विशेष कर, उन्हें इस बात का भय हुआ कि रूस और जर्मनी की सन्धि कहीं सभी देशों और सभी क्षेत्रों में शान्ति (सन्धि) की भूख को तेज न कर दे, तथा इस प्रकार लड़ाई को जारी रखने में बाधा न पड़े, और साम्राज्यवादियों के हित को धक्का न लगावे। आख़िरी बात, उनको डर हो गया कि एक बहुत विशाल भूभाग पर सोवियत् सरकार का अस्तित्व, बूर्ज्वाजी की शक्ति के उलटने के बाद घर में जो सफलतायें उसने पाई हैं, वे पश्चिम के सैनिकों और मजदूरों के लिये छूत का उदाहरण न कहीं बन जावें; लम्बी लड़ाई

से अत्यन्त परेशान मजदूर और सैनिक कहीं रूसियों के कदम पर चल कर अपनी बंदूकों को अपने स्वामियों और उत्पीड़कों पर न घुमा दें। निदान, मित्रशक्ति-सर्कारों ने इस अभिप्राय से रूस में शस्त्र बल से हस्तक्षेप करना तै किया, कि वे सोवियत् सर्कार को हटा कर एक ऐसी बूर्ज्वा सर्कार स्थापित करें, जो कि देश में बूर्ज्वा व्यवस्था को पुनः स्थापित करे, जर्मनी के साथ की सन्धि को तोड़ दे। और जर्मनी और आस्ट्रिया के विरुद्ध सैनिक मोर्चों की फिर से स्थापना करे।

मित्रशक्ति पूँजीवादियों ने इस दुष्टता पूर्ण प्रयत्न में अधिक उत्साह के साथ इसलिये भी कूदना चाहा क्योंकि उन्हें विश्वास था, कि सोवियत् सर्कार अदृढ़ है; उनको इसमें सन्देह नहीं था, कि उसके दुश्मनों के थोड़े से प्रयत्न से उसका शीघ्र पतन अनिवार्य है।

उससे भी अधिक भय सोवियत् सरकार की सफलताओं और उसके दृढ़ीकरण ने पदच्युत वर्गों—जमींदारों और पूँजीपतियों; पराजित पार्टियों—वैधानिक जनतांत्रिकों, मेन्शेविकों, समाजवादी क्रान्तिकारियों, अराजकतावादियों और सभी रंग के बूर्ज्वा राष्ट्रीयता वादियों, और सफेद जेनरलों, कसाक अफसरों आदि के भीतर पैदा किया।

विजयी अक्तूबर क्रान्ति के प्रथम दिन ही से यह सभी शत्रुभाव रखनेवाले कोठे से चिल्ला रहे थे उसमें सोवियत् शक्ति के लिये स्थान नहीं, इसका नाश निश्चित है, इसका पतन एक या दो सप्ताह में, या ज्यादा से ज्यादा एक महीना, दो या तीन महीने में, निश्चित है किन्तु, जब अपने दुश्मनों के कुचक्र के बाद भी सोवियत् सर्कार मौजूद रही, और उसने बल प्राप्त किया तो रूस के भीतर के इसके शत्रु यह स्वीकार करने पर मजबूर हुये, कि यह उससे ज्यादा मजबूत है, जितना कि वे कल्पना करते थे, और इसे उखाड़ने के लिये सोवियत विरोधी सभी शक्तियों की ओर से बड़े प्रयत्न और भीषण संघर्ष

की आवश्यकता होगी। इसलिये उन्होंने एक बड़े पैमाने पर क्रान्ति-विरोधी विद्रोही कार्रवाइयों का निश्चय किया। क्रान्तिविरोधी शक्तियों के परिचालन, सैनिक कर्मियों के संग्रह और विद्रोहों के संगठन—खासकर कसाक् और कुलक इलाकों में—करने का निश्चय किया।

इस प्रकार १९१८ के पूर्वार्द्ध में ही दो निश्चित शक्तियों—विदेशी मित्रशक्ति के साम्राज्यवादियों और घर में क्रान्ति विरोधियों—ने वह रूप धारण किया, जो सोवियत् शक्ति को उलटने की कारवाई करने को तय्यार था।

इन दोनों ताकतों में से किसी एक के पास अकेले सोवियत्-सर्कार को उलटने के लिये आवश्यक सभी साधन नहीं थे। रूस के क्रान्ति विरोधियों के पास विशेष कर कसाकों और कुलकों की ऊपरी श्रेणियों से आये कुछ सैनिक-कर्मी तथा मनुष्य बल था, जो कि सोवियत्-सर्कार के विरुद्ध विद्रोह आरंभ करने के लिये काफी था। लेकिन उनके पास न पैसा था न हथियार। विदेशी साम्राज्यवादियों के पास पैसा और हथियार थे किन्तु इस क्षेत्र के लिये पर्याप्त संख्या में वे सेना को "छोड़" न सकते थे; वे ऐसा नहीं कर सकते थे, सिर्फ इसी लिये नहीं कि उनकी जरूरत आस्ट्रिया और जर्मनी की लड़ाई में थी बल्कि इस लिये भी कि शायद वे सोवियत्-शक्ति के साथ युद्ध में उतनी विश्वासनीय न साबित हों।

सोवियत् शक्ति के विरुद्ध संघर्ष की स्थितियाँ, दोनों सोवियत् विरोधी शक्तियों—एक विदेशी एक स्वदेशी—को मिलने के लिये मजबूर कर रही थी और यह मिलन १९१८ के पूर्वार्द्ध में हुआ।

अब रूस में अवकाश का अन्त हो गया, और गृह युद्ध आरंभ हुआ यह गृह युद्ध था रूस की सभी जातियों के मजदूरों और किसानों का सोवियत् शक्ति के देशी और विदेशी शत्रुओं के खिलाफ।

वृटेन, फ्रांस, जापान और अमेरिका के साम्राज्यवादियों ने बिना युद्ध-घोषणा के ही अपना सैनिक हस्तक्षेप आरंभ किया, यद्यपि यह हस्तक्षेप युद्ध था, रूसके विरुद्ध युद्ध, और बहुत बुरी तरह का युद्ध था ये "सभ्य" लुटेरे गुप्त रीत्यों चोरी से रूस के किसानों पर आये और उन्हों ने रूसी भूमि पर अपनी सेनायें उतारीं।

अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने उत्तर में अपनी सेना उतारी, और आरखेञ्जल और मूर्मान्स्क पर अधिकार कर लिया। सफेद गारद के विद्रोह को सहायता दी, सोवियतों को उलट कर एक सफेद गारदों की "उत्तरी रूस की सर्कार" कायम की।

जापानियों ने अपनी सेनायें व्लादीवोस्तोक् में उतारीं, समुद्र तटवर्ती प्रान्त पर कब्जा किया, सोवियतों को हटा दिया और सफेद गारद विद्रोहियों को सहायता दी, जिन्होंने बाद में पूंजीवादी व्यवस्था को फिर से स्थापित किया।

उत्तरी काकेशस् में, जेनरल कोर्निलोफ्, जेनरल अलेक्सेयेव और जेनरल देनिकन् ने अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की सहायता से एक सफेद गारद "स्वयंसेवक सेना" बनाई, कसाकों के ऊपरी श्रेणी वालों का विद्रोह कराया और सोवियतों के विरुद्ध लड़ाई शुरू की।

दोन नदी के तट पर, जेनरल क्रास्नोव और जेनरल मामोन्तोव ने जर्मन साम्राज्यवादियों की गुप्त सहायता से (रूस और जर्मनी की हाल में हुई सन्धि के कारण जर्मन खुले तौर से सहायता देने से हिचकिचाते थे) दोन् कसाकों का विद्रोह कराया, दोन् प्रान्त पर कब्जा किया और सोवियतों के विरुद्ध लड़ाई शुरू की।

मध्यवोल्गा प्रान्त और सिबेरिया में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने चेकोस्लावक सेना को विद्रोह करने के लिये उत्तेजित किया। यह सेना युद्ध के कैदियों की थी, जिसे सोवियत् सरकार ने सिबेरिया और सुदूर पूर्व के रास्ते पर लौटने की इजाजत दे दी थी। किन्तु जब वह रास्ते में थी, तभी समाजवादी क्रान्तिकारियों

और अँग्रेजों तथा फ्रांसीसियों ने उन्हें सोवियत् सर्कार के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये इस्तेमाल किया। इस सेना के विद्रोह ने वोल्गा प्रान्त और सिबेरिया के कुलकों, तथा वोटकिन्स्क और इज्हेव्स्क कारखानों के मजदूरों – जो कि समाजवादी क्रान्ति-कारियों के प्रभाव में थे—को विद्रोह करने के लिये प्रेरणा दी। वोल्गा प्रांत के लिये समारा में सफेद गारद समाजवादी-क्रान्तिकारी सर्कार कायम की गई, और सिबेरिया के लिये एक सफेद गारद सरकार ओम्स्क में।

जर्मनी ने इस बृटिश-फ्रेंच-जापानी-अमेरिकन हस्तक्षेप में भाग नहीं लिया, वह वैसा कर भी नहीं सकती थी, क्योंकि वह उस झुंड के साथ युद्ध कर रहा था, यदि दूसरा कारण नहीं तो इसीसे। लेकिन इतना होते, तथा रूस जर्मनी के बीच संधि हुई रहने पर भी, किसी बोल्शेविक को इसमें संदेह नहीं था कि कैसर विल्हेल्म की सर्कार सोवियत् रूस को वैसी ही कट्टर शत्रु है जैसे कि बृटिश फ्रेंच-जापानी अमेरिकन आक्रमणकारी। और वस्तुतः, जर्मन साम्राज्यवादियों ने सोवियत् रूस को असहाय, निर्बल और नष्ट करने के लिये भरसक कोशिश की। उन्होंने उससे उक्रइन् छीन लिया—यह सच है पर सफेद गारद उक्रइनी रादा (कौंसिल) के साथ की एक संधि द्वारा हुआ था,—रादा के कहने पर अपनी सेना को भीतर ले आये और निर्दयतापूर्वक उक्रइनीय जनता को लूटने और उत्पीड़ित करने लगे, उन्हें सोवियत् रूससे कोई भी सम्बन्ध कायम रखने के लिये मना किया। उन्हों ने काकेशिया को सोवियत् रूस से विलग कर दिया, जार्जिया और अर्मेनियन् राष्ट्रीयतावादियों के कहने पर वहाँ जर्मन और तुर्क सेनायें भेज, तिबिलिसि (तिफ़्लिस) और बाकू में साहिबी दिखलाने लगे। उन्होंने जेनरल क्रास्नोफ को बहुत अधिक परिमाण में हथियार और रसद दी—खुल्लमखुल्ला नहीं यह सच है--; इसी क्रास्नोफ् ने दोन् पर सोवियत्-सर्कार के विरुद्ध विद्रोह खड़ा किया।

इस प्रकार सोवियत् रूस का सम्बन्ध अपने खाद्य, कच्चे माल और ईंधन के स्रोत से निश्चिन्त हो गया।।

उस समय सोवियत् रूस में स्थिति सख्त हो गई थी। रोटी और मांस का अकाल पड़ गया था। मजदूर भूखे मर रहे थे। मास्को और पेत्राग्राद् में ⅛ पौंड (१ छटांक) रोटी का राशन हर दूसरे दिन उन्हें मिलता था, ऐसे भी दिन आये जब कि रोटी बिल्कुल ही नहीं दी गई। कारखाने बन्द या करीब करीब बन्द थे, यह ईंधन और कच्चे माल के अभाव के कारण। लेकिन न मजदूर वर्ग ने हिम्मत छोड़ी, और न बोल्शेविक पार्टी ही ने। उस समय की अविश्वसनीय विपत्तियों को पार करने के लिये जो भीषण संघर्ष करना पड़ा, उसने दिखला दिया कि मजदूर वर्ग में कितना बल छिपा हुआ है और बोल्शेविक पार्टी की प्रतिष्ठा कितनी महान् है।

यद्यपि देश कठिन स्थिति में था, और तरुण लालसेना अभी दृढ़ नहीं हुई थी सोवियत रक्षा के लिये की गई तदबीरों ने तुरन्त अपना प्रभाव दिखलाया। जेनरल क्रास्नोफ, त्सारित्सिन्—जिस पर अधिकार होने का उसको पूरा विश्वास था—पीछे हटने के लिये मजबूर हुआ और दोन् नदी के पार भगा दिया गया। जेनरल देनिकिन की कारवाई उत्तरी काकेशस के एक छोटे से क्षेत्र में परिसीमित रही और जेनरल कोर्निलोफ् लालसेना के खिलाफ लड़ाई में मारा गया। चेकोस्लावक और सफेद गारद समाजवादी क्रान्तिकारी झुंड कज़ान् सिम्बिर्स्क और समारा से खदेड़ कर यूराल की ओर भगा दिये गये। मास्को के बृटिश मिशन के मुखिया लॉकहार्ट ने यारोस्लाव्ल में सविन्कोफ् के नेतृत्व में एक सफेद गारद संगठित किया। विद्रोह दबा दिया गया, और लॉकहार्ट खुद पकड़ा गया। समाजवादी-क्रान्तिकारियों ने साथी उरित्स्की और साथी वोलोदार्स्की की हत्या की, और लेनिन् के जीवन पर भी आघात करने का घृणित प्रयत्न किया। बोल्शेविकों के विरुद्ध उनके सफेद आतंक का बदला लेने के लिये लाल आतंक द्वारा मुकाबिला किया गया, और मध्य-रूस के ही एक शहर में उन्हें पीस दिया गया।

तरुण लाल-सेना युद्ध में पक्की और मजबूत हुई।

लाल-सेना के राजनीतिक शिक्षण और दृढ़ीकरण में, तथा उसके अनुशासन और लड़ने की योग्यता को बढ़ाने में, कम्युनिष्ट कमीसरों का काम बड़े महत्त्व का था।

किन्तु, बोल्शेविक पार्टी जानती थी, कि यह लाल सेना की पहिले पहिल की सफलतायें हैं, निर्णायक नहीं हैं। उसे मालूम था कि कई गम्भीर नई कठिनाइयाँ अभी आगे आने वाली हैं, और खोये हुये खाद्य, कच्चे माल और ईंधन के प्रदेशों को देश, शत्रुओं के साथ लम्बी और सख्त लड़ाई लड़ कर ही पा सकता है। इसलिये बोल्शेविकों ने लम्बे युद्ध के लिये जबर्दस्त तैयारी का काम अपने

हाथ में लिया, सारे देश को युद्ध क्षेत्र की सेवा में रखना ते किया। सोवियत्-सर्कार ने युद्ध-साम्यवाद को जारी किया। बड़े पैमाने के उद्योगों के अतिरिक्त मध्यम परिमाणी लघु परिमाणी उद्योगों को भी अपने नियंत्रण में ले लिया, जिसमें कि वह सेना और कृषक जनता को देने के लिये माल एकत्रित कर सके। उसने अनाज के व्यापार पर राज्य का एकाधिकार स्थापित किया, अनाज के वैयक्तिक व्यापार का निषेध कर दिया, और अतिरिक्त-आदान व्यवस्था स्थापित की, जिसके अनुसार सभी वंचित उपज जो किसानों के हाथ में होनी उसे दर्ज करना और निश्चित दर पर राज्य को देना होता था, यह इसलिये कि सेना और मजदूरों के देने के लिये अनाज को जमा किया जा सके। अन्तिम बात, उसने सभी वर्गों के लिये अनिवार्य (सार्वजनिक) श्रम-सेवा जारी की। बूर्ज्वाजी के लिये शारीरिक श्रम अनिवार्य करके मजदूरों को युद्ध क्षेत्र पर अधिक महत्त्व के कर्तव्यों के लिये छुट्टी दी, पार्टी ने "जो काम नहीं करता वह खा भी नहीं सकेगा", इस सिद्धान्त को व्यवहार का रूप दिया।

२—युद्ध में जर्मनी की पराजय। जर्मनी में क्रान्ति। तृतीय इन्टर्नेशनल की स्थापना। आठवीं पार्टी कांग्रेस।

जिस वक्त सोवियत्-देश वैदेशिक हस्तक्षेप वाली शक्तियों के खिलाफ नई लड़ाई की तैयारी कर रहा था, उसी समय पश्चिम में, घर में और युद्ध क्षेत्र में दोनों जगह, लड़न वाले देशों में वारान्यारा करने वाली घटनायें घट रही थीं। खाद्य सामग्री के संकट और युद्ध के फंदे से जर्मनी और आस्टिया का गला घुट रहा था। बृटेन, फ्राँस और युक्त राष्ट्र लगातार नये स्रोतों पर हाथ मार रहे थे, जब कि जर्मनी और आस्ट्रिया अपने पुराने बचे खुचे जखीरों को खच कर रहे थे। स्थिति ऐसी थी, कि जर्मनी और आस्ट्रिया अन्तिम क्रान्ति को प्राप्त हो, पराजय के तट पर पहुँच चुके थे।

साथ ही जर्मनी और आस्ट्रिया की जनता उस नाशकारी और अन्तरहित युद्ध के खिलाफ, और अपनी साम्राज्यवादी सर्कार--जिसने उन्हे क्षीणता और भुखमरी की अवस्था में ला छोड़ा था -के खिलाफ असन्तोष से बावली हो रही थी। अक्टूबर क्रान्ति के क्रान्तिकारी प्रभाव ने भी जबर्दस्त असर किया, जैसा कि ब्रेस्त-लितोव्स्क-संधि से पहिले-सोवियत् रूस से युद्ध बंद होने और उसके साथ संधि हो जाने तक—सोवियत् सैनिकों के आस्टियन और जर्मन सैनिकों के भाई चारा कायम करने ने किया। रूस के लोगों ने इस घृणित युद्ध का अन्त अपनी साम्राज्यवादी सर्कार को उलट कर किया, और यह आस्ट्रियन और जर्मन मजदूरों के लिये जबर्दस्त पाठ हुये बिना नहीं रह सकता था। जो जर्मन सैनिक—जो पूर्वीय युद्ध क्षेत्र में भेज दिये गये वे युद्ध क्षेत्र पर की जर्मन सेना की हिम्मत को, अपने सोवितय् सैनिकों के साथ भाई चारा करने तथा सोवियत् सैनिकों के युद्ध से मुक्ति पाने के तरीके की बातों द्वारा नाश किये बिना रह नहीं सकते थे। इन्हीं कारणों से आस्ट्रियन सेना में विकार पहिले से अधिक हो चला।

इन सब बतों ने जर्मन सैनिकों में शांति की भूख को बढ़ाने का काम किया, उन्हों ने अपनी पहिले वाली लड़ाकू योग्यता खो दी और मित्र शक्ति की सेनाओं के प्रहार के सामने पीछे हटना शुरू किया। नवम्बर १९१८ में जर्मनो में क्रान्ति फूट पड़ी, और विल्हेल्म और उसकी सर्कार उलट दी गई।

जर्मनी हार स्वीकार करने पर मजबूर हुआ, और शान्ति के लिये उसने प्रार्थना की।

इस प्रकार एक धक्के में जर्मनी एक प्रथम श्रेणी की शक्ति से द्वितीय श्रेणी की शक्ति रह गई।

पेश किया भी— और वह इसमें सोवियतों को मजबूत करने के सिवा और दूसरा कर ही नहीं सकता था। यह सच है, कि जर्मनी में जो क्रान्ति हुई थी, वह समाजवादी नहीं बल्कि बूर्जा क्रान्ति थी, और सोवियतें बूर्जा पार्लमेंट के आज्ञाकारी हथियार थीं, क्योंकि उनपर समाजवादी-जनतंत्रवादियों—जो कि रूसी मेन्शेविकों की किस्म के समझौतावादी थे—का प्रभाव था। यही वस्तुतः, जर्मन क्रान्ति की निर्बलता को प्रकट करता है। वह कितनी निर्बल थी, उदाहरणार्थ, यह इस बात से ही स्पष्ट हो जाता है कि उसने सफेद गारदों को रोजा लुकजेमबर्ग और कार्ल लीब्कनेख्ट जैसे प्रमुख क्रान्तिकारियों की हत्या करने की इजाजत दी। तो भी यह क्रान्ति थी, विल्हेल्म उलट दिया गया, और मजदूरों ने अपनी बेड़ियाँ निकाल फेंकीं, और वह खुदही पश्चिम को क्रान्ति के द्वार को खोल देने के लिये मजबूर था, युरोपीय देशों में क्रान्ति की बाढ़ को लाने के लिये मजबूर था।

युरोप में क्रान्ति की बाढ़ ऊपर चढ़ने लगी। आस्ट्रिया में एक क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ। हँगरी में एक सोवियत्-सर्कार खड़ी हुई। क्रान्ति की चढ़ती हुई बाढ़ के साथ कम्युनिस्ट-पार्टियां तटपर आईं।

कम्युनिस्ट पार्टियों के सम्मिलन के वास्ते, तृतीय कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल की स्थापना के लिये अब वास्तविक आधार मौजूद था।

मार्च १६१६ में, बोल्शेविकों की प्रेरणा से, लेनिन् के नेतृत्व में भिन्न भिन्न देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों की प्रथम कांग्रेस मास्को में बैठी और उसने कम्युनिस्ट-इन्टर्नेशनल की स्थापना की। यद्यपि बहुत से प्रतिनिधि घिरावे और साम्राज्यवादी दमन के कारण मास्को में आने से रोक दिये गये, तो भी युरोप और अमेरिका के बहुत से देशों के प्रतिनिधि प्रथम कांग्रेस में उपस्थित थे। कांग्रेस के कार्य का पथप्रदर्शन लेनिन् ने किया।

लेनिन् ने बूर्ज्वा-जनतंत्रता और प्रोलेतरी अधिनायकत्व पर रिपोर्ट की। उन्होंने सोवियत्-व्यवस्था का महत्त्व, यह दिखलाते हुये बतलाया कि यह मजदूर-वर्ग के लिये सच्ची जनतंत्रता है। कांग्रेस ने सभी देशों के प्रोलेतरी के लिये एक घोषणा स्वीकार की, जिसमें कहा गया कि वे सारे संसार में प्रोलेतरी-अधिनायकत्व और सोवियतों के विजय के लिये जबर्दस्त संघर्ष करें।

कांग्रेस ने तृतीय कम्युनिष्ट-इन्टर्नेशनल की कार्यकारिणी समिति (क० इ० का० स०) बनाई।

इस प्रकार एक नये किस्म का अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी प्रोलेतरी संगठन—कम्युनिस्ट इन्टर्नेशनल—मार्क्सीय-लेनिनीय इन्टर्नेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय) स्थापित हुआ।

हमारी पार्टी की आठवीं कांग्रेस मार्च १९१९ में बैठी। यह परस्पर विरोधी परिस्थितियों—एक तरफ सोवियत्-सर्कार के विरुद्ध मित्रशक्ति देशों की प्रतिगामी गुट्ट और मजबूत हुई थी और दूसरी ओर युरोप में, विशेषकर पराजित देशों में, क्रान्ति की बढ़ती हुई बाढ़ ने सोवियत् देश की स्थिति को काफी बेहतर बना दिया था।

कांग्रेस में पार्टी के ३,१३,७६६ मेंबरों का प्रतिनिधित्व करने वाले ३०१ वोट वाले प्रतिनिधि और १०२ वोट रहित भाषण का अधिकार वाले प्रतिनिधि उपस्थित थे।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में लेनिन् ने, य० म० स्वेर्द्लोफ़, बोल्शेविक पार्टी के एक सर्वोत्कृष्ट संगठनकारी प्रतिभाशाली व्यक्ति य० म० स्वेर्द्लोफ़ जो कांग्रेस से जरा पहिले मर गये—की स्मृति में श्रद्धा अर्पित की।

कांग्रेस ने एक नया पार्टी प्रोग्राम स्वीकार किया। इस प्रोग्राम में पूँजीवाद और उसके उच्चतम रूप—साम्राज्यवाद का वर्णन किया है। इसमें बूर्ज्वा-जनतांत्रिक व्यवस्था और सोवियत् व्यवस्था की तुलना की गई है। इसमें दिखला दिया गया है कि साम्राज्यवाद

के लिये संघर्ष में पार्टी के खास कार्यों बूर्ज्वाजी के निःस्वत्व करने की समाप्ति, एक अकेली समाजवादी योजना के अनुसार देश के आर्थिक जीवन का प्रबन्ध, राष्ट्रीय-अर्थनीति के संगठन में मजदूर-संघों का भाग लेना; समाजवादी अनुशासन, सोवियत् संगठनों के नियंत्रण में आर्थिक क्षेत्र में बूर्ज्वा विशेषज्ञों का उपयोग; समाजवादी रचना में क्रमशः और सुव्यवस्थित तौर से मध्यवित किसानों का सहयोग।

कांग्रेस ने साम्राज्यवाद की व्याख्या (पूँजीवाद की उच्चतम अवस्था) के अतिरिक्त, औद्योगिक पूँजीवाद और द्वितीय पार्टी-कांग्रेस में स्वीकृत पुराने प्रोग्राम में आये मामूली उपभोज्य सामग्री के उत्पादन की व्याख्या को प्रोग्राम में सम्मिलित करने के लेनिन् के प्रस्ताव को स्वीकृत किया। लेनिन् ने यह जरूरी समझा कि प्रोग्राम में हमारी आर्थिक व्यवस्था की पेचीदगी का ध्यान रखना चाहिये, और देश में विभिन्न आर्थिक बनावटों—छोटी छोटी उपयोगी सामग्रियों के मध्यवित्त किसानों द्वारा उत्पादन को भी लेते हुये—की सूचना होनी चाहिये। लेनिन् ने बुखारिन् के बोल्शेविक-विरोधी इन विचारों का जोरदार खंडन किया कि पूँजीवाद, छोटी छोटी उपयोगी सामग्री का उत्पादन, मध्यवित्त किसानों की अर्थनीति के सम्बन्ध वाला भाग प्रोग्राम से निकाल दिया जाये। बुखारिन् के विचार सोवियत्-राज्य के विकास में मध्यवित्त किसानों की सेवाओं से इन्कार था जैसा कि उसके मेन्शेविक त्रोत्स्कियाई विचार बतलाते थे। और भी, बुखारिन् ने इस बात पर भी शीशा मढ़ा कि किसानों का छोटी छोटी सामग्री का उत्पादन कुलक तत्वों का पोषण करता है।

लेनिन् ने जातियों के प्रश्न पर बुखारिन् और प्याताकोफ के बोल्शेविक विरोधी विचारों का भी खंडन किया। वे लोग प्रोग्राम में जातियों के आत्म निर्णय के अधिकार वाले भाग का विरोध करते

और गरीब किसानों पर मजबूती के साथ भरोसा करते, मध्यवित्त किसानों से समझौता करना सीखो।"

(लेनिन्, संचित-ग्रन्थावली, अंग्रेजी, जिल्द ८, पृ० १५०)

यह ठीक है कि मध्यवित्त किसानों ने डाँवाडोल मनस्कता को बिल्कुल छोड़ नहीं दिया, किन्तु वे सोवियत् सर्कार के और नजदीक आ गये, और अधिक दृढ़ता के साथ इसका समर्थन करने लगे थे। इसका बहुत कुछ श्रेय आठवीं पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्धारित मध्यवित्त किसानों सम्बन्धी नीति थी।

आठवीं कांग्रेस, मध्यवित किसानों सम्बन्धी पार्टी की नीति में नया अध्याय था। लेनिन् की रिपोर्ट और कांग्रेस के निर्णय ने इस प्रश्न पर पार्टी की एक नई नीति तै की। कांग्रेस ने जोर दिया कि पार्टी-संगठनों और कम्युनिस्टों को मध्यवित्त किसानों और कुलकों के बीच एक पक्का भेद और विभाजन करना चाहिये, और पहिले की आवश्यकताओं की ओर विशेष ध्यान देकर उसे मजदूरवर्ग की ओर खींचने का प्रयत्न करना चाहिये। मध्यवित्त किसानों के पिछड़े-पन को जबर्दस्ती और दबाव न डाल कर, समझा बुझाकर दूर करना चाहिये। इसलिये कांग्रेस ने आदेश दिया कि गाँवों में समाज-वादी तरीकों (कम्यून् और कृषिसम्बन्धी सहयोग [अर्तेल] की स्थापना) का प्रचार करते वक्त जबर्दस्ती कभी नहीं करनी चाहिये। मध्यवित्त किसानों के हित से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाली सभी बातों में, उनके साथ एक व्यवहारिक समझौते पर आना चाहिये और समाजवादी परिवर्त्तनों के पूरा करने के तरीकों के बारे में रियायतें करनी चाहिये। कांग्रेस ने मध्यमवित्त किसानों के साथ स्थायी मैत्री की नीति का आदेश दिया, और कहा कि इस मैत्री में प्रोलेतरी वर्ग को नेतृत्व का स्थान ग्रहण करना चाहिये।

आठवीं कांग्रेस में लेनिन् द्वारा घोषित मध्यवित्त किसान सम्बन्धी नीति के लिये जरूरी था कि प्रोलेतरी को गरीब किसानों

मय से असन्तुष्ट थे। कांग्रेस में त्रोतस्की के "बर्तावों" की मिसालें पेश की गईं, उदाहरणार्थ, उसने कितने ही प्रमुख सैनिक कम्युनिस्टों को सिर्फ इसलिये गोली मरवाने का प्रयत्न किया, क्योंकि उन्होंने उसे नाखुश किया था। यह सीधे शत्रु के हाथ में खेलना था। सिर्फ केन्द्रीय समिति के हस्तक्षेप और सैनिकों के विरोध से ही इन साथियों की जानें बँच सकीं।

किन्तु पार्टी की सैनिक नीति के त्रोतस्की द्वारा तोड़ मरोड़ कर विरोध करते हुये "सैनिक विरुध" सेना निर्माण के सम्बन्धी कितनी ही बातों में गलत विचार रखते थे। लेनिन् और स्तालिन् ने "सैनिक विरोध" की सख्त नुक्ताचीनी की कि वे गुरिल्ला भाव के अवशेष का समर्थन करते, और नियमबद्ध लालसेना के बनाने, पुरानी सेना के सैनिक विशेषज्ञों के उपयोग और सख्त अनुशासन—जिसके बिना कोई सेना वास्तविक सेना हो नहीं सकती—का विरोध करते थे। साथी स्तालिन् ने "सैनिक विरोध" का निरसन किया, और दृढ़ अनुशासन से अनुप्राणित एक बाकायदा सेना के निर्माण पर जोर दिया।

उन्होंने कहा--

"या तो हम दृढ अनुशासन युक्त एक वास्तविक मजदूर और किसान—मुख्यतः किसान—सेना का निर्माण करें, और प्रजा तंत्र की रक्षा करें, नहीं तो हम नष्ट होंगें।"

"सैनिक-विरोध" के कितने ही प्रस्तावों को अस्वीकार करते हुये कांग्रेस ने, केन्द्रीय सैनिक-संस्थाओं के काम में सुधार और सेना में कम्युनिस्टों के महत्त्व की वृद्धि की माँग करते हुये त्रोतस्की पर प्रहार किया।

कांग्रेस के समय एक सैनिक कमीशन बैठाया गया, उसके परिश्रम से सैनिक प्रश्न पर कांग्रेस ने एक मत हो निर्णय किया।

इस निर्णय का लाभ लाल सेना को मजबूर करने और उसे पार्टी के और नजदीक लाने में हुआ।

कांग्रेस ने आगे पार्टी और सोवियत् के मामले तथा सोवियतों में पार्टी के पथ प्रदर्शन के कार्य पर विचार किया। पिछले प्रश्न पर विचार करते समय कांग्रेस ने अवसर वादी सप्रोनोफ-ओसिन्स्की ग्रूप के इस मत का खंडन किया कि पार्टी को सोवियतों के काम का पथ प्रदर्शन नहीं करना चाहिये।

आखिरी बात, पार्टी में नये मेंबरों के भारी प्रवेश को देख कर कांग्रेस ने वे तरीके बतलाये जिनसे पार्टी की सामाजिक बनावट को सुदृढ़ रखे तथा अपने मेंबरों के फिर से रजिष्टर कराने का निश्चय किया जाये।

यहीं से पार्टी सदस्यों के प्रथम विरेचन का आरम्भ हुआ।

३—हस्तक्षेप का विस्तार। सोवियत्-देश का घिरावा। कोल्चक का धावा और पराजय। तीन मास का अवकाश। नवम पार्टी-कांग्रेस

अजं जवे कोफ और कोर्गानोफ शामिल थे—जा ट्रान्स कास्पियन प्रान्त में लेजा समाजवादी-क्रान्ति कारियों की सहायता से उन्हें बड़ी निष्ठुरता से गोली मारी।

हस्तक्षेपकों ने तुरन्त रूस के खिलाफ घिरावे की घोषणा की। बाहरी जगत् से सम्बन्ध रखने के सभी समुद्र मार्ग और दूसरे यातायात के साधन तोड़ दिये।

सोवियत्-देश को करीब चारों ओर से घेर लिया गया।

मित्र शक्ति देशों का प्रधान आशा एडमिरल् कोल्चक् ओम्स्क सिबेरिया में उनके हाथ की कठपुतली पर थी। वह "रूस का प्रधान शासक" घोषित किया गया और देश की सभी क्रान्ति विरोधी ताकतों ने अपने को उसके साथ में रख दिया।

पूर्वीय क्षेत्र प्रधान युद्ध क्षेत्र बन गया।

कोल्चक् ने एक भारी सेना एकत्रित की, और १९१९ के वसन्त में वह वोल्गा के करीब तक पहुँच गया। सबसे अच्छी बोल्शेविक सेनायें उसके खिलाफ दौड़ाई गईं, तरुण कम्युनिष्ट लीगों और मजदूरों को परिचालित किया गया। अप्रेल १९१९ में, कोल्चक् की सेना के हाथों जबर्दस्त हार खानी पड़ी और शीघ्र ही वह सारी युद्ध-कतार से पीछे हटने लगी।

जिस वक्त पूर्वीय युद्ध क्षेत्र पर लाल सेना का बढ़ाव जोरों पर था, उस वक्त त्रोत्स्की ने एक संदिग्ध योजना भेजी थी: उराल पहुँचने से पूर्व बढ़ाव को रोक देना, कोल्चक् की सेना का पीछा करना छोड़ देना, और सेना को पूर्वीय क्षेत्र से दक्षिणी क्षेत्र में भेज देना। पार्टी की केन्द्रीय समिति ने भली भाँति अनुभव किया, कि उराल् और सिबेरिया को कोल्चक् के हाथ में छोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि वहाँ, जापानियों और अंग्रेजों की सहायता से कहीं वह अपनी पुरानी स्थिति को फिर सबल और पूर्ण न कर ले। इसलिये उसने इस योजना को अस्वीकार कर दिया, और आगे बढ़ने की

हिदायत दी। त्रोत्स्की ने इन हिदायतों से मतभेद जाहिर किया, और इस्तेफा दे दिया; जिसे केन्द्रीय समिति ने नहीं माना, साथ ही उसे आज्ञा दी कि तुरन्त पूर्वीय क्षेत्र की सैनिक कार्रवाइयों के संचालन में भाग लेने से बाज आवे। लालसेनाने पहिले से भी अधिक जोर के साथ कोल्चक पर आक्रमण जारी रखा, उसने उसे कई नई हारें दीं, और सफेदों के पंजों से उराल और सिबेरिया को मुक्त किया; इन जगहों में सफेदों के पिछवाड़ से जोरदार सहभागी आन्दोलन ने लालसेना को मदद पहुँचाई थी।

"वर्दी अंग्रेजी,
फ्रांस का कन्धा पर फीता,
जापानी तम्बाकू,
कोल्चक् करता नाच का नेतृत्व।
वर्दी धज्जी धज्जी,
कन्धे का फीता खतम,
वही बात तम्बाकू की,
हुये कोल्चक् दिन समाप्त।"

कोल्चक् ने उनकी आशा को पूरा नहीं किया इसलिए हस्तक्षेपकों ने सोवियत् प्रजातंत्र पर हमला करने की योजना बदल दी। ओदेस्सा में उतारी सेनाओं को लौटना पड़ा, क्योंकि सोवियत् प्रजातंत्र की सेना के संसर्ग ने उनके सैनिकों के भीतर क्रान्तिकारी भाव के कीटाणु प्रवेश किये, और उन्होंने अपने साम्राज्यवादी स्वामियों से विद्रोह करना शुरू किया था। उदाहरणार्थ, ओदस्सा में आँद्रेमर्ती के नेतृत्व में फ्रेंच नौ सैनिकों का विद्रोह। चूंकि अब कोल्चक् हराया जा चुका था, अतः मित्र शक्तियों ने अपना ध्यान जेनरल् देनिकिन्, कोर्निलोफ् के सहयोगी और "स्वयंसेवक सेना" के संगठनकर्त्ता पर दौड़ाया। उस समय देनिकिन् दक्षिण में, कूबा प्रान्त में, सोवियत् सर्कार के विरुद्ध लड़ रहा था। मित्र-शक्तियों ने उसकी सेना को बहुत परिमाण में युद्ध सामग्री और दूसरा सामान दिया, और उसे सोवियत्-सर्कार के विरुद्ध उत्तर की ओर भेजा।

दक्षिणी युद्धक्षेत्र अब मुख्य क्षेत्र बना।

१६१६ के ग्रीष्म में देनिकिन् ने सोवियत् सर्कार के विरुद्ध अपनी प्रधान सैनिक कार्रवाई शुरू की। त्रोत्स्की ने दक्षिणी युद्धक्षेत्र को विशृंखलित कर दिया था, और हमारी सेनायें हारपर हार खा रही थीं। अक्टूबर के मध्य तक सफेदों ने सारे उक्रइन् पर कब्जा

कर लिया, ओरेल् को ले लिया और तुला नगर—जो हमारी सेना को कार्तूस, वन्दूक और मशीनगन देता था—के पास पहुँच रहे थे, सफेद, मास्को के भी पास पहुँच रहे थे। सोवियत्-प्रजातंत्र की अवस्था अत्यन्त गंभीर हो गई थी। पार्टी ने खतरे का घन्टा बजाया और जनता को मुकाविला करने का आदेश दिया। लेनिन् ने नारा जारी किया, "सभी देनिकिन् के विरुद्ध लड़ने को!" बोल्शेविकों द्वारा उत्तेजित मजदूरों और किसानों ने शत्रु को चूर्ण करने के लिये अपने सारे बल को एकत्रित कर दिया।

बताती थी, और इस प्रकार हमारे देश की ईंधन की चिन्ता दूर होती।

पार्टी की केन्द्रीय समिति ने साथी स्तालिन की योजना को स्वीकृत किया। १६१६ के अक्तूबर के पूर्वार्द्ध (पुराना) में जबर्दस्त मुकाबिले के बाद ओरेल् और वोरोनेज्ह् के निर्णायक युद्धों में लाल सेना ने देनेकिन् को हराया। वह शीघ्रता से पीछे हटने लगी, और हमारी सेनाओं ने खदेड़ कर उसे दक्खिन में भगा दिया।

१६२० के आरम्भ में सारा उक्रइन् और उत्तरी काकेशस् सफेदों से खाली कर दिया गया।

दक्षिणी युद्ध क्षेत्र के निर्णायक युद्धों के समय, साम्राज्यवादियों ने हमारी सेनाओं को दक्षिण से हटवाने तथा इस प्रकार देनिकिन की सेना की स्थिति को बेहतर बनाने के अभिप्राय से पुनः युदेनिच् की सेना को पेत्रोग्राद् पर दौड़ाया। सफेद पेत्रोग्राद् के बिल्कुल दर्वाजे तक पहुँच गये थे। प्रधान नगर के बहादुर मजदूर उसकी रक्षा के लिये एक ठोस दीवार की तरह उठ खड़े हुये। सदा की भाँति, कम्युनिष्ट आगे आगे थे। जबर्दस्त लड़ाई के बाद, सफेद हरा दिये गये, और पुनः भागकर हमारी सीमा के बाहर एस्तोनिया में लौट गये।

और यह था देनिकिन् का अन्त।

कोल्चक् और देनिकिन् के पराजय के बाद थोड़ा सा अवकाश मिला।

जब साम्राज्यवादियों ने देखा कि सफेद गारद सेनायें नष्ट कर दी गईं, हस्तक्षेप असफल रहा, और सोवियत् सर्कार सारे देश में अपनी स्थिति को दृढ़ कर रही है; उसी वक्त पश्चिमी युरोप में सोवियत्-प्रजातन्त्र के अन्दर सैनिक हस्तक्षेप के विरुद्ध मजदूरों का असन्तोष बढ़ रहा था; तो उन्होंने सोवियत्-राज्य के प्रति अपने रुख

को बदलना शुरू किया। जनवरी १६२० में बृटेन, फ्रांस और इटली ने सोवियत् रूस के घिराव के उठाने का निश्चय किया।

हस्तक्षेप की दीवार में यह महत्त्वपूर्ण दरार थी।

किन्तु, इसका यह अर्थ नहीं कि सोवियत् देश हस्तक्षेप और गृहयुद्ध से मुक्त हो गया। अभी भी साम्राज्यवादी-पोलेंड की ओर से आक्रमण का डर था। अभी भी सुदूरपूर्व, काकेशिया और क्रिमिया से हस्तक्षेप करने वाली सेनायें नहीं हटी थीं। किन्तु सोवियत् रूस को दम मारने के लिये थोड़ा सा अवकाश जरूर मिला. और वह अपनी ओर अधिक शक्तियों को आर्थिक विकास की ओर लगाने में समर्थ हुआ; पार्टी अब अपना ध्यान आर्थिक समस्याओं की ओर लगा सकती थी।

यह अवस्था थी जब नवम पार्टी-कांग्रेस आरम्भ हुई।

कांग्रेस मार्च (पुराना) १६२० के अन्त में बैठी। इस में ६,११, १६८ पार्टी मेंबरों के प्रतिनिधि ५५४ वोट वाले, और १६२ वोट रहित भाषण-अधिकार वाले उपस्थित थे।

कांग्रेस ने यात यात और उद्योग के क्षेत्र में देश के तुरन्त के कामों की व्याख्या की। उसने आर्थिक जीवन के निर्माण में मजदूर संघों के भाँग लेने की अवश्यकता पर खास तौर से जोर दिया। पुनः स्थापना सर्व प्रथम रेलवे, ईंधन उद्योग और लोहा तथा फौलाद उद्योग की पुनः स्थापना के लिये एक अकेली आर्थिक योजना पर कांग्रेस ने खास तौर से ध्यान दिया। इस योजना में मुख्य बात थी देश के विद्युतीकरण की कल्पना जिसे लेनिन् ने "अगले दस या बीस साल के लिये एक महान् प्रोग्राम के तौर रखा था। यही रूस के विद्युतीकरण के लिये राज्य-कमीशन (गोएलूरो) की प्रसिद्ध योजना का आधार बना, जिसका कार्यक्षेत्र आज कहीं ज्यादा बढ गया है।

कांग्रेस ने अपने को "जनतांत्रिक केन्द्रवाद-ग्रूप" कहने वाले पार्टी विरोधी ग्रूप के विचारों का अस्वीकृत किया, यह ग्रूप एक व्यक्ति के प्रबन्ध औद्योगिक डाइरेक्टरों की अविभाजित जिम्मेवारी के विरुद्ध था। यह निराबाध "ग्रूप प्रबन्ध" का हामी था और कहता था कि उद्योग के इन्तिजाम में कोई आदमी व्यक्तिगत तौर से जवाब-देह न हो। इस पार्टी विरोधी ग्रूप में प्रधान व्यक्ति थे सप्रोनोफ, ओस्सिन्स्की और व० स्मिर्नोफ्। रुइकोफ् और तोम्स्की ने कांग्रेस में उनका समर्थन किया।

४—पोलैंड के रईसों का सोवियत् रूस पर हमला। जेनरल रंगेल का धावा। पोल योजना की निष्फलता। रंगेल की हार। हस्तक्षेप का अन्त

कोल्चक् और देनिकिन् के हारजाने पर उत्तरी भूखंड तुर्किस्तान

सिबेरिया, दोन् प्रान्त, उक्रइन् आदि से हस्तक्षेप की शक्तियों और सफेदों को हटाकर सोवियत् प्रजातंत्र दृढता से अपनी भूमि पर अधिकार जमाता जा रहा है। इस वस्तु स्थिति के होने पर भी, मित्र राज्यों के घिरावा उठाने के लिये मजबूर होने पर भी, वे अब भी इस विचार से अपने को सहमत होने से इन्कार करते थे, कि सोवियत् शक्ति ने अपने को अभेद्य साबित किया, और वह विजयी हुई। इस लिये उन्हों ने सोवियत् रूस में हस्तक्षेप करने के एक और प्रयत्न का निश्चिय किया। इस समय उन्हों ने बूर्ज्वा क्रान्ति विरोधी राष्ट्रीयता वादी, पोल् राज्य को वस्तुतः सर्वेसर्वा पिल्सुद्स्की और जेनरल रंगेल्-जिसने देनिकिन् की बची खुँची सेना को क्रिमिया में जमा किया था, और वहाँ से दोनेत्ज उपत्यका और जो उक्रइन् पर धावा बोलना चाहता था—को इस्तेमाल करने का निश्चय किया।

पोल रईस और रंगेल, जैसा कि लेनिन् ने कहा, दो हाथ थे, जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद ने सोवियत् रूस का गला घोंटना

वर लड़ाई चाहता था। उसका ख्याल था, कि कोल्चक और देनिकिन् की लड़ाइयों से थकी माँदी लालसेना पोलसेना के आक्रमण के सामने डट न सकेगी।

छोटा अवकाश खात्मे पर आया।

अप्रेल १९२० में पोलों ने सोवियत् उक्रइन पर धावा किया और कियेफ् पर कब्जा कर लिया। उसी समय रंगेल् ने आक्रमण किया और दोनेत्ज उपत्यका को खतरे में डाल दिया।

इसके उत्तर में, लालसेना ने पोलों के खिलाफ सारी सीमा पर प्रत्याक्रमण शुरू किया। कियेफ् पर फिर से कब्जा कर लिया गया, और पोल् उक्रइन् और बेलोरुसिया से खदेड़ दिये गये। लालसेना के दक्षिणी सीमा पर द्रुत बढ़ावने गलिसिया में ल्वोफ के बिल्कुल दर्वाजे पर पहुँचा दिया, पश्चिमी सीमा की सेनायें वर्सावा के पास पहुँच रही थीं। पोल् सेना चरम पराजय के करार पर पहुँच चुकी थीं।

किन्तु, लालसेना के हेडक्वार्टर में त्रोत्स्की और उसके अनुयायियों की संदिग्ध कारवाइयों के कारण सफलता विफल हो गई। त्रोत्स्की और तुखाचेव्स्की की गलती से पश्चिमी मोर्चे पर वर्सावा की ओर लालसेना का बढ़ाव बिल्कुल असंगठित ढंग से हुआ: अपने जीते भाग को सुदृढ़ करने के लिये फौजों को जरा भी अवसर नहीं दिया गया, अग्रगामी दस्तों को बहुत दूर आगे ले जाया गया, जब कि रिजर्व और युद्ध सामग्री पीछे बहुत दूर छोड़ दी गई। परिणामस्वरूप अग्रगामी दस्ते युद्धसामग्री और रिजर्व से वंचित रह गये और साम्मुख्य पंक्ति बेहद दूर तक फैली रही। इसने पंक्ति में दरार पैदा करना आसान कर दिया। परिणाम यह हुआ कि जब एक छोटी पोल सेना ने हमारे पश्चिमी मोर्चे के एक भाग को तोड़ दिया, तो हमारी सेना—जिसके पास युद्ध सामग्री न थी—पीछे लौटने पर मजबूर हुई। जहाँ तक दक्षिणी मोर्चे की सेनाओं का सम्बन्ध है वह ल्वोफ के

रंगेल, कूबन् और दोन में हमारी सेनाओं की सहायतार्थ पर्याप्त संख्या में किसानों और किसानों को जमा करने में असफल रहा। तो भी वह हमारे कोयले के प्रदेश को खतरे में डालते, दोनेत्स्क उपत्यका के बिल्कुल द्वार तक बढ़ आया। उस समय सोवियत् सरकार की स्थिति और पेचीदा हो गई थी। लाल सेना उस वक्त बहुत थकी हुई थी। इसलिए उस समय सेना में अत्यन्त कठिन स्थितियों में आगे बढ़ने के लिए मजबूर हुई: रंगेल् के विरुद्ध आक्रमण करते हुये उन्हें मखनों के अराजकवादी झुन्डों—जो कि रंगेल् की मदद कर रहे थे—को भी खतम करते चलना था। यद्यपि यान्त्रिक साधनों में रंगेल् अधिक बलवान् था, और लाल सेना के पास टैंक नहीं थे, किन्तु उसने रंगेल् को क्रिमिया के प्रायद्वीप में खदेड़ कर घेर लिया। नवम्बर (पुराना) १९२० में लाल फौजों ने पेरेकोप् के किलेबन्द स्थान पर कब्जा किया, क्रिमिया में घुस कर रंगेल की फौजों को चकनाचूर किया, और प्रायद्वीप को सफेदगारदों और हस्तक्षेपकों से खाली कर दिया। क्रिमिया सोवियत् प्रदेश हो गया।

पोलैंड की साम्राज्यवादी योजना की विफलता और रंगेल् की पराजय के साथ हस्तक्षेप-काल समाप्त हुआ।

१९२० के अन्त में काकेशिया स्वतंत्र करना आरंभ हुआ; आजुर्बाइजान्, बूर्ज्वा राष्ट्रीयतावादी मुस्सावतियों के जूए से मुक्त किया गया, जार्जिया (गुर्जी) मेन्शेविक् राष्ट्रीयतावादियों से और अर्मेनिया दर्शकों के चंगुल से आजाद हुआ। सोवियत शक्ति आजुर्बाइजान अर्मेनिया और जार्जिया में विजयी हुई।

इसका मतलब सभी तरफ के हस्तक्षेप का खात्मा नहीं है। जापानियों का हस्तक्षेप, सुदूर पूर्व में, १९२२ तक रहा। इसके अतिरिक्त हस्तक्षेप के नये प्रयत्न किये गये (अतमन् सेम्योनोफ् और बेरन् उन्गेन ने पूर्व में, फिन् सफेदों ने कारेलिया में)। किन्तु

रंगोल, कूबन् और दोन् में उतारी सेनाओं के सहायतार्थ पर्याप्त संख्या में किसानों और किसानों के जमा करने में असफल रहा। तो भी वह हमारे कोयले के प्रदेश को खतरे में डालते, दोनेत्ज उत्पत्यका के बिल्कुल द्वार तक बढ़ आया। उस समय सोवियत् सरकार की स्थिति और पेचीदा हो गई थी। लाल सेना उस वक्त बहुत थकी हुई थी। इसलिए उस समय सेना में अत्यन्त कठिन स्थितियों में आगे बढ़ने के लिए मजबूर हुई : रंगेल् के विरुद्ध आक्रमण करते हुये उन्हें मखनों के अराजकवादी झुन्डों—जो कि रंगेल् की मदद कर रहे थे—को भी खतम करते चलना था। यद्यपि यान्त्रिक साधनों में रंगेल् अधिक बलवान् था, और लाल सेना के पास टेंक नहीं थे, किन्तु उसने रंगेल् को क्रिमिया के प्रायद्वीप में खदेड़ कर घेर लिया। नवम्बर (पुराना) १९२० में लाल फौजों ने पेरेकोप् के किलेबन्द स्थान पर कब्जा किया, क्रिमिया में घुस कर रंगेल की फौजों को चकनाचूर किया, और प्रायद्वीप को सफेदगारदों और हस्तक्षेपकों से खाली कर दिया। क्रिमिया सोवियत् प्रदेश हो गया।

पोलैंड की साम्राज्यवादी योजना की विफलता और रंगेल् की पराजय के साथ हस्तक्षेप-काल समाप्त हुआ।

१९२० के अन्त में काकेशिया स्वतंत्र करना आरंभ हुआ; आजुर्बाइजान्, बूर्ज्वा राष्ट्रीयतावादी मुस्सावतियों के जूए से मुक्त किया गया, जार्जिया (गुर्जी) मेन्शेविक् राष्ट्रीयतावादियों से और अर्मेनिया दशकों के चंगुल से आजाद हुआ। सोवियत शक्ति आजुर्बाइजान अर्मेनिया और जार्जिया में विजयी हुई।

इसका मतलब सभी तरफ के हस्तक्षेप का खात्मा नहीं है। जापानियों का हस्तक्षेप, सुदूर पूर्व में, १९२२ तक रहा। इसके अतिरिक्त हस्तक्षेप के नये प्रयत्न किये गये (अतमत् सेम्योनोफ् और बेरन् उन्गेन ने पूर्व में, फिन् सफेदों ने कारेलिया में)। किन्तु

विरोध की ओर चले गये हैं, जब कि हस्तक्षेपकों और सफेद गारदों के पास ऐसे आदमी मौजूद हैं।

पुनश्च, वे अपने निश्चय को इस बात पर अवलंबित करते थे कि रूस के युद्ध-उद्योग के पिछड़े हुए होने के कारण लाल सेना के पास हथियार और युद्ध सामग्री का अभाव है। जो कुछ उसके पास है वह घटिया दर्जे का है, और वह विदेश से सामान नहीं पा सकती क्योंकि वह चारों ओर घिरावे से बंद कर दी गई है। दूसरी ओर हस्तक्षेपकों और सफेद गारदों की सेना को प्रथम श्रेणी के हथियार, युद्ध सामग्री तथा दूसरे सामान मिले हैं, और मिलते रहेंगे।

आखिरी बात, वे अपने निश्चय को इस बात पर अवलंबित करते थे कि, हस्तक्षेपकों और सफेद गारदों की सेना के कब्जे में रूस का सब से समृद्ध अनाज पैदा करनेवाला इलाका है, जब कि लाल सेना के पास वैसा कोई इलाका नहीं है, और उसके पास खाद्य सामग्री की कमी है।

और यह बात सच है, कि लाल सेना इन सभी कमियों और बाधाओं से घिरी थी।

सिर्फ इस बात में—और सिर्फ इसी एक बात में—हस्तक्षेप भद्र पुरुष बिल्कुल सच कह रहे थे।

तो इसकी व्याख्या की जा सकती है, कि लाल सेना ऐसी खतरनाक कमियों से बाधित होते हुए भी हस्तक्षेपकों और सफेद गारदों की सेना—जो कि इन कमियों से पीड़ित नहीं थी—को परास्त करने में समर्थ हुई ?

१—लाल सेना इसलिये विजयी हुई कि सोवियत् सर्कार की नीति—जिस के लिये कि वह लड़ रही थी—ठीक नीति थी, ऐसी नीति जो कि जनता के हित के अनुकूल थी, और जो कि जनता समझता

४—लालसेना इसलिये विजयी हुई, कि (क) लालसेना के आदमी युद्ध के उद्देश्य और प्रयोजन को जानते थे, और उनके न्याय होने को महसूस करते थे (ख) युद्ध के उद्देश्य और प्रयोजन के न्याय होने की स्वीकृति से उनका अनुशासन और लड़ने की योग्यता मजबूत हुई; और (ग) परिणाम स्वरूप, लालसेना ने युद्ध में शत्रु के सामने बराबर अद्वितीय स्वार्थ त्याग, बेमिसाल सार्वजनिक वीरता दिखलाई।

५—लालसेना इसलिये विजयी हुई कि उसका चालक हृदय—युद्ध क्षेत्र और पिछवाड़ दोनों में—बोल्शेविक पार्टी था, जो कि दृढ़ता और अनुशासन में एकी भूत, सर्वहित के लिये किसी तरह के स्वार्थत्याग के वास्ते तैयार रहने तथा क्रान्तिकारी जोश में मजबूत और करोड़ों को संगठित करने और पेचीदा परिस्थितियों में उनका नेतृत्व करने में अग्रणी है।

"सिर्फ इसीलिये क्योंकि पार्टी की जागरूकता और उसका कड़ा अनुशासन है," लेनिन् ने कहा, "क्योंकि पार्टी के अधिकार से सभी सर्कारी विभाग और संस्था में एकाभूत हैं; क्योंकि केन्द्रीय समिति के जारी किये नारों को दस, सौ, हजार और अन्ततः लाखों आदमी एक होकर अनुगमन करते हैं, क्योंकि अविश्वसनीय स्वार्थ-त्याग किये गये, इसीलिये यह चमत्कार (मोजिजा) हुआ, और मित्र शक्ति तथा सारे संसार के पूँजीवादियों के वारवार के आक्रमण के वाद भी हम विजयी होने में समर्थ हुए"। (लेनिन् ग्रन्थावली रूसी, जिल्द २५, पृ० ९६।)

६—लालसेना इसलिये विजयी हुई क्योंकि, (क) वह अपने आदमियों में से नये ढंग के सेनानायक—फ्रुन्जे, वोरोशिलाफ़ बुद्योन्नी आदि जैसे पुरुष—पैदा किये; (ख) उसकी पांती में जनता से आये कोतोव्स्की, चपायेफ, लाजो, श्चार, पर्खोमेन्को और कितने दूसरे—प्रतिभाशाली वीरों ने लड़ाई लड़ी, (ग) लालसेना की राज-

न थी; क्योंकि सोवियत् सर्कार के संघर्ष और उसकी सफलताओं के प्रति सारे संसार के मजदूरों की सहानुभूति और समर्थन था। जब साम्राज्यवादी, हस्तक्षेप और घिरावे द्वारा सोवियत् प्रजातन्त्र का दम घोंट देने की कोशिश कर रहे थे, उस समय साम्राज्यवादी देशों के मजदूरों ने सोवियतों का पक्ष लिया और उनकी सहायता की। सोवियत् प्रजातन्त्र के शत्रु देशों के पूँजीवादियों के खिलाफ उनके संघर्ष ने आखिर में साम्राज्यवादियों का घिरावा हटाने के लिये मजबूर किया। बृटेन, फ्रांस और दूसरी हस्तक्षेपक शक्तियों के मजदूरों ने हड़तालें बुलाईं, आक्रमणकारियों और सफेद गारद जेनरलों के लिये भेजी जाने वाली युद्ध सामग्री को लादने से इन्कार कर दिया, और युद्ध सम्मितियाँ कायम कीं, जिनका काम "रूस से हाथ हटाओ!"—स्लोगन् के अनुसार होना था।

"अन्तर्राष्ट्रीय बूर्ज्वाजी को हमारे खिलाफ अथवा हाथ हटाना पड़ा, सिर्फ इसीलिये कि उनके अपने मजदूर उसे पकड़ने लगे थे, लेनिन ने कहा। (वहीं, पृ० ४०५।)

संक्षिप्त सार

अक्तूबर क्रान्ति द्वारा पराजित जमींदारों और पूँजी-पतियों ने सफेद गारद जेनरलों से साथ मित्र देशों की सर्कारों से मिल कर अपने ही देश के हित के खिलाफ, सोवियत् भूमि पर एक संयुक्त सशस्त्र हमला करने तथा सोवियत् सर्कार को उलटने के लिये षड्यंत्र किया। यही था आधार रूस के सीमान्त प्रदेशों में। मित्र शक्तियों के सैनिक हस्तक्षेप और सफेद गारद विद्रोहों का, जिसके परिणाम स्वरूप रूस का, खाद्य और कच्चे माल के स्रोतों से सबंध कट गया।

जर्मनी की सैनिक पराजय और युरोप के दो साम्राज्यवादी ग्रहों में युद्ध के खात्मे ने मित्र शक्तियों को मजबूत किया, हस्तक्षेप को गहरा किया और सोवियत् रूस के लिये नई कठिनाइयां पैदा कीं।

न थी; क्योंकि सोवियत् सर्कार के संघर्ष और उसकी सफलताओं के प्रति सारे संसार के मजदूरों की सहानुभूति और समर्थन था। जब साम्राज्यवादी, हस्तक्षेप और घिरावे द्वारा सोवियत् प्रजातन्त्र का दम घोंट देने की कोशिश कर रहे थे, उस समय साम्राज्यवादी देशों के मजदूरों ने सोवियतों का पक्ष लिया और उनकी सहायता की। सोवियत् प्रजातन्त्र के शत्रु देशों के पूँजीवादियों के खिलाफ उनके संघर्ष ने आखिर में साम्राज्यवादियों का घिरावा हटाने के लिये मजबूर किया। बृटेन, फ्रांस और दूसरी हस्तक्षेपक शक्तियों के मजदूरों ने हड़तालें बुलाईं, आक्रमणकारियों और सफेद गारद जेनरलों के लिये भेजी जाने वाली युद्ध सामग्री को लादने से इन्कार कर दिया, और युद्ध सम्मितियाँ कायम की, जिनका काम "रूस से हाथ हटाओ!"—स्लोगन् के अनुसार होना था।

"अन्तर्राष्ट्रीय बूर्ज्वाजी को हमारे खिलाफ अथवा हाथ हटाना पड़ा, सिर्फ इसीलिये कि उनके अपने मजदूर उसे पकड़ने लगे थे, लेनिन् ने कहा। (वहीं, पृ० ४०५।)

संक्षिप्त सार

अक्तूबर क्रान्ति द्वारा पराजित जमींदारों और पूँजी-पतियों ने सफेद गारद जेनरलों से साथ मित्र देशों की सर्कारों से मिल कर अपने ही देश के हित के खिलाफ, सोवियत् भूमि पर एक संयुक्त सशस्त्र हमला करने तथा सोवियत् सर्कार को उलटने के लिये षड्यंत्र किया। यही था आधार रूस के सीमान्त प्रदेशों में। मित्र शक्तियों के सैनिक हस्तक्षेप और सफेद गारद विद्रोहों का, जिसके परिणाम स्वरूप रूस का, खाद्य और कच्चे माल के स्रोतों से सबंध कट गया।

जर्मनी की सैनिक पराजय और युरोप के दो साम्राज्यवादी ग्रहों में युद्ध के खात्मे ने मित्र शक्तियों को मजबूत किया, हस्तक्षेप को गहरा किया और सोवियत् रूस के लिये नई कठिनाइयां पैदा कीं।

दूसरी ओर, जर्मनी में क्रान्ति और युरोपीय देशों के अज्ञतापूर्ण क्रान्तिकारी आन्दोलन ने सोवियत्-शक्ति के लिये अनुकूल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पैदा की, और सोवियत् प्रजातंत्र की स्थिति में सहायता पहुँचाई।

बोल्शेविक पार्टी ने मजदूरों और किसानों को पितृभूमि के लिये युद्ध, विदेशी आक्रमण कारियों और बूर्ज्वा तथा जमींदार सफेद गारदों के खिलाफ युद्ध के वास्ते उभाड़ा। सोवियत् प्रजातंत्र और उसकी लालसेना ने, मित्र शक्तियों की कठपुतलियां—कोल्चक्, युदेनिच् देनिकिन्, क्रास्नोफ् और रंगेल्—को एक के बाद हराया, और मित्र शक्तियों की दूसरी कठपुतली पिल्सुद्की को उक्रइन् और बैलासूसिया से भगाया, और इस प्रकार विदेशी हस्तक्षेप को मार भगाया, और उन्हें सोवियत् देश से बाहर किया।

इस प्रकार समाजवाद की भूमि पर अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवाद का प्रथम सशस्त्र आक्रमण बिल्कुल विफल रहा।

हस्तक्षेपकाल में क्रांति द्वारा परास्त पार्टियों—समाजवादी क्रांतिकारियों, मेन्शेविकों, अराजकतावादियों और राष्ट्रीयतावादियों ने सफेद गारद जेनरलों और आक्रमण कारियों का समर्थन किया, सोवियत्-प्रजातंत्र के विरुद्ध क्रांति विरोधी षड़यंत्र रचा, और सोवियत् नेताओं के विरुद्ध आतंकवाद का सहारा लिया। इन पार्टियों ने—जो कि अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व मजदूर वर्ग पर कुछ मात्रा में प्रभाव रखती थीं, जनता की दृष्टि में गृह युद्ध के समय अपने को क्रांति विरोधी पार्टियों के रूप में खोल दिया।

गृह युद्ध और हस्तक्षेप के समय इन पार्टियों का राजनीतिक ध्वंस और सोवियत् रूस में कम्युनिस्ट पार्टी की अन्तिम विजय हुई।

अध्याय नवां

संक्रांतिकाल में आर्थिक रचना के शान्तिपूर्ण कार्य के लिये बोल्शेविक् पार्टी

(१९२१-१९२५)

१—हस्तक्षेप के पराजय और गृहयुद्ध की समाप्ति के बाद सोवियत् प्रजातंत्र। पुनः स्थापना काल की कठिनाइयाँ।

युद्ध को खतम करके सोवियत् प्रजातंत्र ने अपना ध्यान शान्तिपूर्ण आर्थिक विकास के काम की ओर दौड़ाया। युद्ध के घाव को भरना था। देश के ध्वस्त आर्थिक जीवन को पुनर्निर्मित करना था, उसकी रेलें, उद्योग और खेती को पुनः स्थापित करना था।

किन्तु शान्तिपूर्ण विकास के काम में अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के भीतर से हाथ लगाना था। गृहयुद्ध में विजय आसान नहीं थी। ४ साल में साम्राज्यवादी युद्ध और तीन वर्ष के हस्तक्षेप विरोधी युद्ध में देश खंडहर की अवस्था में पहुँच गया था।

१९२० की सारी कृषि-आय युद्ध के पूर्व की आय—जारशाही के दिनों के दरिद्रता के शिकार रूसी दीहात की आय की आधी थी। स्थिति को और बदतर बनाने के लिये, १९२० में कई प्रान्तों में फसल नष्ट हो गई। कृषि भारी विपद में थी।

उद्योग की स्थिति तो और भी बुरी थी, वह बिल्कुल विश्रृङ्खलित थी। १९२० में बड़े पैमाने के उद्योग की उपज युद्ध के पहले से $\frac{1}{7}$ से

जरा सा ज्यादा थी। अधिकांश मिलें और फेक्टरियाँ बिल्कुल बन्द थीं; खानें और कोहलरियाँ विनष्ट और पानी से डूबी थीं। सबसे ज्यादा विषम अवस्था थी लोहे और फौलाद के उद्योग की। १९२१ में कुल कच्चा लोहा ५, १६, ३०० टन यानी प्राग्युद्ध का ३ सैकड़ा हुआ था। ईंधन की कमी थी। यतायात ठंड-मंड हो गया था। देश में धातुओं, कपड़ों का जखीरा क़रीब-क़रीब खतम हो चुका था। रोटी, चर्बी, मांस, जूता, पोशाक, दियासलाई, नमक, केरासिन और साबुन जैसी अत्यन्त जरूरी चीजों का बड़ा अकाल था।

जब युद्ध चल रहा था, तो लोग कभी दुर्लभता और कभी उसके अभाव को भी बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन अब, जब कि युद्ध समाप्त हो गया था, तो एकाएक उनको मालूम होने लगा कि यह कमी और दुर्लभता असह्य है, और वे तुरन्त उपाय करने के लिये जोर देने लगे।

किसानों में असन्तोष प्रकट हुआ। गृहयुद्ध की आग ने मजदूर-वर्ग और किसानवर्ग में एक सैनिक और राजनीतिक मैत्री को परिपूर्ण और मजबूत किया था। यह मित्रता एक निश्चित आधार पर अवलंबित थी; किसानों ने सोवियत् सरकार से भूमि और जमींदारों और कुलकों से त्राण पाया था; मजदूर अतिरिक्त-आदान व्यवस्था के अनुसार किसानों से खाद्य-सामग्री पाते थे।

अब यह आधार पर्याप्त न था।

राष्ट्र-रक्षा की जरूरत के लिये सोवियत् राज्य, किसानों से सभी अतिरिक्त उपज को ले लेने के लिये मजबूर था। अतिरिक्त-आदान व्यवस्था के बिना, युद्ध-साम्यवाद की नीति के बिना गृह-युद्ध में विजय असंभव होती। युद्ध और हस्तक्षेप के कारण वह नीति आवश्यक थी। जब तक युद्ध हो रहा था, तब तक अतिरिक्त-

आदान व्यवस्था द्वारा किसान दबाये जाते थे, और चीजों की कमी का ख्याल नहीं करते थे। लेकिन जब युद्ध खतम हो गया, और अब फिर जमींदारों के लौटने का डर था, तो किसान अपनी सारी बचत को दे देने में अतिरिक्त-आदान व्यवस्था से असन्तोष प्रकट करने, तथा उपयोगी चीजों की पर्याप्त परिमाण में माँग करने लगे।

लेनिन् ने बतलाया "युद्ध साम्यवाद की सारी व्यवस्था किसानों के हित के साथ टकराने लगी।"

असन्तोष का भाव मजदूर वर्ग में भी फैलने लगा। कमकर वर्ग ने गृहयुद्ध की सारी मुसीबतों को सहा, वह सफेद गारदों, विदेशी लुटेरों, और आर्थिक प्रलय और अकाल के राक्षसों के साथ बहादुरी के साथ, स्वार्थ त्याग के साथ लड़ा। सर्वश्रेष्ट, अत्यन्त वर्ग चेतनावान्, स्वार्थत्यागी और अनुशासन भक्त मजदूर, समाजवादी उत्साह से उत्प्राणित थे। किन्तु उस नितान्त आर्थिक प्रलय का असर मजदूर वर्ग पर भी पड़ा। थोड़ी फेक्टरियाँ और कारखानें जो अब भी चल रहे थे, वे चल रहे थे बेढंगेतौर से। मजदूर जीविका के लिये ऊटपटांग काम—सिग्रेट जलावन बनाना, फेरी करना—में लगे हुये थे। प्रोलेतारीय-अधिनायकत्व का वर्ग-आधार कमजोर होने लगा था; मजदूर गाँवों की ओर बिखर रहे थे, भाग रहे थे, वे मजदूरपन को छोड़कर वर्गभ्रष्ट हो रहे थे। कितने मजदूर भूख और थकावट के कारण अशान्ति का चिन्ह प्रकट कर रहे थे।

देश के आर्थिक जीवन पर प्रभाव डालने वाले सभी प्रश्नों संबंधी नीति की एक नई दिशा—एक ऐसी दिशा जो नई स्थिति का मुकाबिला कर सके—के निकालने की जरूरत पार्टी के सामने थी।

और पार्टी ने आर्थिक विकास के प्रश्नों पर ऐसी नीति की दिशा में विचार करना शुरू किया।

लेकिन वर्ग शत्रु ऊँघ नहीं रहे थे। उन्होंने किसानों की पीड़ा जनक आर्थिक स्थिति और असन्तोष को अपने मतलब के लिये उभाड़ने का प्रयत्न किया। सिबेरिया, उक्रइन् और तम्बोफ़् प्रान्त (अन्तोनोफ़् का विद्रोह) में सफेद गारदों और समाजवादी—क्रांतिकारियों द्वारा संगठित कुलकों के विद्रोह फूट पड़े। फिर सभी तरह के क्रांति विरोधी तत्त्व (मेन्शेविक् समाजवादी-क्रांतिकारी, अराजकतावादी, सफेद गारद, बूर्ज्वा राष्ट्रीयतावादी.) सचेष्ट हो गये। शत्रु ने सोवियत्—शासन के विरुद्ध संघर्ष की नई चाल अख्तियार की। उसने सोवियत्—चोले को उधार लेना शुरू किया, और उसका नारा वह पुराना दीवालिया नारा "सोवियवों की जय!" नहीं, बल्कि नया नारा था "सोवियतों के लिये, किन्तु बिना साम्यवाद के।"

वर्ग शत्रु की नई चाल जबर्दस्त उदाहरण क्रोन्स्तात् की क्रान्ति विरोधी बलवा था। यह मार्च १९२१ में तीसरी (दसवीं) पार्टी कांग्रेस से एक सप्ताह पूर्व आरंभ हुआ। समाजवादी-क्रांतिकारियों, मेन्शोविकों और विदेशी राज्य के प्रतिनिधियों की राह में सफेद गारदों इस बलवे के नेता बने थे। पूँजीपतियों और जमींदारों की सम्पत्ति और शक्ति को लौटाने के अपने अभिप्राय को छिपाने के लिये बलवाइयों ने पहिले "सोवियत्" साइनबोर्ड इस्तेमाल किया। उन्होंने आवाज उठाई, "सोवियत बिना साम्यवाद की।" एक बनावटी सोवियत् के नारे की आड़ में क्रांति विरोधियों ने सोवियतों की शक्ति को उलटने के लिये निम्न मध्यम वर्गी जनता के असन्तोष से फायदा उठाने की कोशिश की।

दो बातों ने क्रोन्स्तात् बलवे के उठने में आसानी पैदा की। जहाजों के कर्मियों की बनावट में विकार पैदा होना, और क्रोन्स्तात् में बोल्शेविक संगठन की निर्बलता। प्रायः सारे ही नौ सैनिक—जिन्होंने अक्तूबर क्रांति में भाग लिया था—युद्ध क्षेत्र में लालसेना के अंग के

तौर पर बहादुरी के साथ लड़ रहे थे। नौ सैनिक भरती नये आदमियों की हुई थी, जिन्हें क्रांति की पाठशाला में जाने का अवसर नहीं मिला था। वे सभी कच्ची किसान जनता थी जो अतिरिक्त-आदान-व्यवस्था के खिलाफ किसानों के असन्तोष को प्रकट कर रही था। जहां क्रोन्स्तात् में बोल्शेविक संगठन का संबंध है, वह युद्धक्षेत्र के लिये कई प्रमाणों के कारण बहुत निर्बल हो गया था! इसके कारण समाजवादी-क्रांतिकारियों, मन्शेविकों और सफेद गार्डों को क्रोन्स्तात् में घुसने तथा उसपर अधिकार करने का मौका मिल गया।

बलवाइयों ने एक प्रथम श्रेणी के किले, बेड़े और भारी परिमाण में हथियार और युद्ध सामग्री पर कब्जा पा लिया। अन्तर्राष्ट्रीय क्रांति विरोधी खुश होने लगे। किन्तु उनकी खुशी समय से पहिले थी। सोवियत् सेना ने बलवे को शीघ्र दबा दिया। क्रोन्स्तात् के बलवाइयों के विरुद्ध पार्टी ने अपने सर्व श्रेष्ठ पुत्रों—साथी वोरोशिलोफ के नायकत्व में दशम कांग्रेस के प्रतिनिधियों—को भेजा। लाल सेना के आदमी एक पतले वर्फ की चादर पर से क्रोन्स्तात् की ओर गये, कहीं कहीं बर्फ टूट गया और कितने ही पानी में डूब गये। प्राय: अभेद्य क्रोन्स्तात् के दुर्गों को सामने से धावा बोलकर लेना था, किन्तु क्रांति के लिये भक्ति, वीरता और सोवियत् के वास्ते मरने के लिये तत्परता ने उस दिन जीत पाई। लालसेना के प्रहार के सामने क्रोन्स्तात् का किला परास्त हुआ। क्रोन्स्तात् का बलवा दबा दिया गया।

२—मजदूर-सङ्घ पर पार्टी में विचार। दशम पार्टी-कांग्रेस। विरोधी पक्ष की हार। नव-आर्थिक नीति का स्वीकार।

पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा उसके लेनिनीय बहुमत ने साफ देखा कि अब जब कि युद्ध समाप्त हो गया और देश शान्ति पूर्ण

आर्थिक विकास की ओर लगा है, युद्ध-साम्यवाद के कड़े शासन को कायम रखने का अब कोई कारण नहीं है!

केन्द्रीय समिति ने अनुभव किया कि अतिरिक्त-आदान व्यवस्था की जरूरत खतम हो गई, समय आ गया है कि उसके स्थान पर जिन्सी कर लगाया जावे, जिसमें किसान अपने वंचित (अतिरिक्त) अनाज के अधिक भाग को अपने इच्छानुसार इस्तेमाल करें। केन्द्रीय समिति ने अनुभव किया कि इस व्यवस्था से कृषि को पुनरुज्जीवित करना, उद्योग के विकास के लिये आवश्यक औद्योगिक फसल और अनाज की खेती को बढ़ाना, सौदे की चीजों के प्रचार का पुन-जागृत करना, नगर के लिये सामान में सुधार करना, और एक नई नींव—मजदूरों और किसानों की मैत्री के लिये एक आर्थिक नींव का निर्माण करना सम्भव हो।

केन्द्रीय समिति ने यह भी अनुभव किया कि उद्योग को पुनरुज्जीवित करना मुख्य कार्य है, किन्तु सोचा कि बिना मजदूर वर्ग और उसके मजदूर-सङ्घों की सहायता को पाये यह नहीं किया जा सकता; उसने सोचा कि मजदूरों को यह दिखा कर इस काम में साथ लिया जा सकता है कि आर्थिक ध्वन्स जनता का इतना ही खतरनाक शत्रु है, जितने कि हस्तक्षेप और घिरावे थे, और पार्टी और मजदूर-सङ्घ निश्चय इस काम में कामयाब हो सकते हैं, यदि वे मजदूर-वर्ग पर अपने प्रभाव का उपयोग सैनिक हुक्म—जैसा कि युद्ध क्षेत्र में रहा, जहां कि हुक्म वस्तुतः आवश्यक थे—द्वारा नहीं, बल्कि उसे समझाने बौद्धिक तुष्टि करने के तरीके द्वारा करें।

लेकिन पार्टी के सभी मेम्बर केन्द्रीय समिति के विचारों के ही नहीं थे। छोटे विरोधी, छै और सात गुट्ट—त्रोत्सियाई, "मजदूर-विरोध", "वाम साम्यवादी", "जनतांत्रिक-केन्द्रवादी", आदि—शान्ति पूर्ण आर्थिक रचना की संक्रान्ति के सम्बन्ध की कठिनाइयों का मुकाबिला करने में विचलित और डांवाडोल हो रहे थे। पार्टी

में मेन्शेविक, समाजवादी-क्रान्तिकारी, "बन्ड" और त्रोत्स्कीय पार्टियों के भूतपूर्व मेंबर तथा रूस के सीमान्त प्रदेशों के सभी किस्म के अर्ध राष्ट्रीयतावादी थे। इसमें से अधिकांश किसी न किसी विरोधी गुट्ट से मिल गये। ये लोग वास्तविक मार्क्सवादी न थे, वे और आर्थिक विकास के नियमों से अनभिज्ञ थे; उन्हें लेनिनीय-पार्टी की पाठशाला में रहने का मौका नहीं मिला था, और उन्होंने विरोधी गुट्टों के संभ्रम और डांवाडोल मनस्कता को बढ़ाने में सिर्फ मदद भर किया। उनमें से कितने ही सोचते थे कि युद्ध साम्यवाद के कड़े शासन को ढीला करना बुरा होगा, इसके विरुद्ध "स्क्रू को कड़ा करना चाहिये।" दूसरे सोचते थे कि पार्टी और राज्य को आर्थिक पुनः स्थापना से अलग हो जाना चाहिये, इसे बिल्कुल मजदूर सङ्घों के हाथों में छोड़ देना चाहिये।

यह निश्चित था, कि जब ऐसी डांवाडोल मनस्कता पार्टी के कुछ ग्रूपों में हो तो विवाद के प्रेमी, एक या दूसरे प्रकार के विरोधी "नेता" पार्टी पर विवाद लादने का अवश्य प्रयत्न करेंगे।

और ठीक ऐसा ही हुआ।

विवाद मजदूर-सङ्घों के स्थान पर हुआ, यद्यपि उस समय मजदूर संघ, पार्टी-नीति की प्रधान समस्या नहीं थे।

यह त्रोत्स्की था, जिसने कि लेनिन और एक केन्द्रीय समिति के लेनिनीय बहुमत के खिलाफ विवाद और झगड़े का आरम्भ किया। स्थिति को और गम्भीर बनाने के ख्याल से, पंचम अखिल रूसी मजदूर-संघ-कान्फ्रेन्स—जो कि नवम्बर (पुराना) १६२० के आरम्भ में बैठी थी—वे कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों की बैठक में "स्क्रू को कड़ा करो" और "मजदूर-संघों को हिलाओ" इन संदिग्ध नारों के साथ बहस की। त्रोत्स्की ने जोर दिया कि मजदूर-संघों को तुरन्त "सरकारी" बना दिया जाये। वह मजदूर वर्ग के सम्बन्ध में समझाव के विरुद्ध था, और मजदूर-संघों में जन तन्त्रता के विस्तार

के विरुद्ध, मजदूर-संघ-संस्थाओं के चुनाव के सिद्धान्त के विरुद्ध था।

समझाने-बुझाने के तरीके—जिनके बिना मजदूर-वर्ग सङ्गठनों के कामों की कल्पना भी नहीं हो सकती—की जगह त्रोत्स्कियाइयों का प्रस्ताव था, बिलकुल मजबूर करने, बाध्य करने के तरीकों का। जहां कहीं वे मजदूर-संघों में उनका नेतृत्व था, वहां इस नीति का उपयोग करके त्रोत्स्कियाइयों ने संघों में बिगाड़, फूट और भय पैदा किया। अपनी नीति से त्रोत्स्कियाई अ-पार्टी मजदूरों को पार्टी के खिलाफ खड़ा कर रहे थे, मजदूर वर्ग में फूट पैदा कर रहे थे।

वस्तुतः, मजदूर-संघ संबंधी विवाद को मजदूर-संघ के प्रश्न से भी बढ़ कर समझा गया। जैसा कि पीछे रूसी कम्युनिस्टपार्टी (बोल्शेविकों) की केन्द्रीय समिति के प्लेनम् (सामयिक बैठक) के प्रस्ताव में पीछे, जनवरी, १९२५ को स्वीकार किया गया, असली विचारणीय विषय था "किसानों के साथ स्वीकार की जाने वाली नीति, जो कि युद्ध साम्यवाद के खिलाफ खड़े हो रहे थे, अपार्टी मजदूरों के साथ स्वीकार की जानेवाली नीति, और आम तौर पर, गृह-युद्ध की समाप्ति पर पहुँचते वक्त जनता के पास पार्टी की पहुँच का तरीका होना चाहिये।" (मम्युनिस्ट पार्टी सोवियत-संघ बोल्शेविक के प्रस्ताव, रूसी, खंड १, पृ० ६५१।)

दूसरे पार्टी-विरोधी ग्रूपों—"मजदूर-विरोध" (श्ल्यप्निकोफ, मेद्वेद्येफ कोल्तोन्ताद आदि,) "जन तांत्रिक-केन्द्रवादी" (सप्रोनोफ, द्रोब्निस, बोगुस्लास्की, ओस्सिन्स्की, व स्मिर्नोफ आदि), "वाम साम्यवादी" (बुखारिन्, प्र्योब्रज्हेन्स्की)—ने भी त्रोत्स्की का अनुसरण किया।

"मजदूर-विरोध" ने यह जोर देते हुए स्लोगन् रखा, कि सारी राष्ट्रीय अर्थनीति का प्रबन्ध एक "अखिल रूसी-उत्पादक-कांग्रेस" के हाथ में दिया जावे। वे पार्टी के अधिकार को शून्य में परिणत करना चाहते थे, और आर्थिक विकास में प्रोलेतारी के अधिनायकत्व

को इन्कार करते थे। "मजदूर-विरोध" का कहना था कि मजदूर-संघों के हित सोवियत् राज्य और कम्युनिस्ट पार्टी के विरोधी हैं, उनका कहना था कि पार्टी नहीं बल्कि मजदूर-संघ मजदूर-वर्ग संगठन के सर्वोच्च रूप हैं। "मजदूर-विरोध" स्त्रोतः अराजक-सेंडिकलीय पार्टी विरोधी ग्रूप था।

"जनतांत्रिक-केन्द्रवादी" (Decist), टुकड़ा और ग्रूप बनाने की पूर्ण स्वतंत्रता पर जोर देते थे। त्रोत्स्कियाइयों की भांति, "जनतांत्रिक-केन्द्रवादी" सोवियतों तथा मजदूर संघों में पार्टी के नेतृत्व को नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे। लेनिन् "जनतांत्रिक-केन्द्रवादियों" को "हल्ला-विजेता" और उनके मन्त्र को समाजवादी-मेन्शेविक मन्च करते थे।

लेनिन् और पार्टी के खिलाफ लड़ने में बुखारिन् त्रोत्स्की का सहायक था। प्र्योब्रज्हेन्स्की, सेरेब्राकोफ़् और सोकोल्निकोफ़् के साथ बुखारिन् ने एक "बिचबिचवा" ग्रूप बनाया था। यह ग्रूप सभी विग्रहियों में सबसे दुष्ट त्रोत्स्कियाइयों का बचाव और पक्ष समर्थन करता था। लेनिन् ने कहा कि बुखारिन् का व्यवहार "सैद्धान्तिक दुष्टता की पूर्णता" थी। बहुत जल्दी ही बुखारिनीय, लेनिन् के विरोध में त्रोत्स्कियाइयों से मिल गये।

लेनिन् और लेनिनीयोंने पार्टी-विरोधी ग्रूपीकरण की रीढ़ त्रोत्स्कियाइयों पर प्रहार शुरू किया। उन्होंने मजदूर-संघों और सैनिक संस्थाओं के बीच के फर्क की उपेक्षा करने के लिये त्रोत्स्कियाइयों की निन्दा की और चेतावनी दी कि सैनिक तरीके मज़दूर-संघ में नहीं चल सकते। लेनिन् और लेनिनीयों ने अपनी निजी नीति विरोधी ग्रूपों की नीतियों से अन्तरङ्गतौर पर बिल्कुल उलटा बनाई। इस नीति में मज़दूर-सङ्घ को शासन का स्कूल-प्रबन्ध का स्कूल-साम्यवाद का स्कूल माना गया। और बतलाया गया कि मज़दूर-सङ्घों को अपने सभी कार्यों में समझाने-बुझाने के तरीके अवलंबित

करना चाहिये; तभी मज़दूर-सङ्घ आर्थिक ध्वंस को रोकने के लिये सारे मज़दूरों को उभाड़ सकेगा, और उन्हें समाजवादी निर्माण में लगाने में समर्थ होगा।

विरोधी ग्रूपों के साथ इस लड़ाई में पार्टी के सगठन लेनिन् के साथ थे। संघर्ष ने मास्को में खासतौर से गंभीर रूप धारण किया। यहाँ विरोधियों ने राजधानी के पार्टी संगठन पर कब्जा करने के अभिप्राय से अपनी प्रधान ताकतों को एक ओर लगा दिया था। किन्तु यह फूट कराने की चालें मास्को के बोल्शेविकों के जोशीले मुकाबिले के कारण विफल हो गईं। उक्रइनीय पार्टी संगठनों में भी कठिन संघर्ष चला। साथी मोलोतोफ़्—जो उस समय उक्रइनीय कम्युनिस्ट-पार्टी की केन्द्रीय-समिति के मंत्री थे—के नेतृत्व में उक्रइनीय बोल्शेविकों ने त्रोत्स्कियाइयों और श्ल्यप्निकोवियों को परास्त किया। उक्रइनीय कम्युनिस्ट-पार्टी लेनिन्-पार्टी की विश्वास पात्र सहायक बनी रही बाकूमें विरोधियों को भग्न-मनोरथ करने का काम साथी ओर्द् जोनिकद्ज़े के नेतृत्व में हुआ। मध्य-एसिया में पार्टी-विरोधी ग्रूपों के विरुद्ध लड़ाई का नेता साथी कगानोविच् था।

पार्टी के सभी महत्त्वशाली स्थानीय संगठनों ने लेनिन् की नीति का समर्थन किया।

८ (२१) मार्च, १९२१ को दशम पार्टी-कांग्रेस आरंभ हुई। कांग्रेस में ७, ३१, ५२१ पार्टी-मेंबरों के वोट वाले ६९४ प्रतिनिधि और वोट रहित भाषण-अधिकार वाले २९६ प्रतिनिधि शामिल हुए थे।

कांग्रेस ने मजदूर-संघ-संबंधी विवाद का उपसंहार किया और बड़े भारी बहुमत से लेनिन् के मंत्र का समर्थन किया।

कांग्रेस का उद्घाटन करते हुये लेनिन् ने कहा कि विवाद एक अक्षम्य विलास रहा। उन्होंने घोषित किया कि शत्रुओं ने भीतर

से पार्टी संघर्ष और कम्युनिस्ट-पार्टी के सदस्यों में फूट की कल्पना की थी। भेदक ग्रुपों का अस्तित्व बोल्शेविक पार्टी और प्रोलेतारीय अधिनायकत्व के लिये निहायत खतरनाक है इसे अनुभव करते हुये, दशम पार्टी-कांग्रेस ने पार्टी-एकता पर विशेष ध्यान दिया। इस प्रश्नपर लेनिन् ने रिपोर्ट की। कांग्रेस ने सभी विरोधी ग्रुपों के खिलाफ निन्दा का प्रस्ताव पास किया और साबित किया, कि वे "वस्तुतः प्रोलेतारी क्रांति के वर्ग शत्रुओं की सहायता कर रहे हैं।"

कांग्रेस ने सभी भेदक ग्रुपों को तुरन्त तोड़ देने की आज्ञा दी, और सभी पार्टी-संगठनों में भेदवाद के किसी तरह फूटने को रोकने के लिये, कड़ी निगाह रखने की हिदायत दी, और कहा कि कांग्रेस के निर्णय की अवहेलना करने पर मेंबर को बिना शर्त के और तुरन्त पार्टी से निकाल देना होगा। केन्द्रीयसमिति को अधिकार दिया कि यदि संस्था के मेंबर अनुशासन भंग करें, या भेदवाद का पुनरुज्जीवन या सहन करें, तो उनके खिलाफ सभी पार्टी दंड— केन्द्रीय समिति और पार्टी से निकालने का लेते हुये—को इस्तेमाल किये जावें।

ये निर्णय लेनिन् द्वारा प्रस्तावित और कांग्रेस द्वारा स्वीकृत "पार्टीएकता" संबंधी एक खास प्रस्ताव के रूप में आये थे।

इस प्रस्ताव में कांग्रेस ने सभी पार्टी-मेंबरों को स्मरण दिलाया था कि पार्टी के सदस्यों की एकता और संबद्धता, प्रोलेतारी वर्ग के अग्रगामी की इच्छा को एक मतता खास कर आवश्यक हैं, ऐसे (दशम कांग्रेस के समय), जब कि कितनी ही परिस्थितियों ने देश की निम्न मध्यम वर्गीय जनता में डांवा डोल मनस्कता को बढ़ा दिया है।

प्रस्ताव में कहा गया था "इसके अलावा, मजदूर-संघों संबंधी पार्टी के साधारण विवाद के पहिले भी पार्टी के भीतर भेदवाद के कितने ही लक्षण पृथक् नीतियों के साथ ग्रूपों की स्थापना, कुछ हद

तक विलगाव और अपने निजी ग्रूप-अनुशासन का बनाना-प्रकट हुये थे। सभी वर्ग चेतनावान् कमकरों को किसी प्रकार का भी भेदवाद भयंकर अननुज्ञेय है इसे साफ तौर से महसूस करना चाहिये, क्योंकि भेदवाद व्यवहार में टीम जोड़ी दाराना काम को कमज़ोर करता है। साथ ही वह पार्टी के शत्रुओं—जिन्होंने कि शासक पार्टी होने के कारण उससे अपने को इसलिये बाँध रक्खा है कि पार्टी में फूट को बढ़ायें और उसे क्रांति विरोधी प्रयोजनों के लिये इस्तेमाल करें—की ओर से लगातार और कड़े आक्रमण का कारण बनता है। पुनश्च उसी प्रस्ताव में कांग्रेस ने कहा था।

"किस तरह प्रोलेतरी वर्ग के शत्रु पूर्णतया पक्की साम्यवादी नीति के प्रत्येक हटाव से फायदा उठाते हैं, इसे क्रोन्स्तात् बलवे की घटना ने बड़ी साफ तौर से दिखला दिया, जब कि संसार के सभी देशों के बूर्ज्वा क्रांति विरोधियों और सफेद गारदों ने तुरन्त सोवियत्-व्यवस्था के नारों की स्वीकृति के लिये अपने को तय्यार जाहिर किया, यदि उसके द्वारा वे रूस में प्रोलेतारीय अधिनायकत्व को उलट सकें और जब कि समाजवादी-क्रान्तिकारी और बूर्ज्वा क्रान्ति बिरोधियों ने साधारण रूपेण क्रोन्स्तात् में बाहर से सोवियत् के हित के लिये सोवियत् सर्कार के खिलाफ विद्रोह करने के वास्ते नारे इस्तेमाल किये। यह घटनायें अच्छी तरह सिद्ध करती हैं कि सफेद गारद अपने को साम्यवादी और बल्कि साम्यवादियों से भी "अधिक गर्म" लोग दिखलाने में समर्थ है यह सिर्फ इस मतलब के लिये कि वे रूस में प्रोलेतरी क्रान्ति की किला बन्दी को निर्बल करें और उलट सकें। इसी तरह क्रोन्स्तात् बलवे के पहिले दिन पेत्रोगाद् में बांटे गये मेन्शेविक पर्चे भी दिखलाते हैं कि कैसे मेन्शेविकों ने रूसी कम्युनिस्ट-पार्टी के भीतरी मतभेदों का वस्तुतः फायदा इसलिये उठाना चाहा कि क्रोन्स्तात् बलवाइयों समाजवादी-क्रान्तिकारियों और सफेद गारदों को उत्तेजना और सहायता दें, और साथ ही वे अपने

को बलवे का विरोधी और सोवियत्-शक्ति का समर्थक—सिर्फ चन्द संशोधन के साथ—बतलाते थे।"

प्रस्ताव में बतलाया गया था कि अपने प्रोपेगन्डा में पार्टी को, भेद्वाद पार्टी की एकता और प्रोलेतरी वर्ग के अग्रगामी के उद्देश्य की एकता—जो कि प्रोलेतरीय अधिनायकत्व की सफलता के लिये मुख्य शर्त है—के नुकसान और खतरे को खोल कर बतलाना चाहिये।

दूसरी ओर कांग्रेस के प्रस्ताव ने बतलाया, पार्टी को अपने प्रोपेगन्डा में सोवियत् शक्ति के शत्रुओं द्वारा अभी हाल में इस्तेमाल किये गये चालाकी के ढंगों की विशेषता को समझाना चाहिये।

प्रस्ताव में था "एक खुले सफेद गारदी झंडे के नीचे क्रान्ति विरोध की असम्भनीयता को महसूस करके, ये शत्रु, अब पार्टी के भीतरी मतभेदों को इस्तेमाल करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं और शक्ति को ऐसे ग्रूपों के हाथ में देना चाहते हैं, जो बाहर से सोवियत-शक्ति के स्वीकार के बहुत नजदीक हैं।"

"पार्टी-एकता' वाले प्रस्ताव से बहुत नजदीकी रखने वाला "हमारी पार्टी में सेन्डिकलीय और अराजकता वादियों का विपथ गमन" प्रस्ताव था, यह भी लेनिन् द्वारा प्रस्तावित और कांग्रेस द्वारा स्वीकृत किया गया था इस प्रस्ताव में दशम कांग्रेस ने तथा कथित "मजदूर-विरोध" की निन्दा की थी। कांग्रेस ने घोषित किया कि अराजक-सेन्डिकलीय विपथ गमन के विचारों का प्रचार कम्युनिष्ट पार्टी की सहायता के विरुद्ध है, और पार्टी से इस विपथ गमन का मुकाबला करने को कहा गया।

दशम कांग्रेस ने एक बहुत ही महत्व का निर्णय यह किया, कि अतिरिक्त-आदान व्यवस्था की जगह एक जिनसी कर लगाया जाय, नव-आर्थिक-नीति (नआनी) को स्वीकार किया जाये।

युद्ध-साम्यवाद से नआनी में परिवर्त्तन लेनिन् की नीति की बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का जबर्दस्त उदाहरण है।

कांग्रेस का प्रस्ताव अतिरिक्त-आदान व्यवस्था की जगह जिन्सी कर लगाने के बारे में था। अतिरिक्त-आदान व्यवस्था द्वारा लिये जाने वाले कर से जिन्सी कर को हल्का रखना था। प्रत्येक वर्ष वसन्त से पहिले करके सम्पूर्ण योग को घोषित करना था। कानून के भीतर कर प्रदान करने की तिथियाँ पक्की तौर से निश्चित कर देनी थीं। करके परिमाण से ऊपर और अधिक सभी उपज पर किसान का अधिकार था, वह अपनी इच्छानुसार इस बचत को बेंच सकता था। अपने भाषण में, लेनिन् ने कहा कि व्यापार की स्वतंत्रता, देश में पहिले पूँजीवाद का कुछ पुनरुज्जीवन करेगा। यह आवश्यक होगा कि निजी व्यापार की इजाजत दी जाये और छोटे रोजगारों को जारी करने के लिये निजी रोजगारियों को माल बनाने की इजाजत हो। लेकिन इससे डरने की जरूरत नहीं। लेनिन् समझते थे कि व्यापार की थोड़ी स्वतत्रता किसानों में आर्थिक चाट पैदा करेगी, उन्हें और उपजाने के लिये प्रेरित करेगी और कृषि में शीघ्रता से सुधार का कारण बनेगी; इस आधार पर राज्याधीन उद्योग पुनः स्थापित हो जावेंगे और वैयक्तिक पूँजी स्थानच्युत हो जावेगी; बल और स्रोतों के सञ्चित हो जाने पर, एक शक्तिशाली उद्योग को, समाजवादकी आर्थिक नींव के तौर पर निर्माण किया जा सकता है, और तब देश में अवशिष्ट पूँजीवाद को नष्ट करने के लिये दृढ़ता के साथ आक्रमण किया जा सकेगा।

युद्ध-साम्यवाद नगर और दीहात के पूँजीवादी अंशों के दुर्ग को दखल करने के लिये धावा बोलने, सामने से हमला करने जैसा प्रयत्न था। इस आक्रमण में पार्टी बहुत दूर तक आगे निकल

गई, और उसके आधार से विच्छिन्न हो जाने का खतरा था। अब लेनिन् ने प्रस्ताव किया थोड़ा पीछे हटने का, थोड़ी देर आधार से अधिक नजदीक होने का, किला पर आक्रमण करने की जगह उसे धीमा करके घिरावा देने के तरीके को अख्तियार करने का, जिसमें बल का सञ्चय करके फिर आक्रमण शुरू किया जा सके।

त्रोत्स्कयाई और दूसरे विरोधी कहते थे कि नआनी सिवाय पीछे लौटाने के और कुछ नहीं है। यह व्याख्या उनके मनोरथ के अनुकूल थी, क्योंकि उनकी नीति पूँजीवाद की पुनः स्थापना थी। यह नआनी की वहुत ही हानिकारक और लेनिन्वाद-विरोधी व्याख्या थी। असल बात यह है कि नआनी के आरंभ के एक साल ही बाद ग्यारहवीं पार्टी कांग्रेस में लेनिन् ने घोषित किया कि पीछे लौटना खातमे पर पर पहुँच गया और उन्होंने यह स्लोगन् सामने रखा। "निजी पूँजी पर आक्रमण के लिये तैयार!"

(लेनिन्, ग्रन्थावली, रूसी, जिल्द २७, पृ० २१३)

विरोधियो में वोल्शेविक नीति के प्रश्न में विल्कुल अनबूझ और दरिद्र मार्क्सवादी जैसे कि वे थे—ने न तो नआनी का अर्थ समझा और नहीं नआनी के आरम्भ में स्वीकार किये गये पीछे लौटने के रूप को समझा। हम ऊपर नआनी के मतलब को वतला चुके हैं। और जहाँ तक पीछे लौटने के रूप का संवध है, पीछे लौटने और पीछे लौटने में भी बहुत भेद है। ऐसे समय हैं जव कि एक पार्टी या सेना को पीछे हटाना पड़ता है, क्योंकि उसने हार खाया है। ऐसे समय पार्टी या सेना, नई लड़ाइयों के लिये अपने अपने व्यक्तियों को सुरक्षित करने के लिये पीछे हटती है। यह इकतरफा

पीछे हटना नहीं था जिसे कि लेनिन् नेप्रानी के जारी करने के वक्त पेश किया, क्योंकि पराजय और हानि उठाने से बात तो दूर पार्टी ने गृह युद्ध में हस्तक्षेपकों और सफेद गारदों को करारी हार दी थी। किन्तु और भी समय हैं, जब कि अपनी प्रगति में एक विजयी पार्टी या सेना अपने पिछवाड़ में आधार के साथ पर्याप्त सम्बन्ध रक्खे बिना दौड़ जाती है। इससे वह गंभीर खतरे में पड़ जाती है। तब जिसमें अपने आधार से सम्बन्ध खो न बैठे इसलिये एक अनुभवी पार्टी या सेना ऐसी अवस्था में आमतौर से इसे आवश्यक समझती है कि थोड़ा पीछे लौटे, एकट्ठा हो जावे और आधार के साथ बेहतर सम्बन्ध स्थापित करे, इसलिये कि उसको जिसकी आवश्यकता है, उन सभी को प्राप्त करले और तब और अधिक विश्वास के और सफलता की गारंटी के साथ आक्रमण शुरू करे। यह इसी तरह की अस्थायी पीछे हटना था, जिसे लेनिन् ने नप्रानी द्वारा कराया। कम्युनिस्ट-इन्टर्नेशनल की चतुर्थ कांग्रेस के सामने रिपोर्ट करते वक्त लेनिन् नप्रानी की स्वीकृति के कारणों के बारे में साफ तौर से कहा, "अपने आर्थिक आक्रमण में हम बहुत अधिक आगे दौड़ गये, हमने अपने लिये पर्याप्त आधार नहीं मौजूद रखा," और इस लिये यह आवश्यक था कि पिछवाड़ पाने के लिये अस्थायी तौर से पीछे लौटना स्वीकार करें।

विरोधी पक्ष का दुर्भाग्य यह था कि अपने अज्ञान के कारण, नप्रानी के अन्दर पीछे लौटने के इस रूप को उन्होंने नहीं समझा और अपने आखिरी दिनों तक उसे कभी नहीं समझा।

दशम कांग्रेस के नवीन-आर्थिक-नीति-सम्बन्धी निर्णय ने समाजवाद के निर्माण के लिये मजदूर और किसान वर्गों की टिकाऊ आर्थिक मैत्री को पक्का कर दिया।

यह प्रधान उद्देश्य, कांग्रेस के और भी दूसरे निर्णय जातियों के प्रश्न सम्बन्धी निर्णय—द्वारा पक्का हुआ। साथी स्तालिन् ने जातियों के प्रश्न पर रिपोर्ट की। उन्होंने कहा कि हमने जातियों के दमन को बंदकर दिया, किन्तु वह पर्याप्त नहीं है। हमारे सामने काम है अतीत की बुरी विरासत पहिले के उत्पीड़ित लोगों के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पिछड़े पन—से बिल्कुल नाता तोड़ने की। उन्हें सहायता देनी होगी, कि वे मध्य रूस को दौड़ पकड़ें।

साथी स्तालिन् ने जातियों के प्रश्न सम्बन्धी दो पार्टी-विरोधी विपथ गमनों—अधिकारी-जाति (महा रूसी) का "देश गर्व" और स्थानीय राष्ट्रीयतावाद—का जिक्र किया कांग्रेस ने दोनों विपथ गमनों को साम्यवाद और प्रोलेतारी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के लिये हानिकारक और भयानक बतला कर निन्दा की। साथ ही उसने अपने प्रधान प्रहार को और बड़े खतरे -अधिकारी जाति-"देश-गर्व" अर्थात् जैसा कि महारूसी 'देश गर्वी," जारशाही के वक्त अरूसी लोगों के प्रति बरतते थे, वैसे बर्ताओं का अवशेष और लटकन्त—के ऊपर किया।

१—नआनी का प्रथम परिणाम। ग्यारहवीं पार्टी-कांग्रेस। संघ-सोवियत-समाजवादी रिपब्लिक की स्थापना। लेनिन् की बीमारी। लेनिन् की सहयोग योजना। बारहवीं पार्टी-कांग्रेस।

पार्टी के अस्थिर तत्वों ने नवीन आर्थिक नीति का विरोध किया। विरोध दो दिशाओं से हुआ। प्रथम थे "वाम" शोर मचाने वाले राजनीतिक अजूबे लोमिनद्जे, शत्स्किन् आदि, जिनका तर्क था कि नआनी का अर्थ है अक्तूबर-क्रान्ति के लाभों का परित्याग, पूँजीवाद की ओर लौट जाना, सोवियत्-शक्ति का पतन।

आर्थिक विज्ञास के नियमों के अज्ञान और राजनीतिक अनपढ़ता के कारण ये लोग पार्टी की नीति को नहीं समझ पाये, आतंकित हो गये और उन्होंने अनुत्साह तथा निराशा का बीज बोया। दूसरे, निरे समर्पणवादी, त्रोत्स्की, रादेक्, जिनोवियेफ्, सोकोल्निकोफ्, कामेनेफ्, श्ल्याप्रिकोफ्, बुखारिन्, सहकोफ् आदि जैसे थे, जिन्हें विश्वास नहीं था कि हमारे देश में समाजवादी विकास सम्भव है, ये पूँजीवाद की "सर्वशक्तिमत्ता" के सामने सर झुकाते थे और सोवियत् देश में पूँजीवाद की स्थिति के दृढ़ करने के प्रयत्न में वैक्तिक पूँजी – देशी विदेशी दोनों के लिये बहुत लम्बी रियायतों और आर्थिक क्षेत्र में सोवियत्-शक्ति के कितने ही कुंजी स्थानों को, वैयक्तिक पूँजीपतियों—रियायतदार या सम्मिलित पूँजी कम्पनियों में राज्य के भागीदार के तौर पर—के हाथ में समर्पण करने के लिये जोर दे रहे थे। दोनों ही ग्रूप मार्क्सवाद और लेनिन्वाद से अपरिचित थे। दोनों ही का पार्टी ने रहस्योद्घाटन और अ..-गाव कर दिया, और खतरावादियों और समर्पणवादियों की कड़ी नुकता चीनी की।

पार्टी नीति के इस विरोध ने एक बार फिर याद दिलायी, कि अस्थिर-तत्वों का पार्टी से विरेचन करना जरूरी है। तदनुसार केन्द्रीय समिति ने १६२१ में एक पार्टी-विरेचन का आयोजन किया, जिसने पार्टी को काफ़ी मजबूत करने में सहायता दी। विरेचन खुली बैठकों में अपार्टी लोगों के सामने और उनकी शिर्कत से हुआ। लेनिन् ने सलाह दी कि पार्टी को साफ करना चाहिये "दुष्ट नौकरशाह, बेईमान या डांवाडोल मनस्क कम्युनिष्टों से, बाहर से रंगे किन्तु दिल में अब भी पुराने जैसे रहे मेन्शेविकों से" लेनिन् ग्रंथावली, रूसी, जि० २७, पृष्ठ १३।)

कुल मिला कर करीब १,७०,०० व्यक्ति या प्रायः २५ सैकड़े मेंबर इस विरेचन के परिणाम स्वरूप पार्टी से निकाल दिये गये।

विरेचन ने पार्टी को अधिक मजबूत किया, उसकी सामाजिक बनावट को सुधारा, जनता में उसके प्रति विश्वास को बढ़ाया, और उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ा दिया। पार्टी अधिक घनिष्ट तथा संगठित और बेहतर अनुशासन वाली हो गई।

नवीन आर्थिक नीति ठीक थी, उसके पहिले ही वर्ष में सिद्ध हो गयी। इसकी स्वीकृति ने मजदूरों और किसानों की मैत्री को एक नवीनआधार पर मजबूत करने में बहुत काम किया। प्रोलेतारीय अधिनायकत्व को बल और प्रभुता मिली। कुलकों की डकैती करीब-करीब बिल्कुल खतम हो गई। मध्यवित्त किसानों ने, जब कि अतिरिक्त आदान-व्यवस्था हटा दी गई, कुलक- झुंडों से लड़ने में सोवियत सर्कार की मदद की। आर्थिक क्षेत्र के सभी कुंजी स्थानों बड़े पैमाने के उद्योगों, यातायात के साधनों, बैंकों, भूमि, देशी विदेशी व्यापार—को सोवियत सर्कार ने अपने हाथ में रखा। आर्थिक मोर्चे पर पार्टी ने एक बेहतर सफलता प्राप्त की। कृषि शीघ्र आगे बढ़ने लगी। उद्योग और रेलवे में पहिली कामयाबियाँ दिखलायीं। आर्थिक पुनरुज्जीवन शुरू हुआ, अभी धीरे ही किन्तु निश्चित तौर से मजदूरों और किसानों ने अनुभव किया और देखा कि पार्टी सीधे मार्ग पर है।

मार्च (पुराना) १९२२ में पार्टी ने अपनी ग्यारहवीं कांग्रेस बैठाई। इसमें ५,३२,००० पार्टी मेंबरों के प्रतिनिधि ५२२ वोट वाले थे, जो कि पहिले वाली कांग्रेस से कम थे। १६५ वोट-रहित किन्तु भाषण अधिकार वाले प्रतिनिधि थे। मेंबरों की कमी विरेचन के कारण हुई जो कि उस वक्त तक शुरू हो गई थी।

इस कांग्रेस में पार्टी ने नवीन-आर्थिक-नीति के प्रथम वर्ष के परिमाणों पर विचार किया; और लेनिन् को कांग्रेस में घोषित करने की आज्ञा दी।

"एक साल तक हम पीछे हटते रहे। पार्टी के नाम पर अ हमें ठहरो बोलना होगा। पीछे हटने का मतलब पूरा हो गया

यह समय समाप्त हो रहा है या हो गया है। अब हमारा मतलब दूसरा है—अपनी शक्तियों को फिर से जुटाना।" (वहीं, पृ० २३८)

लेनिन् ने कहा नश्रानी का मतलब था। पूँजीवाद और समाजवाद में जीवन और मरण का संग्राम। "कौन जीतेगा"?—यह था प्रश्न। इसलिये कि हम जीतें, मजदूर और किसान वर्ग समाजवादी उद्योग और किसानी खेती के बीच का सम्बन्ध नगर और दीहात के बीच माल के विनिमय को हद दर्जे तक विकसित करके सुरक्षित करना था। इसके लिये प्रबन्ध और योग्यता पूर्ण व्यापार की कला को सीखना था।

उस समय पार्टी के सामने जो समस्या शृङ्खलायें थीं, उनमें व्यापार मुख्यजो मोड़ था। जब तक यह समस्या हल नहीं कर ली जाती, तब तक नगर और दीहात के बीच माल के विनिमय को विकसित करना; मजदूरों और किसानों के बीच ी आर्थिक मैत्री को मजबूत करना असम्भव होता, असम्भव होती कृषि की प्रगति या उद्योग को उसकी ध्वन्सावस्था से निकालना।

सोवियत् व्यापार उस समय अभी बहुत अविकसित अवस्था में था। व्यापार का यंत्र बहुत ही अपर्याप्त था, कम्युनिस्टों ने अभी व्यापार की कला नहीं सीखी थी, उन्होंने अभी शत्रु, नश्रानी पुरुष का अध्ययन नहीं किया था, या उसके साथ मुकाबिला करने का तरीका नहीं सीखा था। निजी व्यापारियों, या नश्रानी पुरुषों ने कपड़े तथा दूसरी बड़ी मांग की चीजों के व्यापार पर कब्जा करने के लिये सोवियत् व्यापार की अविकसित अवस्था से फायदा उठाया। सर्कारी और सहयोगी व्यापार का संगठन अत्यन्त महत्त्व की बात हो गया।

ग्यारहवां कांग्रेस के बाद, आर्थिक क्षेत्र में काम बड़े जोर के साथ आरम्भ किया गया। हाल की फसल की खराबी के असर सफलता पूर्वक दूर कर दिये गये। किसानी खेती शीघ्रता से सुधरने

लगी। रेलों का काम बेहतर होने लगा। और बढ़ती हुई संख्याये फेक्टरियों और मिलों ने काम शुरू किये।

अक्टूबर (पुराना) १६२२ में सोवियत् प्रजातन्त्र ने एक बड़ी विजय का उत्सव मनाया सोवियत् भूभाग का अन्तिम टुकड़ा व्लादीवोस्तोक्—जो अब तक आक्रमणकारियों के हाथ में रह गया था—लाल सेना और सुदुर पूर्व के सभागियों द्वारा जापानी हाथों से छीन लिया गया।

सोवियत् प्रजा तन्त्र का सारा भू भाग हस्तक्षेपकों से शून्य कर दिया गया, समाजवादी निर्माण और राष्ट्रीय रक्षा सोवियत् के लोगों के संगठन को और दृढ़ करने की जरूरतों ने जोर दिया, और अब सोवियत् प्रजातन्त्रों में और घनिष्टता पैदा कर एक अकेले संयुक्त राष्ट्र में परिणत करने की जरूरत हुई। समाजवाद के निर्माण के लिये जनता की सभी शक्तियों को संयुक्त करना आवश्यक था। देश को अभेद्य बनाना आवश्यक था। हमारे देश को सभी जातियों के सर्वतोमुखीन विकास के लिये ऐसी स्थितियों का पैदा करना आवश्यक था। इसके लिये जरूरी था कि सभी सोवियत् जातियों को एक और भी घनिष्ट एकता सङ्घ) में बद्ध किया जावे।

दिसम्बर (पुराना) १६२२ में प्रथम अखिल सङ्घ सोवियत् कांग्रेस बैठी। इसी में लेनिन् और स्तालिन् के प्रस्ताव पर सोवियत् जातियों की एक स्वेच्छापूर्ण राष्ट्र सङ्घ—संघ सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (सससर)—कायम हुआ। आरम्भ में सससर में निम्न प्रजातन्त्र शामिल थे—रूसी सोवियत् फेडरल समाजवादी रिपब्लिक (सससर) ट्रान्सकाकेशियन् सोवियत् फेडरल समाजवादी रिपब्लिक (रसटसर) उक्रइनीय सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (उक्र ससर) और ब्येलोरुसीय सोवियत् समाजवादो रिपब्लिक (बससर)। कुछ पीछे मध्य एशिया में तीन स्वतन्त्र संघ सोवियत् रिपब्लिक (प्रजातन्त्र)—उज्बेक्, तुर्कमान और ताजिक कायम हुये।

ये सभी प्रजातन्त्र अब एक अकेले सोवियत् राष्ट्र संघ—ससस—में स्वेच्छापूर्वक उनमें से हर एक को सोवियत् संघ से स्वतन्त्रता पूर्वक हट जाने के—हक को रखते हुये—और समानता के साथ संगठित हुये।

संघ-सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक की स्थापना का अर्थ था सोवियत् शक्ति का दृढ़ीकरण और जातियों के प्रश्न पर बोल्शेविक पार्टी की लेनिनीय—स्तालिनीय नीति के लिये एक बड़ी विजय।

नवम्बर (पुराना) १६२२ में, लेनिन् ने मास्को सोवियत् की एक भरी बैठक में एक भाषण दिया; जिसमें उन्होंने सोवियत् शासन के पांच वर्षों का सिंहावलोकन किया और दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि "नआनी रूस समाजवादी रूस बनेगा।" देश के लिये यह उनका अन्तिम व्याख्यान था। उसी शरद् में पार्टी को बड़े दुर्भाग्य ने घेरा : लेनिन् सख्त बीमार हो गये। सारी पार्टी और सारी कम कर जनता के लिये उनकी बीमारी गहरी और वैयक्तिक व्यथा थी। अपने प्रिय लेनिन् के जीवन के लिये सभी आशंकित थे। किन्तु बीमारी में भी लेलिन् अपने काम को बन्द नहीं किया। जब कि उनकी बीमारी बहुत कड़ी हो चुकी थी, उस वक्त उन्होंने कई अत्यन्त महत्त्व के लेख लिखे। इन लेखों में उन्होंने आज तक के लिये कामों का सिंहावलोकन किया, और समाजवादी निर्माण के काम में किसानों को सहायक बना हमारे देश में समाजवाद के निर्माण के लिये एक योजना का खाका दिया। इसमें समाजवाद के निर्माण के काम में किसानों का सहयोग पाने के लिये उनकी सहयोग योजना है।

लेनिन् सहयोग समितियों—आमतौर से; और कृषि सहयोग समितियों को—विशेष तौर से—छोटी वैयक्तिक खेती से बड़े पैमाने के उत्पादक समवाय या सामूहिक खेती में संक्रमण का साधन समझते थे—ऐसा साधन जिसे करोड़ों किसान या और समझ सकते

हैं। लेनिन् ने वतलाया कि हमारे देश में कृषि के निकाम में जो तरीका अख्तियार करना है, वह है सहयोग समितियों द्वारा समाजवाद के निर्माण में मजदूरों को खींचना, सामूहिकता के सिद्धान्त को क्रमशः कृषि में—पहिले बेंचने में फिर फसल पैदा करने में भी—इस्तेमाल करना। प्रोलेतारीय अधिनायकत्व और मजदूरों और किसानों की मैत्री, किसानों के नेतृत्व के प्रोलेतरी वर्ग के हाथ में सुरक्षित होने और एक समाजवादी उद्योग के अस्तित्व के साथ, लेनिन् ने कहा, करोड़ों किसानों के लिये ठीक तौर से संगठित उत्पादक सहयोग व्यवस्था—जिसमें करोड़ों किसान शामिल हैं।—वह साधन है जिससे हमारे देश में एक पूर्ण समाजवादी समाज का निर्माण हो सकता है।

अप्रेल (पुराना) १६२३ में पार्टी ने १८वीं कांग्रेस बैठाई। बोल्शेविकों के अधिकारारूढ़ होने के बाद यह पहिली कांग्रेस थी जिसमें लेनिन् उपस्थित नहीं हो सके। कांग्रेस में ३,८६,००० पार्टी मेंवरोंके ४०८ वोट वाले प्रतिनिधि उपस्थित थे। पहिले की कांग्रेस से यह संख्या कम थी, कारण यह था कि वीच में पार्टी का विरेचन जारी रहा, और पार्टी के मेम्बरों में से काफी को हटा दिया गया। ४१७ प्रतिनिधि वोट रहित भाषण का अधिकार रखने वाले थे।

बारहवीं कांग्रेस ने अपने निर्णयों में लेनिन् के हाल के लेखों और पत्रों में दिये सुझावों को शामिल किया।

कांग्रेस ने उन लोगों की सख्त नुक्ताचीनी की जो नआनी का अर्थ समाजवादी स्थिति से हटना और पूँजीवाद के हाथ में समर्पण समझते थे, और जो पूँजीवादी वन्धन में लौटने की वात कहते थे। त्रोत्स्की के अनुयायी रादेक् और क्रासिन् ने इस प्रकार के प्रस्ताव कांग्रेस में किये। उन्होंने प्रस्ताव किया कि हम अपने को विदेशी पूँजीपतियों की कोमल दया पर छोड़ दें, सोवियत सर्कार के जीवनोपयोगी उद्योग शाखाओं को रियायत के तौर पर

उन्हें अर्पण कर दें। उन्होंने प्रस्ताव किया कि अक्तूबर क्रांति द्वारा अस्वीकृत जारशाही ऋणों को अदा करें। पार्टी ने इस समर्पण-वादी प्रस्तावों को देश द्रोह बतलाया। उसने रियायत देने की नीति को अस्वीकार नहीं किया, लेकिन ऐसे ही उद्योगों और उतने ही परिमाण में जो कि सोवियत्-राष्ट्र के लिये लाभदायक हों।

बुख़ारिन् और सोकोल्निकोफ़् ने कांग्रेस से पहिले भी विदेशी व्यापार के राजकीय एकाधिकार को छोड़ने का प्रस्ताव किया था। प्रस्ताव इस ख्यात पर अवलंबित था कि नआनी पूँजीवाद के हाथ में समर्पण है। लेनिन् ने बुख़ारिन् को नफाबाजों, न ानी पुरुषों और कुलकों का वकील कहा था। बारहवीं कांग्रेस ने विदेशी व्यापार के एकाधार को नुकसान पहुँचाने के प्रयत्न को दृढ़ता पूर्वक विफल कर दिया।

कांग्रेस ने त्रोत्स्की के किसानों के सम्बन्ध में पार्टी पर एक ऐसी खतरनाक नीति के लादने के प्रयत्न को भी विफल कर दिया, और कहा कि छोटी छोटी किसानी खेती की देश में प्रधानता की बात को भूलना नहीं चाहिये। उसने जोरदार तौर पर घोषि त किया कि उद्योग के--भारी उद्योग को लेते हुये—का विकास को किसान जनता के हित के विरुद्ध नहीं जाना च हिये, और सारी कमकर जनता के हित में किसानों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध के ऊ र आधा-रित होना चाहिये। ये निर्णय त्रोत्स्की के जवाब में थे, जिसने प्रस्ताव किया था, कि हमें किसानों के शोषण द्वारा अपने उद्योग का निर्माण करना चाहिये, और जिसने वस्तुतः मजदूरों और किसानों की मैत्री की नीति को स्वीकार नहीं किया था।

साथ ही, त्रोत्स्की ने प्रस्ताव किया था कि पुतिलोफ़्, ब्र्यान्स्क आदि जैसे कारखाने—जो देश की रक्षा के लिये बड़े महत्व के हैं—बंद कर दिये जावें, इस झूठी तोहमत पर कि वे नफा में नहीं

नवीन आर्थिक नीति द्वारा देश के आर्थिक जीवन की पुनः स्थापना में जबर्दस्त फल प्राप्त हुये। सोवियत्-संघ सफलता के साथ आर्थिक पुनःस्थापना के काल से पार हुआ, और एक नये देश के उद्योगीकरण के काल में प्रवृष्ट हुआ।

गृहयुद्ध से शान्तिपूर्ण समाजवादी निर्माण में संक्रमण के समय विशेष कर आरम्भिक अवस्था में बड़ी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। सारे समय बोल्शेविज्म के शत्रुओं ने—क० प० स० स० के सदस्यों में पार्टी-विरोधी व्यक्तियों ने—लेनिनीय पार्टी के विरुद्ध सख्त लड़ाई की। इन पार्टी-विरोधी व्यक्तियों का अगुआ था त्रोत्स्की। इस संघर्ष में उसके सहायक थे कामेनेफ़्, जिनोवियेफ़् और बुखारिन्। लेनिन् की मृत्यु के बाद विरोध पार्टियों ने आशा बाँधी थी—बोल्शेविक पार्टी की सदस्यता में होनेवाले प्रहार के ऊपर, पार्टी की फूट के ऊपर और उसे ससमर में समाजवाद के विजय की सम्भावना में सन्देह पैदा करने के ऊपर। वस्तुतः, त्रोत्स्कियाई ससमर में दूसरी पार्टी—नये बूर्ज्वाजी का राजनीतिक संगठन, पूँजीवादी पुनः स्थापना की पार्टी—बनाना चाहते थे।

पार्टी लेनिन् के झंडे के नीचे अपना लेनिनीय-केन्द्रीय-समिति के गिर्द, साथी स्तालिन् के गिर्द जमा हो गई; और त्रोत्स्कि-वादियों तथा उनके लेनिन्ग्राद् के नये मित्रों—ज़िनोवियेफ़, कामनेफ़् के 'नवीन विरोध'—को परास्त किया।

बल और सामग्री संचित करके, बोल्शेविक पार्टी ने देश को उसके इतिहास की एक नई अवस्था—समाजवादी उद्योगीकरण की अवस्था—में पहुँचाया।